भावना प्रकाशन दिल्ली-९२

ऋतुशेष
राम अरोड़ा

दानो निष्ठावान बूढो से
क्षमा याचना के साथ

उन दिनो के नाम
जो गुजर गये,
उन दिनों की हसरत में
जो कभी नहीं आये।

क्रम

एक छिटका हुआ कालखंड

दफ्तर से चलते समय किसी गंभीर घटना की भनक उसने पा ली थी। लोग जाने की पूरी तैयारी करके भी गप्पें मारते, चिंघाड़ते हाथी के चिह्न वाली नयी पार्टी और उसके वाचाल नेता की खिल्ली उड़ाते, या फिर चिंता से इधर-उधर टहलते घड़ियां गुजार रहे थे।

सड़क पर आकर उसने देखा कि परिवहन के नाम पर केवल निजी वाहन चल रहे हैं, और वे अत्यंत विरल और ठसाठस लदे फंदे हैं।

हुतात्मा चौक के झलकते ही जन सागर स्थिर और अपार हो गया और लोगों की आपसी बातचीत कोलाहल में बदल गयी। चौक में मिलने वाले तमाम मार्गों पर जहां तक नजर जाती, नरमुंड फैले हुए थे।

विश्वविद्यालय भवन के पास में बंदोबस्त वालों की कतारें भी आन मिलीं। सिपाहियों के पास हालांकि गैसमास्क और संगीनें भी थीं, फिर भी उनके चेहरे रोजमर्रा की तरह सुस्त व निर्वेदप्राय थे। उनकी जीपें और वानें अलबत्ता लाउडस्पीकरों पर चिल्ला चिल्लाकर निजी वाहनों और पादचारियों को कुछ निर्देश देती जा रही थीं, जिन्हें कोई भी समझ नहीं पा रहा था क्योंकि रह रहकर मोटरसाइकिल सवार ट्रैफिक-इंस्पेक्टरों और सिपाहियों की सीटियां चीख उठती थीं।

कुछ आगे बढ़ने पर जन समुद्र की सीधी स्थिर चाल में लहरें पड़ने

शुरू हो गयी । सडक के किनारो पर और बीचाबीच जहा तहा कुछ बसें, टक्सिया और निजी वाहन अचचकी की धज म खाली खडे हुए थे । उनमे स शीशे प्राय प्रत्येक के टट हुए थे और किसी किसी के टायर व ढाचे भी पिचके हुए थे । चौक के नजदीक पहुचकर उसन देखा कि उत्तर की ओर जाने वाली सडको पर ऐस अधनष्ट व लावारिस वाहनो का बाकायदा एक काफिला है ।

फ्लोरा के बुत क गिद वाले विशाल अडाकार पार्किंग क्षेत्र पर बडा पहरा था । परली तरफ पाच छह दमकल खड थे । बुत के ऐन नीचे कारो की एक पूरी कतार जली हुई पडी थी । इस ओर की एक कार बिना जलाये ध्वस्त कर दी गयी थी, जिसकी सीटो पर पद्रह बीस बडे बडे पत्थर और चालक के स्थान पर तथा स्टियरिंग के आसपास, डैशबोड पर सूखे खून के बडे बडे दायर दूर से ही देख जा सकते थे ।

पश्चिम की आर घूमकर, बडे तारघर के सामन से चचगेट स्टेशन की तरफ जाते हुए उसने अपन चारा ओर के लोगो की परशानी की कल्पना की । उनक कही जाने का अभी कोई साधन नही था , वे या ही, अकारण स्टेशन की तरफ जाते या घूमते फिरते रह सकते थे । लेकिन इस पर विचलित होने के बजाय वह आश्चय से भर उठा, और उसके भीतर कही एक झुरझुरी दौड गयी ।

एक बार ध्यान से उसन चारो ओर की पीसमपीस दखी । पीडा व उद्वग भरे क्षीण चीत्कार सुने, शक और शरारत भरी कनखिया लक्ष्य की, खुशबुए सूघी, और मन ही मन सोचा—इनका आज क्या होगा ? य आज क्या करेंगी ? मैं क्या करूगा ?

आज रोज की तरह नही होगा आज नये सबध स्थापित होग, नयी मित्रताए हागी । नय ढग से एक दूसर की तक्लीफ जानी समझी जायेगी ऐसा होगा ही ! और उसने महसूस किया कि सामन के समुद्र की ओर से आने वाली हवा उसे हलका, स्फूत और आह्लादित कर गयी है

स्टेशन म घुसने निकलने वालो की भीड कुभ मेले का सा दृश्य उपस्थित कर रही थी ।

गभीर, निरुद्विग्न प्रकृति सद्जन सध्याकालीन समाचारपत्रो का दुबारा-

दुवारा, तिवारा तिवारा, अलग अलग भाषाओं म, जिस तिस से अदब बदल कर परायण कर रहे थे। एक एक समाचारपत्र वाले के गिर्द आठ आठ, दस-दस जिनासु जमे हुए थे। जो इन्हें पढ पढकर अघा चुके थे, वे दूसरे आठ-आठ दस-दस के समूहों को सुना रहे थे। उनमें से कुछ के पास व्यक्तिगत सूचनाएं भी थीं।

ऐसे ही दो तीन समूहों म खडे होकर उसने सुना कि एक मतांध नयी पार्टी के अनुगामियों, नताओं और स्वयसेवकों न सुदूर अत के उपनगर से लेकर सचिवालय तक मोर्चे निकाले थे। परेल से भायखला, भिंडी बाजार, कालबादेवी, हुतात्मा चौक और चर्चगेट होकर सचिवालय पहुचने, और फिर ऑपेरा हाउस, लमिंग्टन रोड, सात रास्ता, वरली नाका और प्रभादेवी होते हुए शिवाजी उद्यान मे समाप्त होकर एक विशाल सावजनिक रैली मे बदल जाने वाले बडे मोर्चे के रास्त मे पहली वारदात भिंडी बाजार म हुई, दूसरी भोलेश्वर पर और तीसरी व अतिम हुतात्मा चौक पर—जिसमें कारें व बसें टूटी फूटी, पुलिस ने लाठी चलायी और बदले म कुछ मार खायी, अश्रुगैस छोडी और प्रदशनकारी तितर बितर होकर बोरीबदर और चचगेट की गाडियों पर सवार हो गये।

आधे पौन घटे बाद ही इधर चर्नी रोड और ग्राट रोड के बीच और उधर महहस्ट रोड और भायखला के बीच तीन तीन, चार चार गाडियां रोककर उनके ड्राइवर गाड पीट दिये गये, इजन बेकार कर दिय गये, और जब रेलवे सुरक्षा दल पहुचा तो दगई डाउन गाडियों की लाइन के विद्युत तार काटकर सडकों पर भाग गये और और वाहनों व दुकानों पर टूट पडे, जिस-तिस घर म भी घुस गय और ज्यों ज्यों विभि न शाखाओं मे खबर पहुची, त्यों-त्यों लूट पाट, तोड फोड बढ गयी।

★

उसन पहले अपनी और फिर हाल म लगी घडी देखी। पौन सात बजे थ। इस घटे डेढ घटे म उन पर तनिक चिंता और सुस्ती सी छाने लगी थी। शायद यह ज्यादा बतियाने और जोर जोर स हसते रहने की वजह से था। अब भी वे सब यद्यपि मुसकरा और हस बोल रहे थे, फिर भी बात बात म अमश अनुपस्थित से होत जा रहे थे और लबे लबे क्षणों तक गरदन

इधर उधर घुमाने लगे थे।

कुछ, जो निश्चय ही बुद्धिमान थे, सिनेमाघरो म घुस गये थे, और थोडो ही दर बाद कोई यह भी सुना गया कि न केवल पाटकर हॉल और बिरला मातुश्री प्रेक्षाघरो के नाटक हाउस फुल है, बल्कि लैंसडाउन रोड के जमन हाल, कावसजी जहागीर हॉल, और चेतना,जहागीर, पडोल, व ताज आदि आर्ट गैलरियो मे भी लोग पहुचकर जम गय है। यहा तक कि स्टेशन के सामने वाले वेस्टन इडिया ऑटोमोबाइल्स ऐसोसिएन के सभागार में सुरक्षा व विवेकपूण ड्राइविंग के लेक्चर और थियोसोफिकल हॉल की आधुनिक फ्रेंच साहित्य सबधी कक्षा में भी तिल धरने की जगह न बची।

कुछ समय पहले के पुरुष स्त्री समूह छट छटकर अब छोटे छोटे और अपेक्षाकृत मौन हो गये थे और हालाकि भीड कुछ बढी ही थी, फिर भी पास पास, अकेले अकेले खडे लोगो की सख्या मे सहसा अत्यत वृद्धि हो गयी थी। ये सब यद्यपि मौखिक रूप से शात से लग रहे थे, मगर परिचितो अपरिचितो तक मे धीरे धीरे विचार विमश चल रहा था और लडके लडकिया, वद्ध, अधेड, सब पैनी दष्टि से दूसरा को घूर रहे थे।

उसे बहुत बुरा लगा। उसका विचार था कि इस मनुष्य या दैव प्रदत्त अवसर का लाभ उठाते हुए सबको सबके सामन प्रस्तत हो जाना चाहिये, मिलना चाहिये, और लबी प्रतीक्षा को स्थायी सबधा के प्रारभ के लिए इस्तेमाल करना चाहिये।

क्या इन सबम से किसी को इस भीड म अपना प्रिय तलाश लेने की उमग नही उठ रही? क्या वे इस अल्पकाल के पुनीत महत्त्व को पहचान नही रह? ऐसा सोच सोचकर उसे घबराहट होने लगी, और वह पूर्वी द्वार मे हाल के बाहर निकल गया।

चौराहे से लेकर दूर स्टेशन की अतिम सीमा, और उसके भी परे तक, फुटपाथ पर निजी वाहनो को हाथ हिला हिलाकर और चिल्ला चिल्लाकर लिफ्ट मागने वालो ने हगामा कर रखा था और उस हगामे मे युवको और स्त्रिया के बुलद और सुरीले स्वर सबसे ऊपर थे। ज्यादातर वाहन ठसाठस भरे आते! कुछ खाली या जगह होने हुए भी उपेक्षापूवक निकल जाते।

इतने आतुर और व्याकुल मनुष्य इस तरह इतनी बडी सख्या म आज

दूगा न होने की स्थिति में भी भला सभी एक साथ होते ? कभी यह महसूस करते कि थोडे-से अवास्तविक हेर फेर के साथ वे एक ही नाव के सवार हैं, एक जैसी स्थितियो के एक जैसे शिकार हैं, और आगे पर थोडा नजदीक या दूर, सबके लक्ष्य भी एक जैसे हैं ? और उसे आश्चर्य हुआ कि इस अपार जन सागर में क्या कोई एक और भी उसी की तरह सोच रहा होगा !

—अगर कोई ऐसा सोच पाता है, तो वह कहा है ? क्या हम दोनो की आज भेंट होगी ? वह बुदबुदा उठा।

★

चलता चलता चौराहे तक आकर वह दायी ओर मुड गया और धीरे धीरे सागर मुख की ओर बढने लगा। फुटपाथ आशातीत रूप से गहमागहम थे, लेकिन इधर के लोग उधर वालों की अपेक्षा वक्त की नजाकत के प्रति बेहतर समझ और लय दरशा रहे थे। वे फुटपाथो पर खडे आइसक्रीम, पेस्टिया, ठडा गरम, चाट या पान सिगरेट वगरह फरमा रहे थे और उनकी बातचीत का अदाज अगमनीय सीमा तक सुसस्कृत, अभिजात और सरगोशियों का सा था।

समदर की फायर वाल और सैरगाह पर भी वे सब बाकायदा आबाद थे, लेकिन उधर गये बिना वह वीर नरीमन रोड लाघकर, ऊची बिल्डिगो के तले तले से नरीमन प्वायट की ओर हो लिया। फिर उस भी बीच में छोड क्रिकेट क्लब के साथ साथ दिनशा वाचा रोड पर चला पडा।

विश्वविद्यालय के सामने वाले मैदान में उसे वही सब लोग लेटे फले प्रेमी प्रेमिकाओं के सिर बाहो में पडे, या जहा तहा पश्चिमी फिल्मी गाने गाते मिले। कुछ दूसरो ने चने मूगफली वालो के पास जमकर उनके डोला से निकलती आच की रोशनियो में, या फिर लपपोस्टो के नीचे वाली जगह हथियाकर ताशें चला रखी थी।

दोबारा स्टेशन के हाल में लौटा, तो आठ से कुछ ऊपर हो चुके थे। भीड वहा वैसी ही थी, लेकिन यह जानना मुश्किल था कि कौन गया और कौन किसकी जगह पर आकर खडा हो गया। अब वहा पहले से कहीं ज्यादा खामोशी और लस्ती थी, और सबमे इस आशय की चर्चा थी

कि बोरीबदर से एक गाडी, वाया हार्बर लाइन कुर्ला रवाना हो चुकी है और शायद जल्दी ही कुछ और गाडियां भी छूटें।

इस समाचार ने उसे बहुत परेशान कर दिया।

★

फुटपाथ की रेलिंग से टिके टिके वह बडी देर से उस गेहुए सलोन चेहरे, फली फैली आहत सी आखो और मोटी आकर्षक चुटिया वाली लडकी का देख रहा था। वह भी उसे देख रही थी।

—क्या मैं आपकी दुविधा जान सकता हू, कुमारीजी! उसने उसके उसके निकट जाकर पूछा।

लडकी ने उससे पल-भर को निगाह मिलायी, लेकिन तत्काल परे, शून्य म देखने लगी।

—इस कठिन समय मे आप अगर मुझे अपनी तक्लीफ कम करने का अवसर देंगी तो मैं आभार मानूगा!

लडकी ने पहली बार उसे स्थिर होकर देखा और उसका अधर जरा-सा कापा।

—आप कहा जायेंगी?

—गवनमट कालोनी। कुछ और कहना चाहते हुए भी वह इतना ही कह पायी। फिर उसके अदाज मे सामने खडे लबे, दुबले और साधारण रूप रग के बाईस चौबीस वर्षीय युवक के मुह से और कुछ सुनने की आतुरता थी।

—कुमारी जी, युवक ने विभोर होकर कहा, आप काफी थक जायेंगी, मगर दो तीन घटे म घर पहुच जायेंगी।

—आप उधर चल रहे हैं? लडकी ने बात काटकर पूछा।

—मुझे तो अधेरी जाना है। चलते चलते आपको आपके यहा पहुचा दूगा।

—चल सकेंगे? लडकी के स्वर म थोडा सा सदेह फिर झलका, लेकिन व्यग्रता और अनुरोध बहुत साफ था।

—क्यों नहीं भला? चलिये!

माहौल खामोशी और लाचारी की गिरफ्त म था और एक हद तक

उदासी बिखेर रहा था। रेल की पटरियों के साथ साथ बिछे हुए महर्षि कर्वे मार्ग के फुटपाथ पर चलते हुए उन दोनों के बीच करीब दो हाथ का फासला था। रह रहकर वह बायें हाथ से साड़ी के आंचल से कमर के अनावृत्त भाग को ढापती और घुमाकर आगे गिराये हुए पल्लू को गले के ऊपर तक फैलाती, और पल्लू का किनारा जपर के गले में खोंसते या दायें हाथ की उंगलियों से पकड़ते हुए, एक छिपी नजर से, साथ चल रहे लड़के को ताकने लगती, जिसके चेहरे पर हर बार आंचल की गतिविधि लक्ष्य करके व्यथा लज्जा और खिन्नता उभर आती थी।

और फिर चलते चलते जाने क्यों लड़के के कान दहक गये।

—क्या आपको अच्छा नहीं लग रहा ? उसने निरर्थक वार्ता की।

लड़की ने आश्चर्य से उसे देखा, और वह हालांकि पीछे नहीं देख रहा था, मगर उत्तर सुनने की अपेक्षा में उसकी चाल स्वतः धीमी हो गयी थी।

—मैं कह रहा था, आप यों अकेली कैसे रह गयीं ? लड़की के निकट आ आने से उसके स्वर में प्रफुल्लता और सद्भाव का पुट था।

—मैं अकेली ही थी। लड़की का स्वर सहज था।

—क्यों ? आप रोज अकेली ही आती हैं ?

—एक इंटरव्यू देने आयी थी। बताते ही वह सस्मित हो उठी।

—ओह ! उसका कंठ सहानुभूति से भर गया।

दो क्षण चुप रहकर उसने पूछा—कैसा हुआ इंटरव्यू ? कहां था ?

—अभी पता नहीं क्या हुआ। मशीन्स एक्सपोर्ट कार्पोरेशन में था।

—इस रास्ते में अगर कभी जरूरत पड़े, तो आपको क्या कहकर बुलाना चाहिये ? उसने पूछा।

—मिस चाको पदमा चाको, लड़की अनिच्छा से बोली।

—हैं ? वह चौंका। कुछ क्षण उसे ध्यान से देखकर बोला—लगता नहीं। बिलकुल नहीं लगता।

—क्या ?

—कि आप केरल की हैं !

पदमा थोड़ा सा मुसकराकर रह गयी।

—और आपके माथे की बिंदी देखकर कौन कहेगा कि आप ईसाई

हैं ! यह ससार अत्यत पुनीत और सुदर है। विलक्षण है ! वह अस्फुट स्वर म बोला—लेकिन हमने इसे कठिन और विरूपक बना दिया है क्या नही बना दिया ? उसने पद्मा की तरफ देखकर कहा।

—हू। उसन अस्पष्ट और सक्षिप्ततम उत्तर दिया। या शायद यह उसकी बात का उत्तर था ही नही।

—हम घुटे घुटे पडे रहते हैं। मारे मारे घूमते ह। हम सबको जानना चाहते ह। सबकी सराहना चाहते हैं। चाहत है सब हमें जानें और समझें, लेकिन एक दूसरे के सामने पडने से हम बचते ह। हम सोचते ह कि दूसर हमें झिझोडकर सीधा करेंगे, और चेतायेंगे कि हममें मिश्र होन और पसद किये जान की तमाम क्षमताए हैं, हमारा मन निमल है और हमे उसकी इच्छाए दबाकर रखने की जरूरत नही है जबकि ऐसा नही हो सकता क्या हो सकता है ?

—आप कहा काम करते है ? पदमा चाको ने उसे टोककर पूछा।

—हिंदुस्तान उद्योग, हेड ऑफिस मे।

—कोलाबा ?

—हा।

और दोनो म ऐसी ही रुकी रुकी बातचीत चल निकली। इसमे व्याघात तब पडा, जब आपेरा हाउस से ह्यूजेज रोड की तरफ मुडन के लिए उन्होने पुल की तरफ रुख किया।

सर्राती हुई एक लबी कार उनके सामने से निकली और पाच छ गज दूर जाकर खडी हो गयी। उसका बाया दरवाजा खुला और एक स्त्री भडभडाती हुई बाहर निकली।

—दफा हो जा चुडैल ! इसके साथ ही उसन एक क्रुद्ध महिला स्वर सुना जो कार के भीतर से आ रहा था।

उसने बमुश्किल देखा कि कार म चालक सहित दो स्त्रिया और दो पुरुष पीछे और दो स्त्रिया और दो पुरुष आगे बैठे हुए हैं—सट और प्राय एक दूसर पर झुके झुके से और अगले ही क्षण कार पूरी गति म चल पडी तो वह महिला उ ह रुद्र स्वर म दुवचन कहती और राहगीरो का ध्यान आकर्षित करती वही खडी रह गयी। व दोना निकट से गुजरे तो वह चुप

होकर, बिना कुछ कहे, उनके साथ चल पडी।

पद्मा चाको ने उसकी तरफ देखा तो उसने स्वतः बता दिया कि पाटिल उद्यान के पास उसने इस कार को रोका था और लिफ्ट मांगी थी। उन्होंने थोडे संकोच के बाद ही उसे बैठाया, मगर 'दुष्टा' ने उसके बैठते ही 'बेशर्मियां' शुरू कर दी। उसने ऐतराज किया तो उन्होंने गालियां देकर उसे 'बस चुप रहने' के लिए फटकार दिया, और जब वह चुप नहीं रही तो उसे यहां उतार दिया।

उसने ध्यान से देखा। महिला अधेड, लंबी-तगडी, ठोस और गठी देह की थी, मगर बहुत फूहड चाल से चल रही थी। उस लिफ्ट देने वाली का शायद इसलिए कृपा करनी पडी थी कि वह गर्भवती थी। वह बडबडाते हुए बडे मजे से उनके साथ साथ चलने लगी।

पद्मा चाको ने पूछा—कहां जाना है आपको ?

—माहिम बाजार ! आपको ? लेकिन वह अपने प्रश्न का उत्तर पाये बिना गिडगिडा उठी—आप लोग मुझे साथ लेते चलिये न !

—कोई हर्ज नहीं, चलिये ! पद्मा चाको ने कहा।

—हां, प्लीज ! आप नहीं जानते मैं किस मुसीबत में फंसी हुई हूं। घर में मेरे दो छोटे बच्चे हैं और छोटी बहन है बस। और मेरा घरवाला अगर पहुंच गया तो

उसने अपनी जबान काट ली। लेकिन इसके साथ ही उसने उन दोनों को देखा, जो उसे अपलक देख रहे थे। वह फीकी-सी हंसी हंसकर सफाई देने लगी—कुछ नहीं। मैं तो वैसे ही कह रही थी। और सहसा उसकी आंखें सजल-सी हो गयी, और उसने चेहरा सीधा कर लिया थोडी देर बाद वह फिर बडबडाने लगी।

★

दोनों महिलाओं के साथ साथ चलता लडका अपने आप ही कभी बुझ जाता, कभी उमग उठता। जब भी उसका हृदय उमगता, उसकी इच्छा होती कि अधेड महिला के एकदम निकट होकर कहे कि लावण्यमयी, आप मलिन न हों, बस एक बार और मुझे राजदार बना लें। फिर मैं सुबह शाम आपकी व्यथाएं सुनूंगा, आपके घाव सीऊंगा, आपका रोष सहूंगा, आपकी

चिताए वादूगा, आपके लिए सुख की तलाश करता दूर दिगत तक बिना थके जाऊगा। और इस सबके बदले मे मुझे कुछ नही चाहिये होगा—सिवा इसके कि आप मुझे अपना बधु स्वीकार कर लें। बधु की तरह देखें पुकारें।

और फिर उसे पदमा चाको की निस्सगता डसने लगी ।

एक नयी, चमचमाती फिएट उनके पास मडरा उठी थी। जब उसका ध्यान उसकी तरफ गया, तो उसने पाया कि बेध्यानी मे चलता वह उसके इजन से दो तीन कदम आगे पहुच गया है, और पदमा चाको पीछे छूटकर सवारो के सामने पड गयी है। कार के दरवाजो (या साथियो) से उसने हस्बमामूल तीन चार हाथ का फासला रखा हुआ था, मगर अपने साथी को पूरी तरह बिसारकर बडी आशा और उतावली से भीतर के लोगो से कुछ सुनने की प्रतीक्षा कर रही थी।

—कहा आना चाहती हैं ? किसी ने पूछा। व पाच छ थे, और सभी पुरुष थे।—लेकिन हम एक या दो को ही बठा सकते हैं।

पद्मा चाको ने अपनी गरदन घुमाकर लमहे भर को उस पर और उसके साथ खडी महिला पर अपनी फैली फैली आखो वाली नजर डाली, और नजदीक आने को उनके कदम उठते ही प्रश्न करने वाले सवार से कहा—ठीक है, गवनमेट कालोनी।

—मगर हम माहिम बाजार तक हा ले जा पायेंग। पहले वाले सवार ने कहा। लेकिन साथ ही दूसरे वाले न खासी हिंदी मे चेंपा—छोड आयेंग न यार! आने तो दे!

—ठीक है। पद्मा चाको न सुना या नही, लेकिन वह दरवाजे के नजदीक हा गयी।

महिला भी दो कदम करीब हो गयी। लेकिन पदमा चाका न पीठ कर ली।

कार चली तो महिला की भृकुटी भौंहा और लाछना व तिरस्कार-भरी दृष्टि छूटे हुए मद को बीधने लगी।

—बदजात! बदमाश! हरामी गुडे! उसने पहले सी ही चीखती आवाज म कहा और करीब चालीस पचास कदम तक प्राय भागती हुई दूर [illegible] ल गयी।

कई मिनट तक वह निष्प्राण सा वहीं ठुका खडा रहा।

धीरे धीरे उसके कधे झुकने लगे। सिर लटक गया और टागें भारी होने लगीं। उसके भीतर—उसे लग रहा था—उदर से लेकर कठ तक एक शव फैला हुआ है, जो हर सास के साथ अधिक फूलकर उसे गति करने से से निरतर विवश करता जा रहा है।

मरियल चाल से चलता हुआ वह हाजी अली के सामने वाली समदर की फसील पर बठ गया। फिर उस पर लेटकर उसने आखें बद कर ली।

★

—ट्रेनें चालू हो गयीं?

—हो गयीं।

वह उठ गया, लेकिन बठा रहा। चौराहे पर नजरें जमाये अपने सामने से हेंस रोड से और वाडन रोड से निकल निकलकर ताडदेव रोड में समाते लोगों को देखता रहा। फिर कुछ न सोच पाकर खुद भी खड़ा हो गया और उधर ही चल पडा।

—ट्रेनें कहा तक चल रही हैं? चलते चलते उसने किसी से पूछ लिया।

—पता नहीं! कहता कहता अजनबी आगे बढ गया।

धीरे धीरे उसके कदम भीड के कदमों के साथ मिलने लगे।

वह रास्ते भर जिस तिस से पूछता पाछता, दस बजे बाब सेंट्रल पहुचा, प्लेटफाम पर जाने के लिए पुल उतरने से पहले उसने गेट पर खड़े टिकट कलेक्टर से पूछा—ट्रेनों की क्या पोजीशन है?

—बाब सेंट्रल से सातारूज तक।

एक और दो नबर के आमने सामने के प्लेटफार्मों पर तिल रखने की भी जगह नहीं थी। फिर भी वह इधर से उधर तक घूम फिरकर हर जगह का मुआयना सा करने लगा।

पुल की सीढियों के पास, जनाने फस्ट क्लास से आगे अपेक्षाकृत मस्त-तबीयत लडकियों औरतों की एक टोली थी, जिसके पास खड़े ही क्षणों में वह भाप गया कि उनमें कई अकेली अकेली है।

न उन्हे एक एक क्षण के अतराल पर बार बार देखना

उसकी ग्राखा म भय होता, कभी भत्सना, कभी नितात भावहीनता, ग्रौर कभी हलकी सी चचलता। वह ग्रपेक्षाकृत नाटी, दुबली ग्रौर पास खडी स्त्रियो की वाता के प्रति उदासीन थी, ग्रौर कधो से नीचे तक छितरे हुए उसके केश उसके गोरे-गोरे मुखडे को ग्राकपक बना रहे थे।

लडकी न उसे ग्रपन करीब देखा तो चेहरा फेर लिया, ग्रौर तब तक नही घुमाया, जब तक उत्तर की ग्रोर प्लेटफाम नबर दो पर ग्राती हुई ट्रेन की ग्रगली बत्ती नहीं चमकी।

रोशनी ज्यो ज्यो करीब ग्राने लगी, त्यो त्यो शोर ग्रौर धक्का मुक्की बढन लगे। ट्रेन के पहले डब्बे न ज्यो ही प्लेटफाम छुग्रा, लोग एक दूसरे से पिलते हुए उस पर चढन को दौडे, लडकी ने घबराकर धक्को से बचते या लडखडाकर उन्हे बरदाश्त करते हुए व्याकुलता स चारो ग्रोर देखा ग्रौर फिर चेहरा पूरा घुमाकर कई क्षण तक उस पर नजर जमाये रखी।

उनके सामने जो मर्दाना फस्ट क्लास ग्राया, उसम चढने का निणय लेन स पहले ही उसे पीछे से किसी ने जोरदार धक्का मारा ग्रौर वह लडकी के ऊपर जा गिरा, जो ग्रागे खडी ग्रौरतो पर गिरी, जो ग्रागे खडे किन्ही दूसरो पर गिरी, ग्रौर जिनमे से कुछ पीछे के दबाव के कारण स्वत कपाटमट क ग्रदर हो गये। ग्रौरतो के मुहा से गालियो ग्रौर क्रदना का सलाब फूट पडा।

लडकी उसके ग्रौर ग्रगली ग्रौरतो के बीच भिच गयी ग्रौर बिलबिलाकर पलटी, मगर उसके छितरे हुए केश उसके चेहरे पर इस कदर छितरा गये थे कि वह क्षण भर के दाताश म ही ऊपर देखने की निष्फलता भाप गयी। लडकी को मजबूरन चेहरे से ग्रपने केश हटाकर ग्रनुनय ग्रौर व्यथा भरी दष्टि से उसकी ग्रार निहारना पडा।

उसने ग्रपनी दोनो हथेलिया लडकी की बगलो के नीच, उसकी पीठ पर जमाकर उस पूरे जार मे दबाया, ग्रौर तब तक दबाव डाले रखा, जब तक लडकी ने पक पर कपाटमट म नही टिका लिया।

ग्रदर घुसकर लडकी ने माग ग्रौर स्थान बनान में पूरी सहायता दी। उसन शुरु स ही रुख दरवाजे के साथ वाली दीवार की ग्रोर रखा। एक ग्रादमी ने उसे दीवार स ग्राडे टिकने की सुविधा दे दी ग्रौर दूसरी ग्रोर

खडी हुई कुछ स्त्रियो की ओर सरक गया।

उसकी आखो का मुकाबला करते हुए वह असमर्थ-सा हो गया और अन्यत्र देखने लगा।

फिर उसने लडकी की आखों मे सीधा, अपलक देखने का फैसला किया उसे लगा कि लडकी की आखें रग बदल रही हैं। फिर उसे लगा कि वे बातें कर रही हैं। फिर लगा कि वे स्वप्न देख रही हैं फिर किसी ने पीछे से उसे बुरी तरह से दबाया और वह अपना सतुलन गवाकर लडकी से चिपककर रह गया। उसके फेफडा पर दोनो ओर ओर दो कोमल स्पश हुए, जिन्हें पहले तो वह पहचान न पाया, मगर फिर उन स्पर्शों के स्वरूप की कल्पना करके वह आरक्त हो उठा और उसके सारे मे बदन ऊष्मा दौडने लगी।

उसने फिर से उसकी आखो मे देखना चाहा तो उसे अपनी आखों के ऐन नीचे, कधा से नीचे तक छितरे केशो वाला सुगधित सिर दिखा। अगले स्टेशन पर ट्रेन रुकी, और पचास, सौ या हजार आदमियो न भीतर आने का गैला मचाया, तो उसने चारो तरफ से छिपाकर उन केशो को अपने ओठो से छू लिया, और शरमाकर अपने ही कधे मे अपना चेहरा छिपाने की कोशिश करने लगा।

—आप कहा जायेंगी ? उसने मिमियाकर पूछा।

—खार ! वह धीरे से बोली।

आखें फिर गुथ गयी।

—आप आराम से खडी हैं ? उसकी आवाज कापी।

—हा, ठीक है। लडकी का मुह खुला रह गया।

ट्रेन रुकने लगी तो लडकी ने पूछा—कौन सा स्टेशन है ?

—लोअर परेल। शायद। रुक रुककर चल रही है, वह उसकी मुस-कराती आखो से अप्रतिभ होकर बोला।

तभी वे दोनो झकझोर दिये गये।

—बाबा, जरा देखो ! पुकारती हुई उधर की महिलाए प्राय गिर पडा।

न ही मुन्नी लडकी कही इस पोसमपीस म यातना न पा रही हो सोच कर उसने उसका चेहरा देखना चाहा, मगर उसकी आखें उसकी विस्तीण केशराशि म भटक कररह गयी, जिसके आवरण म चेहरे की आकतिरेखाए भर भलक रही थी। वह अगाध स्नेह से उसके सिर पर झुककर फुसफुसाया —सॉरी, धक्का मुक्की है।

लडकी ने धीरे से, थोडा सा सिर उठाया, उसका माथा और दो आखें पूरी दिगी और उसके कठ से मात्र इतना निकला—ऊह !

उन आखो को उसने चाव से निहारा। उनमें सूनेपन, भय, घणा जैसे वे एकरस और बार बार घुमडन वाले भाव नही थे। उनम स्निग्धता, समवदना और सचारपरक सघनता थी, और कुछ क्षण तक उसे एकटक निहारती हुई व स्वत मुदन सी लगी और फिर माथे के साथ साथ झुक गयी जिसके बाद बहुत दर तक वह अपने सीने पर उसकी पलको के खुलन झपकने की गति अनुभव करता रहा।

★

—आपको सार मे उतरना है न ? उसन हलके से हा मे सिर हिलाया।

—प्लेटफाम उधर आयेगा।

वह शायद जानती थी, और इसीलिए चिंतित थी। उसकी दुश्चिता भापकर उसने कहा—आप इसी तरफ उतर जायें। मैं आपको उतार लूगा।

लडकी न उसे ध्यान से देखा, फिर सिर हिलाकर हा कर दी।

ट्रेन रुकने पर उसने जगला की तरफ नीचे, पटरिया के पास छलाग लगा दी, और घूमकर दोना हाथ ऊपर की तरफ फला दिये। लडकी ने दोनो बगलें उसकी दोनो हथेलियो पर छोड दी। एक हलका सा उछाला देकर लडके ने उसे धरती पर टिका दिया।

क्षण भर खडे रहकर उसने अपन स्कट और ब्लाउज ठीव किय और बोली—बहुत धन्यवाद ! और तीर की तरह जगले के साथ साथ प्लेटफाम के पीछे की ओर चल पडी।

—सुनिये ! वह बौखलाकर पीछे लपका।

—क्या ? दूर खडी होकर उसने पूछा ।

—उधर कहा जाती है ? ट्रेन चलते ही मैं आपको प्लेटफार्म पर चढा दूगा !

—नही । और वह चल पडी ।

उसे गहरा सदमा लगा । उसका कठ सूख गया और अपने चेहरे से उसे कुछ निचुडता सा महसूस हुआ, मगर वह लडकी के पीछे पीछे चलता रहा ।

—एक मिनट तो सुनिय ! करीब करीब दौडते दौडते उसके नजदीक पहुचकर उसने विनती की ।

—क्या चाहते हो, मूख !

वह ओठ फडफडा कर रह गया ।

वह चीखी—कोई काम नही तुम्हे ? कही जाना नही ?

—मैं आपके साथ चलना उसकी आवाज घुटी हुई थी ।

—नही sss ! कभी नही ! वह धीमे मगर तीखे स्वर में बोली और कठ सिर अकडाकर उस पर प्रहार सा करती बढने लगी ।

—क्या मैंने आपको नाराज कर दिया ? वह उसके साथ लपकते हुए कठिन रूप से विगलित स्वर म बोला ।

—तुम्हे क्या चाहिये ? उसने स्थिर, कठोर स्वर मे पूछा ।

वह फिर ओठ फडफडा कर रह गया ।

—क्या मैं आपसे दोबारा मिल सकता हू ?

—तुम जाओ अब गलीज कीडे ! जाओगे ? वह मारने की मुद्रा मे बाह उठाकर उसकी तरफ आगे झुकी ।

अनहोनी से बचने के लिए सिर पीछे करके वह दुबल स्वर में भौका—बको मत !

—तुम अब जाओ, चुडल के जन वह बिना सुने, बिना विराम लिये बरसी ।

—बको मत, तुम चुडल की जनी ! उसका स्वर सहसा रुद्र हो उठा । छिनाल कहीं की !

—जलील ! कमीने, लोफर ! और सहसा वह दुवचनो की खोज तजकर तेज कदमो से चल पडी ।

—हत्यारिन ! रंडी ! उसने अपने पर थोड़ा काबू पाया और पीछे से चिल्लाया ।

लड़की एक बार पलटी उसकी आंखो में प्रबल घृणा थी ।

जब उसमें चलने की शक्ति लौटी, तो उसने सड़क पर थूक दिया और सिर डाले डाखे सांताक्रूज की तरफ चल पड़ा ।

★

वह बुत-सा बना चौराहे की उस भीड़ को देखने लगा, जिसके बिखरने की रफ्तार में अब तूफान आ गया था। स्टेशन की ओर से आने वाले लोग चौराहे पर पहुंचकर बेसाख्ता दौड़ पड़ते थे और फिर उसने बायीं दिशा में, जिधर से वह आया था, कुछ दूर पर मानव कंठों का एक लयपूर्ण उच्चनाद सुना ।

—बंबई किस की ? महाराष्ट्र की !

—महाराष्ट्र किसका ? मराठों का !

जुलूस विलेपार्ले अंधेरी की तरफ जा रहा था। उसके साथ चलने वाले पैदल सिपाही बुरी तरह थके और ऊबे हुए नजर आ रहे थे। भीड़ चीरता हुआ फुटपाथ पर वह भी उसी दिशा में बढ़ने लगा।

वह शिवाजी पार्क की विलंब से शुरू होकर मिनटों में खत्म हो जाने वाली रैली के घरों को लौटते हुए महाराष्ट्र दल के अनुगामियों का ऐच्छिक जुलूस था। वह उन्हें कौतुक से देख रहा था, जो मीलों चले थे, जो ट्रेनों में शायद पिसते पिसते आये थे, मगर जिनके चेहरों पर फिर भी उल्लास था, उत्साह था।

सहसा उसने पाया कि उसके चहुंओर प्रदर्शनकारी हैं और वह प्राय उन्हीं में से एक लग रहा है। उसके बदन में झुरझुरी दौड़ गयी। वह अभिभूत होकर उन्हें देखने लगा, जिन्होंने पूरे नगर को सांसत में डाल दिया था जिन्होंने अपनी बात मनवाने के लिए एकसाथ जुटने का श्रेष्ठ बंधुत्व दरशाया था, और जिन्होंने अपने रास्ते में पैदा की जाने वाली बाधाओं के बदले में सबको पूरी तरह मजा चखाया था।

धीरे धीरे सरकता हुआ वह अपनी तरफ के प्रदर्शनकारियों की अगपंक्ति में जा खड़ा हुआ।

—बंबई किसकी ? महाराष्ट्र की !

—उसने महसूस किया कि उसके ओठ नारा की लय के अनुसार स्वतः फड़फड़ाने लगे हैं।

—परदेसी सेठा ? जाओ, जाओ !

—महाराष्ट्र का मानुष ? काम करेगा, राज करेगा !

उसके कंठ से अब स्पष्टतः नारे फूट रहे थे और वह बाकायदा हाथ उठा उठा कर प्रदर्शनकारियों का साथ देने लगा।

सहसा उसकी नजर सामने से गुजरती, अंधेरी की तरफ जाने वाली एक कार पर पड़ी। पिछली सीट पर बैठी एक लड़की ने उसकी तरफ हाथ उठाया हुआ था और उसके अगल बगल बैठी दो अन्य मुंह फाड़े, असीमित आश्चर्य से उसे देख रही थी।

प्रभा ?! मृदुला !? सूजी !?

—देखो ! और उसके ओठों ने तेजी से गति की। उनमें से एक ने आगे बैठे एक आदमी का कंधा झकझोरा—देखो, देखो ! परदुमन ! परदुमन भी है उनमें ! उसने उन ओठों से कही गयी बात की सहज कल्पना की। आदमी ने चौंककर उसकी तरफ देखा, तो उसके सामने अपने दफ्तर के सीनियर एग्जिक्युटिव मिस्टर शिव त्रेहन का चेहरा था ! त्रेहन और दफ्तर के तीन और व्यक्ति वह सर्वांग जड़ हो गया।

वह शून्य दृष्टि से उस कार को दूर जाते देखता रहा, जिसमें बैठे चारों स्त्री पुरुष अब भी पीछे घूमकर उसे देख रहे थे।

कार ओझल हुई तो वह भीड़ में घुसकर छिप गया।

★

—बस फस चालू करो ना, मास्टर ! अब सब ठंडा है। उसके सामने जा रहे एक आदमी ने बंदोबस्त के एक सब इस्पेक्टर से कहा, जो थोड़ा सुस्ताने के लिए एक नवोली की 'बंद' दुकान के अधखुले दरवाजे के पास खड़ा सिगरेट पी रहा था।

—हमने बीईएसटी से कहा है मगर उनके अफसर अभी खतरा जारी समझ रहे हैं। आप जानते हैं, हम उन्हें हुक्म नहीं दे सकते !

—ठीक है, हम भी मरने वाले नही ! राही आगे बढ़ता हुआ बोला, न ही बबई छोडने वाले हैं !

राही ने उसे देखते और सुनाते हुए बरबस अपनी बातो मे शामिल कर लिया—निकम्मे है ये । कुछ करते तो बनता नही, बोलते है जाओ यहा से

वह उसे बोलते जाते देखता रहा । आखिर मे पतरा बदलकर वह उसकी कुशल मगल जानने पर उतर आया ।

—*ठीक ही है, क्या थकना ! आप कैसे हैं !*

—अच्छा हू, शुक्रिया । कहा से आ रहे है ?

—खार से ।

—*औरतें ताडते ? राही ने मसखरी की ।*

वह झेंप और खिन्नता से मुसकरा दिया ।

—आप इतने घुटे घुटे क्यो है ? होशियार होइये । खुशबाश रहिये । *यह सब तो चलता है स्साला ! वह शुरू हो गया । मैं तो कहता हू, चलो* ठीक ही हुआ एक और शाक लगा पब्लिक को । पब्लिक को, आपको पता है, शॉक थेरेपी की जरूरत है । जब तक सारी चीजो स उसका भरोसा नही *जाता, वह काहिल बनी रहेगी आदमी को आदमी की तब तक जरूरत* ही नही महसूस होगी, जब तक दिनचर्या और व्यवस्था और तन्त्र उसका हर भ्रम तोड नही देते । यह बल्कि तेजी सेहोना चाहिये सुनिय, आप थोडी पी *लें, मैं कहता हू । क्या आप तनाव नही महसूस कर रहे ?*

उसे यह आभास होने लगा था कि यह आदमी जल्दी ही उसे उबा देगा मगर एक असमरणीय यात्रा के बाद सहज होकर कुछ बोलन सुनन की इच्छा उसके भीतर प्रबल हो उठी थी ।

—मैं पीता नही, लेकिन आपके साथ बैठना जरूर चाहूगा ।

—पीते नही ? तो क्या करेंगे ? मेरी बातो का पिटारा लूटेंग ?

—कुछ अपना भी लुटाऊगा । वह मुसकराया ।

वे दोनो एयरपोर्ट जान वाले रास्त पर मुड गये । आगे आगे चलता, राह दिखाता राही उसे रेलपथ के नीचे बनी झुग्गियो म से एक म ले गया ।

कच्चे फर्श पर बिना चिनाई के ईटें, रेलपथ के पत्थर और इक्का दुक्का टाइलें बिछी हुई थी, जिन पर लगातार और बेहिसाब पानी ने गिर गिरकर कीचड की एक परत तैयार कर दी थी। चारो ओर बिछे पाटियों पर आदमी ठसाठस ठुसे हुए थे। बीच मे एक बडी मेज पर नमक, उबले हुए चने और तली हुई बांगडा मछलिया पडी थी, और उसके गिर्द खाली जगह पर खडे कुछ लोग भकाभक गिलास खाली करते एक एक मिनट मे आ जा रहे थे।

एक कोने के पाटिये मे पहले उसे और फिर खुद को ठूसते हुए राही ने बुलद आवाज मे किसी गनपत को पुकारा और उससे मुखातिब होकर पूछा—आपका नाम क्या है, जनाब !

—परदुमन खोसा, उसने कहा।

—खुशी हुई आपसे मिलकर मिस्टर खोसला ! मैं कन्नन शेट्टी हू।

—मैं खोसा हू, उसने अपना नाम शुद्ध करवाना चाहा।

—आप कोक तो लेंगे न मिस्टर खोसला ? उसके इगित की ओर जरा भी ध्यान न देते हुए उसने पास आकर खडे होने वाले गनपत की तरफ तवज्जह करते हुए पूछा—अच्छी वच्छी कुछ !

—कोक, सिर्फ !

—ओ के कसा है गनपत ! एक क्वाटर, एक सोडा, अणे एक कोक लौकर !

आडर देकर कन्नन शेट्टी ने चारो ओर निगाहे दौडाकर एक-एक आदमी को ध्यान से देखना और किसी किसी से दुआ सलाम करना शुरू किया।

—कसे पहुचे ? एक सुवेशधारी आदमी ने उसके अभिवादन का जवाब देकर पूछा।

—पहुच गये, बस। तुम कैसे आये ?

—मैं पहली गाडी से आया। दादर से पकडी। अय्यर, भोसले और —कुछ दूसरे। हम सब इकटठे थे।

वे दोनो दोस्त आपस मे लग गये।

— कुत्ते की औलाद, सालो, मुबई-महाराष्ट्र आमचे वालो ! शेट्टी तश और नश म आकर भापण सा देने लगा था, तुम्हे ठीक मालूम भी है कि तुम्ह क्या चाहिये ? गुडे को साले को लीडर बना दिया !

व सब बाकायदा बहस म उलझ गये थे और शेट्टी न उसकी तरफ स ध्यान बिलकुल हटा लिया था। घुटन और पसीन के मारे जब उसका बुरा हाल हो गया, तो उसन टोककर कहा—मैं जाऊगा अब मिस्टर शेट्टी।

—एँ, जाओग ! शेट्टी चौका फिर अत्यत सहज होकर बोला, कुछ कर नही सकता ! यकीनन तुम यहा बठे रहकर आनद नही पा सक्ते

उसने एक आध बात तकल्लुफ की और की, और बोला—अच्छा ठीक है तो। कभी शुरू करो तो यहा आना। मैं करीब हर छुट्टी और इतवार को आता हू। वरना चकाला म ही जमाता हू ओ के, तो ! और वह विदा लेकर बाहर आ गया।

★

रात आधी टल गयी थी और फिजा म अब तहलका नही बचा था। मुख्य सडक पर अब भीड भी नही थी और सातात्रूज की तरफ से आने वाले कारवा थमे से लग रहे थे। रास्ते पर जो लोग चल रहे थे, वे करीब करीब टूट हुएऔर पस्त थे, और ज्यादातर चुप और अकेले अकेले थे। एक डेढ फरलाग चलन के बाद उसने अपने इद गिर्द के लोगो मे हप और फुरती की एक आकस्मिक लहर के स्वर सुने।

—ट्रेन सर्विस चालू हो गयी, पीछे स आकर उसके आगे निकलते हुए एक आदमी बोला—उधर देखो ! और उसन रेलपथ की ओर सकेत किया।

उसन देखा कि सचमुच एक ट्रेन सातात्रूज से चली आ रही है। मगर उसकी चाल मे तेजी नही आयी।

ओफ ! उसके कठ से वेदनामय स्वर फूटा और वह बुदबुदा उठा—तो अब सब ठीक हो गया फिर से !

उसे लगा कि एक अपूर्व अवसर उसे छूकर निष्फल गुजर गया है। यह और अनुभूति क्रमश उसके मन म गहरी होती चली गयी और वह व्यथा पश्चात्ताप के सागर म गोते खान लगा।

जुहू पार्ले रोड के इधर तक उसके पहुचत पहुचते रास्ता ठीक वसा हो

गया, जैसा हुआ करता था। चौराहा पार करते करते उसके कदम एकदम शिथिल पड गये और वह बीच मे ही रुक गया। सडक के लाघे हुए भाग को देखने के लिए उसने गरदन घुमायी तो थोडी दूरी पर श्वत परिधान मे दो स्त्रिया आती दिखी। वह करुणा से उन्ह निकट आते देखने लगा।

—हलो! उनके पास आने पर वह बोला।

—हलो! येस? ठिठककर रुकती वे सावधान हो गयी।

—आप एक मेहरबानी कर सकेंगी, वह रूधे स्वर म बोला।

—क्या चाहते हैं? उसके स्वर की विगलता का स्पश अनुभव कर वे दो कदम उसकी ओर बढ आयी।

—आप आप उसकी आखें एक साथ उमडी और लजायी—आप चलत चलते मुझसे कुछ बातें कर सकेंगी?

—बातें! वे हक्की बक्की होकर एक-दूसरी को ताकने लगी, और फिर ठठाकर हस पडी।

—बातें! आखिर क्या बातें? उसके झुके हुए, लज्जारक्त चेहरे की ओर देखते हुए उनमे से एक बोली—कहा जायेंगे?

—अघेरी, उसने बिना सिर झुकाये कहा।

—अघेरी? चलिये तो फिर! लेकिन अघेरी म कहा?

—फिदाई बाग के पास, चलते चलते, सिर झुकाये-झुकाये उसने उत्तर दिया।

दूसरी लडकी उसे बहुत गौर से, एकटक उसे देखे जा रही थी, जिससे उसे बडा सकोच हो रहा था। कुछ कदम चलकर, पता नही कैसे वह अपनी सहेली की बगल से निकलकर उसकी बगल मे आ गयी। और उसका हाल और बुरा हो गया।

—यह तो बडी मुश्किल है! पहली ने मुसकराकर कहा।

—क्या? वह घबरा गया।

—आपने कहा था कि बातें करेंगे, लेकिन आप चुप हैं।

—आप कीजिये

—भला क्या करें! कैसी बातें करें? अच्छा, आपकी शादी हो गयी?

—नही! वह और घबरा गया।

— कुत्ते की औलाद, साला, मुबई-महाराष्ट्र आमचे वालो !
शेट्टी तन और नश म आकर भाषण-सा देन लगा था, तुम्ह ठीक मालूम भी है कि तुम्हें क्या चाहिये ? गुडे को साल का लीडर बना दिया !

व सब बाकायदा बहस म उलझ गय थे और शेट्टी न उनकी तरफ स ध्यान बिलकुल हटा लिया था। घुटन और पसीन के मारे जब उसका बुरा हाल हो गया, तो उसन टोककर कहा—मैं जाऊगा अब, मिस्टर शेट्टी।

—एँ, नाम्राम ! शेट्टी चौंका फिर अत्यत सहज होकर बोला, कुछ कर नही सकता ! यकीनन तुम यहा बठे रहकर आनद नही पा सकत

उसन एक आध बात तकल्लुफ की और की, और बोला—अच्छा ठीक है तो। कभी शुरू करो तो यहा आना। मैं करीब हर छुट्टी और इतवार का आता हू। वरना चकाला म ही जमाता हू ओ के, तो ! और वह विदा लेकर बाहर आ गया।

★

रात आधी ढल गयी थी और फिजा म अब तहलका नही बचा था। मुख्य सडक पर अब भीड भी नही थी और सातान्रूज की तरफ से आने वाले कारवा थम से लग रह थे। रास्ते पर जो लोग चल रह थे, वे करीब करीब टूट हुएऔर पस्त थे, और ज्यादातर चुप और अकेले अकेले थे। एक डेढ फरलाग चलन के बाद उसन अपने इद गिर्द के लोगो मे हर्ष और फुरती की एक आकस्मिक लहर के स्वर सुने।

—ट्रेन सर्विस चालू हो गयी, पीछे से आकर उसके आगे निकलते हुए एक आदमी बोला—उधर देखो ! और उसन रेलपथ की ओर सकेत किया।

उसन देखा कि सचमुच एक ट्रेन सातान्रूज से चली आ रही है। मगर उसकी चाल म तेजी नही आयी।

ओफ ! उसके कठ से वेदनामय स्वर फूटा और वह बुदबुदा उठा—तो अब सब ठीक हो गया फिर से !

उसे लगा कि एक अपूव अवसर उसे छूकर निष्फल गुजर गया है। यह और अनुभूति क्रमश उसके मन मे गहरी होती चली गयी और वह व्यथा पश्चाताप के सागर मे गोते खाने लगा।

जुहू पार्ले रोड के इधर तक उसके पहुचत पहुचते रास्ता ठीक वसा हो

गया, जैसा हुआ करता था। चौराहा पार करते करते उसके कदम एकदम शिथिल पड गये और वह बीच मे ही रुक गया। सडक के लाघे हुए भाग को देखने के लिए उसने गरदन घुमायी तो थोडी दूरी पर श्वेत परिधान मे दो स्त्रिया आती दिखी। वह करुणा से उन्ह निकट आते देखने लगा।

—हलो! उनके पास आने पर वह बोला।

—हलो! येस? ठिठककर रुकती वे सावधान हो गयी।

—आप एक मेहरबानी कर सकेंगी, वह रूधे स्वर म बोला।

—क्या चाहते हैं? उसके स्वर की विगलता का स्पश अनुभव कर व दो कदम उसकी ओर बढ आयी।

—आप आप उसकी आखें एक साथ उमडी और लजायी—आप चलत चलते मुझसे कुछ बातें कर सकेंगी?

—बातें! वे हक्की बक्की होकर एक-दूसरी को ताकने लगी, और फिर ठठाकर हस पडी।

—बातें! आखिर क्या बातें? उसके झुके हुए, लज्जारक्त चेहरे की ओर देखते हुए उनमे से एक बोली—कहा जायेंगे?

—अधेरी, उसने बिना सिर झुकाये कहा।

—अधेरी? चलिये तो फिर! लेकिन अधेरी में कहा?

—फिदाई बाग के पास, चलते चलते, सिर झुकाये झुकाये उसने उत्तर दिया।

दूसरी लडकी उसे बहुत गौर से, एकटक उसे देखे जा रही थी, जिससे उसे बडा सकोच हो रहा था। कुछ कदम चलकर, पता नही कसे वह अपनी सहेली की बगल से निकलकर उसकी बगल में आ गयी। और उसका हाल और बुरा हो गया।

—यह तो बडी मुश्किल है! पहली ने मुसकराकर कहा।

—क्या? वह घबरा गया।

—आपने कहा था कि बातें करेंगे, लेकिन आप चुप हैं।

—आप कीजिये

—भला क्या करें! कैसी बातें करें? अच्छा, आपकी शादी हो गयी?

—नही! वह और घबरा गया।

—अब बात करनी थी, इसलिए मैंने पूछा। वरना तो मुझे पता था। वह हंस पड़ा।

—शुक्र है, शुक्र है भगवान का!

—क्यों!

—आप हंसे तो!

—न हंसता तो?

—हम दोनों को लगता कि हम कितनी बोर लड़कियां हैं। एक उदास आदमी को पांच मिनट बहला भी नहीं सकतीं।

वह एक हार्दिक हंसी हंसा।—आप वाकई कमाल हैं!

—तो आप बतायें, आप क्या हैं?

वह चुप रहा।

—अच्छा तो आप पूछिये, हम बतायेंगी।

उसे कुछ नहीं सूझा। पूछ बैठा—आप कहां काम करती हैं?

—मैं तो नानावटी अस्पताल में हूं। और—वह सहेली से बोली—अब तू बता, री।

—नानावटी अस्पताल। वह अभी तक मुसकराये जा रही थी। और फिर वे तीनों हंस पड़े।

—स्टूडेंट हैं, या इंटर्नी?

—न स्टूडेंट, न इंटर्नी।

—यानी? सिस्टर?

—सिस्टर हमें कोई समझता तो नहीं पुकारते सभी हैं।

—आप चाहें तो हमें सिस्टर समझ लें, पुकारें भले ही नहीं। दूसरी ने जड़ा।

उसका निचला ओंठ कांप गया।

—सोच में पड़ गये! पहली ने ठिठोली की। अच्छा, आप हमें सिस्टर न मानिये मगर गर्ल फ्रेंड भी न मानियेगा।

उसका चेहरा स्याह पड़ गया। कठिनाई से उबरने के लिए उसने पूछा —केरल की हैं आप लोग?

—नहीं जी?! पहली ने तुरत प्रतिवाद किया। हम दोनों महाराष्ट्र की महान धरती की बेटियां हैं!

—अच्छा ! उसे सचमुच ही आश्चय हुआ।
—जी हा ! मैं मजरी तलपडे, और यह मेरी महान सखी, सुलभा पोतनीस।
—आप हिंदी तो फिर बोल समझ लेती होगी ?
—बोल समझ लेने का क्या मतलब ? ठाठ से जानती हैं ! कादबरी पढती हैं कविता पढती हैं, और
—कभी कभी हिंदी मे सपना भी देखती हैं ! दूसरी ने जडा।
—तो बोलिये न !
—हा जी, बोलती हू बताइये, आपका नाम क्या है ?
—परदुमन
—पजाबी हैं ? पहली ने टोका।
—हा, कसे मालूम !
—हिंदी मे जो 'प्रद्युम्न' होता है, वह पजाबी मे परदुमन होता है। अच्छा परदुमन जी, सरनेम क्या है आपका ?
—खोसा।
—खोसाss ! उसने याद करते हुए पूछा, 'खोसा' और 'खोता' एक ही होता है ?
वह झेंप गया।—बहुत फक है !
—कितना ?
—एकदम ठीक बताऊ, तो जितना मुझमे और एक गधे मे हैं।
—मतलब ? खोता, यानी और दोनो सखियाँ मुह दबाकर हसने लगी।
—अच्छा, खोसा जी ! मजरी ने कहा, आप अब खुश हुए न ?
—बहुत !
—तो आप मेरी एक बात मानेंगे ?
—क्या ?
—इर्ला म मेरा घर है। यानी बस, थोडे से कदम और। और
—बोलिये न ! उसने अनुरोध से कहा।
—कहना पडेगा और क्षण भर चुप रहकर वह बोली—देखिये, मेन

रोड पर ही मेरा घर है, और और मेरी मास खिड़की म बाहर ताकती मेरा इतजार कर रही होगी। इसलिए आप अब मुझसे अलग हो जायें देखिये बुरा न मानियेगा।

वह अवाक् उसे देखता रह गया।

—क्या ऐसा करना ही होगा? उसकी आवाज अधरोनी थी।

—हाँ मेरे पति भी बहुत शक्की हैं, और अपनी मा की बात का उन पर बहुत ज्यादा असर होता है। मुसीबत हो जायेगी मेरी ऐसा न होता तो मैं आपको घर ले जाकर एक प्याला काफी देती, कुछ देर और आपसे बात करती। मैं जान रही हू कि आपका मन अच्छा नहीं है। मगर

—अच्छा, मैं चलता हू। वह दूसरे फुटपाथ पर जाने के लिए सडक क्रास करने को हुआ।

—सुनिये!

वह पलटा।

नवरग सिनेमा के पास सुलभा का घर है, आप इसे छोड आयेंगे वहा तक?

—हा।

—तो आप इस बस स्टैंड पर इसका इतजार कीजिय। यह वहीं आती है।

दो तीन मिनट बाद ही सुलभा बस स्टैंड पर पहुच गयी—चलिय!

फिदाई बाग तक दोनो म कोई बातचीत नहीं हुई। वहा पहुचकर सुलभा ने पूछा—आपका घर कहा है?

—वह सामने! उसने सिंदूरी रग की चौमजिली बिल्डिंग की तरफ इशारा कर दिया।

—देवधन कौन से फ्लोर पर?

—तीसरे पर। चौबीस नबर।

—देवधन! फिर वह जैसे अपने आप से ही बोली—सुदर नाम है। देवता का धन।

—लेकिन देव का मतलब राक्षस भी होता है। और धन के नाम पर उसमें मेरे जैसी लतर भी है।

—छि आप न ऐसा कहिये, न सोचिये !

—आपको बुरा लगा ?

—अच्छा क्यो लगेगा ? किसे लगेगा !

उसकी इच्छा हुई कि वह जरा रुककर साथ चल रही सुशील तरुणी को जी भरकर निहार ले, मगर वह उसकी ओर बिना देखे चलता रहा ।

नवरग सिनेमा दिखा तो सुलभा बोली—बस, अब आ गया समझिये मेरा घर ।

—तो मैं चलू ? उसने पूछा ।

—जायेंगे ?

—जाना नही चाहिये क्या ?

—थक न गये हो तो वहा तक चल सकते हैं थोडा बैठ भी सकते है । मजरी के यहा जैसा कुछ नही है ! कुछ चाय नाश्ता करके जाइये ।

उसे लगा कि उसकी तपती रूह को किसी ने दुलार दिया है ।

—नही, जाऊगा अब, उसने कहा, फिर कभी

—घर तक नही चलेंगे ?

—नही ! भीतर से टूटी हुई आवाज को उसने भरसक दढ बनाने की कोशिश की ।

—अच्छा तो , वह भावपूण स्वर मे बोली, क्या धन्यवाद देना होगा आपको ? छि, कितनी छोटी बात हो जायेगी !

—नही, वह न दीजिये, उसने हसते हुए कहा, फिर कभी कोई रास्ते मे अकेला खडा मिले, तो उससे बातकर लीजियेगा, बस ! और बसाख्ता उसका हाथ आगे बढ गया । वह चौका तब, जब उस बढे हुए हाथ को सुलभा की हथेली ने सौजन्य पूवक पकड लिया और जोर से दो तीन झटके दिये ।

★

सुबह सब कुछ सामान्य हो गया था । अलबत्ता उसके दफ्तर मे यह बातफैल गयी थी कि रात महाराष्ट्र दल के जुलूस मे वह भी था, और लोगो को आश्चय हो रहा था कि इस कमबख्त पजाबी की इन मराठो से क्या और क्योकर मिलीभगत हो सकती है !

दोपहर की छुट्टी म कटीन मे बैठा वह दनिक सामाचारपत्र देख रहा था। कल के दगों की मुख्य विस्तृत खबर के साथ साथ मुखपृष्ठ पर समाचार था कि पडोसी देश के साथ भारत के युद्ध की सभावनाएप्र बल हैं, और वह सोच रहा था कि युद्ध हो जाय तो शायद इस ठहरे, जड समय मे कुछ हरकत हो शायद फिर अचानक सचार व्यवस्था भग हो जाय, फिर अनेक लोग चचगेट और बोरीबदर पर इकट्ठे हो, फिर कुछ लोगो स मुलाकात हो शायद यह सब कुछ तब थोडा बदल जाय

चरमराहट

विचित्र स्थिति मे पड गया हू ।

घणा, क्रोध, अप्रसन्नता, कुछ भी प्रगट नही कर पा रहा । उलटे भय अनुभव कर रहा हू । लगता है, जैसे इस सारे काड का जिम्मेदार मैं हू । या शायद मिस्टर राव को इस गत तक लाकर पीछे हटने की सुविधा मैंने ही छीन ली थी ।

आज तीसरा दिन है और मुझे अपना कतव्य तक नही सूझ रहा । रह-रह कर पद्रह नबर का दरवाजा देखता हू—भिडा हुआ, अस्पृश्य जानता हू, राव भीतर हैं, पर नही जानता कैसे हैं। जीवित, अधमृत या प्रस्तरति ? कैसे भी हो, एक बार उन्हे देख भर लेना चाहता हू । पर लज्जा भी होती है । क्या अब भी मैं उनसे सहानुभूति रखता हू ? क्या ऐसा विचार मात्र ही मेरे लिए धिक्कार समान नही ?

मा-बेटी दोनो छिपी हुई हैं, नथुने सुजाये और पलकें झुकाये । और मैं उन दोनो से कतरा रहा हू ।

मेरा कत्तव्य क्या है ? प्रभु ।

आश्चय तो यह है कि विश्नू को कुती ने हवा भी नही सूघने दी । वह जान जाता तो क्या न होता ? जानेगा तो क्या नहीं होगा ? सब से पहले वह मेरा ही कपाल नही फाडेगा ?

दोनो छोटे बच्चे हम तीनो की अवस्था देखकर, कुछ भी न समझकर आहत है।

स्कूल का टिफिन लेते समय, सुबह, ककी अचानक पूछ बैठी थी—रावजी को केक नही देना माजी ?

—नही ! दात भीचकर कुती बोली थी और ककी के हटते ही उसकी आखें टपटपाने लगी थी।

—रावजी कहा है पिताजी ? अभी अभी सती पूछ गयी। पद्रह नबर के वाल्ट म फसे हुए अखबार व चिट्ठिया क्या की-त्या है, कोई हममे से छू नही रहा, उसे समझ म नही आता।

पता नही, झूठ बोलते समय अपनी सतान के सामने मैं स्वय को क्या दुबल महसूस कर रहा था ?

कब तक बोला जा सकेगा यह झूठ ? उनके न होने पर दूध, अखबार, चिट्ठी पत्री सब यही आ जाता था सोलह नबर मे

हम तीनो जानते हैं कि वह अदर हैं। बच्चे सो तो कहिये, हमारे सारे ही भयकर रूप से स्वतत्र बुद्धि हैं। वह जब कभी 'राव' के साथ अक्ल वगरा जोडते तो हर बार सुन कर मुझे धक्का लगता और कुती चीखती।

घिरता अधेरा देखने बालकानी तक गया। देखा, आखें बद किय हुए मीनू आराम कुरसी पर बठी है। उलझे बिखरे बाल, चेहरे पर सूखकर निशान बनने को हो रहे आसू।

चाहा सर पर हाथ फेरू। कहू, मत रो बच्ची। मुझे रास्ता ढूढन दे उसकी ओर देखते देखते खुद पर से काबू जाता रहा। मेरी आहट पा वह हिचकिया दबाने की कोशिश कर रही थी। नही दबी। कमरे मे लौट आया। नहीं सोच पाता कहा जाऊ ?

रसोई मे झाकता हू। गस के स्टोव पर रखे दोनो पातीला के ढक्कन झाग और उफान से खडखडा रहे हैं, और प्लेटफाम की दीवाल से पीठ टेक हुए फश पर कुती बठी है—घुटनो पर कुहनिया और कुहनियो पर चेहरा टिकाये सामने वाली दीवार मे, श य मे देखती हुई

छोटे बच्चे बेकरी से सामान लेकर कब लौटे, कुछ जान नही सका। सती न हाथ झकझोरकर चिहुकाया—पिताजी। मैं सुनते ही जाने कसे चीख उठा—बच्चो ss! आवाज नही करोगे। बच्चे सहम गय।

कुती हडबडाकर उठी। नजदीक आते आते उसकी करुणापूर्ण दृष्टि देखकर बलबला उठा। पलकें नमी से गिर पडने को हुई। सोने के कमरे मे जाकर फूट पडा। बच्चो को उनके जीवन की तीसरी डाट देता देता थमा था मैं उफ। लगता है आज बात खुले बिना नही रहेगी।

विदशू क्या कहेगा? कस पेश आयेगा? जिस बेटे को मैंने सपूर्ण पतृक एकाग्रता से खरा जवान बनाया है, जिसे विद्रोह और अनुभूति परक प्रतिकार के पाठ मने अपने थपथपो और चुबनो द्वारा सिखाये हैं, वह क्या प्रतिक्रिया करेगा? मैंटल पीस से गडा उठाकर मेरे माथे पर दे मारेगा? बडी बहन के मुह पर अधा धुध थूकने लगेगा? घर छोडकर चला जायेगा? या मिस्टर राव को कत्ल कर देगा।

क्या होगा?

कब तक राव इसी तरह बद रहेगे? कब तक मीनू दफ्तर न जाने की सगति बैठाती रहेगी? कब तक म नकली स्थिरता ओढ़े रहकर रास्ता निकल आने की उम्मीद करता रहूगा? सगाई नही हुई, पर उस नौजवान की रीझभरी दुनिया पर मात्र एक वाक्य से कैसे तुषारापात कर सकूगा, जसने मीनू को सपनो मे बसा लिया है? इसने भी तो उसके लिए 'हा' कह दी थी। मेरी निभ जायेगी, पर कुती भी झेल सकेगी क्या?

राव ने विश्वासघात किया। दारुण अनाचार किया। लेकिन मेरी अपनी सूझ-बूझ की धनी, तेज तर्रार बेटी ने ऐसा क्यो किया? उसके पिता के पिता की उम्र का बहत्तर साल का राव

ओह बेटी! मेरी पीठ पर तुमने लात क्यो मारी?

मिस्टर राव। कहा पाच साल पहले के राव, जो अपनी दीवानगी भरी दौड भाग से चकित करते थे, और कहा आज के राव, जो मेरा चैन निगलकर बेहाल पडे हैं।

★

—ग्रौर मेरे बारे मे क्या खयाल है ? मेरी ग्रोर देख कर रहस्यभरी मुसकराकर से उन्होने पूछा था ।

—५० ग्रौर ५५ के बीच ? मैं झूठ जान-बूझकर बोला था ।

वह खिलखिला कर हसे, बोले—मुझे बारह साल हो गये हैं रिटायर हुए, मिस्टर धवन !

म हक्का बक्का रह गया था ।

तत्काल विचार उठा कि पसठ पार जाकर भी किस मुश्किल क अधीन राव दौड भाग के फेर म पडे हुए हैं । केवल तष्णा ? पर मन ने गवाही नही दी । उनकी मुसकान ग्रौर चुस्ती फुरत का ग्रथ मेरे निकट बदल गया। वह जब भी हसते, मुझे लगता किसी चीज को झटकने की कोशिश कर रह हैं । जब भी मुसकराते, लगता कोई चीज उनकी समझ मे नही ग्रा रही, या कुछ काबू से बाहर हुग्रा जा रहा है । सोला हैट ग्रौर सफेद कमीज पतलून पर इकहरी गाठ की टाई, पैन, स्पक्स क्लीनर, रूमाल यू डि कोलोन, कागजात, एजेंटस गाईड सब कुछ हमेशा तैयार । चिलचिलाती धूप को भूलकर वह फुटपाथ पर खडे हो जाते थे, एक घुटने पर दूसरा टखना टिका लेते । एक हाथ से पसीना पोछते हुए दूसरे हाथ से नोट्स लेने लग जाते थे, ग्रौर जब क्लायट 'ग्रो के' कहकर ग्रागे बढ जाता तो बडी देर तक ग्रपने ग्रजर पजर ड्रेस ग्रौर फोलियो को दुरुस्त करते रह जाते थे । ग्रक्सर ग्रगला ठिकाना उनके दिमाग म तयार ही होता था । ग्रौर वह तेजी से ग्रागे बढ जाते थे । मेरे दफ्तर ग्राते थे तो टेलीफोन ग्रापरेटर तक के कबिन म झाक कर'हलो ! हाउ ग्रार यू !' वगैरह कर जाते थे । ग्रापरेटर लडकिया ग्रकसर बदलती रहती थीं, ग्रौर वह हर बार नये सिरे से उन्हें जीवन-बीम की ग्रोर रुझाते ।

एक बार, एक ग्रापरेटर, मधुमति बलसेकर, डेढ साल तक टिकी रही थी । दीवार कलेंडर पर उसने, उनसे ठिठोली करने की गरज से, लाल रोशनाई से दायरे खीच दिये थे । यानी एक साल मे बाकायदा ग्रठत्तर बार उन्होने उसस इसरार किया । तब एक दिन उसने शालीनतापूवक उन्हें एक कप चाय पेश की थी । राव गभीर हो गये । बोले—नो, थक्यू !

वलसेकर ने हैरान होकर पूछा—क्या ? आप नही पीते !

—मैं बाद मे लूगा !

बलसेकर ने उनके भीतर कुछ उमगता मचलता भाप लिया था, जो उनके चश्मे के पीछे की बेचमक आखो में झलक भी आया था। जिद करके बोली—आप अभी, और इसी वक्त लीजिये। नही तो मुझसे कभी बात मत कीजियेगा।

उन्हें चाय पीनी पडी। लेकिन प्लेट उनके हाथ मे कापती रही और वह प्याला खाली करने के बाद सन्न से खामोश रह गये। उठते उठते एक रुपये का नोट उनके हाथ मे झलका। बलसेकर भन्नाकर बोली—यह क्या है, मिस्टर राव !

—नाराज मत होओ, न ही कुमारी ! राव का गला रुध गया। तुमने मुझे विचलित कर दिया है। तुम मुझे मेरी पोतियो की याद दिला रही हो। मैंने दस साल से उन्हें नही देखा। वे भी तुम्हारी तरह दफ्तर जाती हैं समझने की कोशिश करो बुरा न मानो !

—लेकिन चाय तो मुफ्त मिलती है, आफिस मे, मिस्टर राव !

उनकी आखें फिर झलझलायीं। यकायक उठ खडे हुए।

—ओ के तो फिर कभी !

उसके बाद, मुझे पता चला वह नियमपूर्वक उन्हें कुछ पत देती है। कुछसे लचब्रेक मे मिलवाती है। राव अपने ढगसे सबको अटेंड करते है।

—राव साहब की आनरेरी सेक्रेटरी हो गयी है तू, मधु। उसकी एक कलीग ने उसे एक दिन लताडा।

बलसेकर मुसकरायी—हा ! आनरेरी, एक आनरेबल आदमी की।

जहा जहा वह नौकरी बदलती, राव का टेलिफोन नबर भी बदल जाता अपने विजीटिंग कार्ड के पीछे वह लिखते थे, फोन केयर ऑफ मिस बलसेकर

★

मो उन पाच सालो से पहले भी उनसे मिलना होता था, पर

दूसरे पर चकित नही हुए थे ।

जब मैं उनकी उम्र पर चकित हुआ तो वह इस बात पर चकित हुए कि आज तक हमारी मुलाकात कसे नही हुई।

—एसा अस्वाभाविक नही है, मिस्टर राव, मैंन कहा।

—हा सा तो नही है। वह हैरान हुए। मैंने आपको कई बार देखा, पर कभी नही सोच सका कि आप ही बोनस लिमिटेड म डिप्टी मैनेजर हैं। इतने सिपल हैं आप !

—बस कीजिये, मिस्टर राव। मैंन परिहास किया—मैं पहले से ही इइयोड हू। मेरी कार भी इइयोड है।

उनकी मुसकान हलकी पड गयी।

मैं इस बात पर भी चकित हुआ कि दस सालो मे मैं प्रभास के पलट नबर सोलह मे रह रहा था, पर पहली बार मुझे पता चला था कि सामने वाला, पद्रह नबर, उन मिस्टर करुणाकर राव की सपत्ति नही थी जो इतने दिन तक वहा रहत थे और जिनसे मेरे परिवार की घनिष्ठता नही थी। वह इन राव की सपत्ति थी जो उनके पिता थे। मैं नही समझ सका कि इतने वर्षों मे पिता अपने पुत्र के आसपास क्यो नही दिखा कभी।

अपने मित्र, इनके बेटे, राव की वे भगिमाए मुझे याद आयी जो पिता का जिक्र उठने पर उसके चेहरे पर उभरती थी। एक बार पिता के बारे मे उसने स्पष्ट कह दिया था—मैं समझता हू, अब वह हमारे मतलब के नही है।

मैं अकसर स्टेशन तक, फोट तक या कही बीच तक उन्हे लिफ्ट दिया करता था, इसी से वह मुझसे कुछ छिपा नही सके। सफर के दौरान रोजाना बातचीत होती। सब जानकर मैं उनके प्रति अभिभूत हुए बिना नही रह सका।

—मैं आऊटकास्ट हू, धवन। बीवी-बच्चो के लिए असहनीय। मुझे इतना ही सतोष है कि वे मेरे लिए असहनीय नही थे, न हैं। रिटायर होन से पहले ही मैंन उन्हे बसा दिया था, इससे अब उनके सामने शरमाता नही। रिटायर होन से पहले ही अलग रहन लगा था। पाच थे। सब खुश हैं अपने

कहीं न-कहीं जायेंगे ही

नुक्ते दे देकर उन्होंने समझाया। मीनू की शादी में कुछ न कुछ गंवाना ही पड़ेगा। फिर फ्लैट खरीदने के बाद कुछ अपनी जेब में अगर नहीं रखूंगा तो धोखा खाऊंगा, जैसे वह खा रहे थे, आज तक। विश्नू का अब 'एजुकेशन' के लिए तो कुछ नहीं मिल सकेगा, पर 'शादी मकान' पर या 'बिजनेस' पर कार्पोरेशन से जरूर कुछ न कुछ मिल जायेगा। कर्ज और सस्ते को भी मिल सकेगा। नहीं तो धवन, तुम्हारी कमर कभी भी टूट सकती है। रिटायरमेन्ट के बाद की बात मत सोचो। राजनीति इलास्ट है, पता नहीं, कब सरकार कोई कानून बना दे। तुम समझे ?

मैं समझा था। मैंने अमल भी किया था। उन्हें देखकर मैं मान नहीं सकता था कि मेरी वृद्धावस्था निरापद होगी। मरूंगा तो भी सब कुछ बच्चों को ही मिलेगा।

मैंने एक बार उनका घर जगह बदलने की सोची थी। चूंकि दो कमरे कम थे।

—तुम लोगों को अलग स्थान की जरूरत पड़ती है क्या ? कुत्ती की ओर सकते था।

—हम वह मैनेज कर लेते हैं, राव साहब। मैं बहुत झेंप गया था।

—तो फिर खर्चा क्या बढ़ाना चाहते हो ?

—विश्नू को एक अलग कमरा देना चाहता हूं। अच्छा नहीं लगता, उसे बहुत मेहनत करनी पड़ती है। आई आई टी

—हुश ! उन्होंने टोक दिया। ऐसा न करना उसे होस्टल में डाल दो।

—क्या डालूं ? मेरा एक ही बेटा है मिस्टर राव। मैंने किंचित उखड़ कर कहा—दूर हो गया तो मन भर उदास रहने लगेगा

मुझे दोबारा टोककर बोले—देखो, अब तुम्हें उससे प्यार करते समय फिजूलखर्ची नहीं संयम और नीति से काम लेना चाहिये। इतना सा दूर रखोगे तो न सिर्फ उस घर की सही कीमत पता चलेगी, बल्कि बाहर की मुश्किलें भी जान लेगा। एकदम मंझ जायगा।

उन्होंने एसे ऐसे तर्क दिये कि मैं कायल हो गया कि विश्नू के लिए होस्टल ही ठीक था। और मैं आज, सदा से ज्यादा सूना हूं, उनकी बात

मारकर। विशू के बहुमुखी विकास, उसम पनपते प्रौढता और आत्मनिभरता के लक्षण देखकर—सोचता हू, तब उनकी बात न मानता तो अपने बेटे के साथ ही अन्याय करता।

★

मिस्टर राव की वजह से ही मैं कई एक दुविधाओ से भी छुटकारा पा गया था।

मैं परेशान था, इसी मीनू को लेकर।

मुखर लडकी नवें दसवें म आते आते उलझने लगी थी। कुती को लुक छिपकर निगरानी करनी पडती थी। मेरी सास टगी रहती थी। पर कोई कुछ नही कर पाता था नवें म वह महीनो तक स्कूल से दो घटे देरी से लौटती थी। सुबह घन्टे पहल निकलने के बहाने ईजाद करती थी। दसवें म एक पारसी लडका खुसरो नाम था उसका, घर तक चला आता था। मन मसोसकर कुती को उसकी खातिरदारी करनी पडती थी। इम्तहानो से महीना भर पहले मैंने खुद उसे किसी गुजराती लडके के साथ न्यू एम्पायर के लोअर स्टाल्स म घुसते देख लिया था। घर म छिप छिपकर वह किसी को फोन करती थी। कई बार मैंने उसके उस की कालें रिसीव की थी। एक खास समय होता था, वह फोन के पास से हिलती ही नही थी। कालेज म वह नाटको म भाग लेने लगी थी रिहर्सला स लौटती बार मुझे ही पिक अप करना पडता था, मैं चौकन्ना होने के सिवा कुछ नही कर पाता था। मेकअप के प्रति उसका असाधारण रुझान मुझे चिंतित किये रहता था। वह सकेंड इयर म थी तो एक-दो बार मैं अकस्मात जल्दी लौट आया था। दोनो बार विशू का सरदार दोस्त गुरचरन बठक म बठा नजर आया। तिपाई पर कॉफी की प्यालियाँ, कुती कहीं इधर-उधर, और मीनू कभी दूसरे कमरे में सोती हुई होती। बडी मुश्किल स उसे चेतावनी देने का मौका मिला। गुरचरन ने केश साफ करवा डाले। मैंने व्यग्य करते हुए कहा—लगता है वह तुम्हारे खूब अधिकार म है। मोना तो हो गया। उसे आदमी भी बना दो अब।

एकबारगी वह भय से पीली पड गयी। लगा सकट म पड गयी है। मुझे हैरत हुई, उसके चेहरे पर वैसे भाव नही थे जैसे चोरी करते पकडे जाने पर होने चाहिये थे। पीठ करके बोली—वह भी अब आप हो जायगा। जल्दी ही कोई लडकी उसे जूते मारेगी और वह आदमी बन जायगा।

मैं चकराकर रह गया। क्रोध करने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा पूछा—वह यहा किसलिए आता है ? तुम्हारा दोस्त है या बिश्नू का।

—बिश्नू का।

—और चाय तुमसे पीने आता है ?

—मैं क्या करू ? आता है तो कहता है चाय नहीं पिलाओगी ! म बना देती हू, इसलिए कि बाज बाते करते हुए उसके होठ और आखें सिकुड जाती है और मुझे वह अच्छा नही लगता।

मा ! क्या कहती है यह लडकी !

—तूने बिश्नू को बताया कि वह आता है ?

—उसे खुद बताना चाहिये, म क्या बताऊ ?

—क्यो ?

—मैं क्या खामखाह दोनो को लडाऊ ! हो सकता है वह मन से वैसा बुरा न हो, जैसा मैं समझती हू !

—तुझे बुरा लगता है ?

—हा लेकिन हो सकता है, बुरा न हो नासमझ हो !

मेरी चिंता जाती रही। कुंती को बताया। वह शायद मुझसे भी अधिक चिंतित थी। सुनकर मुसकरा दी—आसानी से फिसलने वाली लडकी तो नहीं है फिर भी ध्यान रखना पडेगा।

—सरदार न बाल क्यो कटवा दिये ?

कुंती फिर मुसकरायी और बोली—उसी ने सोचा होगा। लेकिन अच्छा हो है। वह जान गयी होगी कि सार टपकने पर मद जात म कुछ भी कराया जा सकता है !

अगले साल मैं फिर बौखला उठा। इस बार वह सर आम किसी चाल्स लाबो नामक लडके के साथ घूमने फिरने लगी थी। फ्रेंचकट दाढी म सजे उसके खूबसूरत चेहरे से कोई भी लडकी प्रभावित हो सकती थी। वह पेंटर था। कुंती ने पूछा—तेरी शादी करवा दें उसके साथ ?

वह आहत होकर चुप रह गयी। फिर मिमियायी—कोई गलत कदम नहीं उठाऊगी म मा !

—नहीं उठायगी, पर सर मे मिट्टी क्या डलवा रही है ? अपने भी, मा बाप के भी ?

वह रोन लगी। पर लोग के साथ मिलना जुलना किसी के कहन स बन्द न कर सकी।

एक दिन मैंने पाया कि मेरी बच्ची बहुत उदास है। आखा के गिद गहरे निशान है। काले-काले। चेहरा बरौनक। इनना दुखी दिखना उसने कभी भी, किसी भी कीमत पर पसद नही किया था इम्तहान हो चुके थे।

—मीनू का क्या हुआ कृती ? सुबह, नाश्ते पर मैन पत्नी स पूछा।

—विरह। मुई किसी स भी आख लडा बैठती है, बाद मे खुद भी रोती है, मुझे भी रुलाती है।

मामूली बात थी जी थोडा हलका हुआ।

सप्ताह भर बाद मुझसे पूछती है—पिताजी, मैं नौकरी कर लू ? अब पढूगी नही।

बच्चो के ऐसे सनकी स्वभाव को मैंने कभी प्रोत्साहन नही दिया। कहा—ठीक है। ढूढ लू तुझे बता दूगा।

मैंने ढूढ ली है। आप कह तो कर लू, वह अधैय स बोली। मुझे घोर आश्चय हुआ—मा से पूछा ?

—वह आपस पूछन को कहती हैं।

मैं मना नही कर सका।

—कर ले पर शादी कब करेगी ?

—आप जब कहगे, पिताजी ! हसी म कही मेरी बात पर उसकी आखें नम हाने लगी आपको बता दूगी ! जब आप जैसा कोई भी लडका मिला तो आपना बना दूगी

अथपूण वाक्य कहते कहते विस्मित हो उठी।

मैंने उसे प्यार किया और सब भुला दिया। जाने क्यो अपने बच्चो को धुनी और दबग पाकर मुझे प्रसन्नता अनुभव होती रही है। मुझे बहुत ही सतोष हुआ जब मैंने देखा कि वह मिस्टर राव म दिलचस्पी लेने लगी है। गभीर

रहती है, किताबें चुनती व पढती रहती है वह लडकपन धूमिल पडने लगा। उसमे नयी सवेदनाए पल्लवित हो रही थी।

★

हर रोज वह लौटती, 'पिताजी, यह आपके लिए लायी हू   मा इसे पहन कर देखो तो ' सती, कँकी ! इधर आओ, यह ले जाओ ! विशु यह पीस ले जा, सिलने को दे आ '

बेकरी और सब्जी की शापिंग बद हो गयी। वह लौटती बार सब ले आती। मुझे सकोच होता। उलझन होती—क्या सब उठा लाती है यह ? कहती—क्या करू ? मा तनख्वाह नही लेती। और वह रो दी।

अब वह उन टेलिफोनो को छिपाती नही थी, जिनसे मुझे उलझन होती थी। बल्कि जोर जोर से बोलती थी। शुरू शुरू मे मै उसे लौटती बार पिक अप करता था, बाद मे बोली—पिताजी, मैं ट्रेन से आ जाया करूगी। आप मत आया कीजिये !

—क्यो ? मैंने हैरानी से पूछा।

—कलीग्स एब्नामली बिहेव करते हैं।

मैं ठगा रह गया।

छुट्टी के दिन चाबी माग लेती और कार लेकर उड जाती। हर शाम साग भाजी का थैला पटककर पद्रह नबर की बेल दबा, काफी की ट्रे उठाकर राव साहब के पास जा बैठती। खाने के लिए ऐसा न कर पाती। कभी कुती कह देती—मिस्टर राव से कह क्यो नही देती कि शाम का कभी कभी इधर ही निवाला ले लिया करें !

—कैसे ले सकते है ? तीन घटे पूरे उन्हें बोतल खाली करने मे लगते है शाम को वह खिन्न होकर बोली।

कोई छुट्टी थी। हम पिक्चर देखकर देर से लौट रहे थे। जीने पर राव लडखडाते चढते मिल गये। कोई विशेष कारण नही था, लेकिन हमने सज्जन इसरार किया—भोजन हमारे साथ कीजिये !

नही माने। बोले—करके ही आ रहा हू पी खाकर !

आधे पौने घटे बाद, मेज पर बैठते ही, कुती को जाने क्या सूझी कि ..र की सब्जी कटोरे मे ली बैठक म से वह चाबी उठायी जो हमेशा हमारे

पास रहती थी, और पद्रह नबर के लैच म जा फसायी । तत्काल उसकी भयावह चीख सुनायी दी पहले मीनू लपकी, पीछे पीछे सती, ककी और मैं

तिपाई पर डबल रोटी व मारगरीन के पैकेट खुले पड़े थे, उबले हुए दो आलू कुछ टमाटर और कुछ नमक मिर्च व जैली की कुछ गिरी पड़ी शीशियां और 'सैंडविच' का दाता म दबाये मिस्टर राव सोफा पर लुढके पड़े थे । लिथड़ी हुई छुरी उनके हाथ से छिटककर तकिये का गिलाफ गदा कर रही थी । कोई भी इस दृश्य को देखकर विचलित हो सकता था ।

मैंने उन्ह झकझोरा । उ होने आख खोली, स्थिति उ होने विलब से समझी पर समझते ही शर्म से गड गये । चेहरा नीला हो गया । मैं पलट गया । तरकारी की कटोरी और पराठा धर के कुती भी चली आयी । सती कैंकी को छोडकर मीनू फिर चली गयी—अभी आती हू, आप खाना शुरू कीजिये ।

ढग से कौर नही लिये जा सके । सती-कैंकी तक रजीदा थी ।

मीनू लौटी तो इतजार म बैठी कुती पर पल्ला पडी—क्यो गयी थी माजी आप ?

—मुझे क्या पता था ? कुती अपराधिन सी बोली ।

—नही पता था कि उन्होने झूठ बोला है ? नही पता था कि जाकर नहा आये और खायेंगे भी नही ! वह आवेश म आ गयी ।

कुती ने सर झुका लिया ।

उसे डाट पडती देख मुझसे नही रहा गया । मैंने कहा—पता था तो भी क्या ? उन्होने झूठ बोला था, उन्ह आना चाहिए था खाने के लिए ।

उसकी गरदन तन गयी—पिताजी आप भी नही समझते जानबूझकर ? उनकी जगह आप होते तो आते ? आ सकते ! आपको किसी आदमी को अपने स्वाभिमान पर निभने देना चाहिए न !

मैं स्तब्ध रह गया ।

★

कुछ ही महीने हुए । इतवार की दोपहर थी । कुती छोकरियों को लेकर अपनी बहन के यहा गयी थी । मीनू और विश्नू सुबह ही कार लेकर निकल गये थे । रात को मा को लेकर ही लौटने वाले थ ।

मैं बैठा मिस्टर राव से गप्पे हाक रहा था। मैंने पीने का सुझाव रखा ता उनका चेहरा बुत गया, अनिच्छा प्रकट कर दी। आश्चय था बड़ी मुश्किल बियर के लिए राजी हो गये।

आखिर मुझ पूछना पडा—आप अच्छे ता है ?

—अब क्या अच्छा या न अच्छा ! गुजर जायगी !

—ऐस कैसे बोल रहे है आप मिस्टर राव ? मुझे झटका सा लगा—आपके मुह से ऐसा सुनना भला नही लगता।

—ठीक है लेकिन कभी कभी ऐसा महसूस ही किया जाये तो वहा म क्या हज है ? मैं अनुभव करता हू कि अब बेकार जी रहा हू। क्यों—मैंने प्राटस्ट करना चाहा।

—पहले दिल क भीतर कही 'इग्नोर्ड' फील करता था, और चिढकर सक्रिय हो जाता था। लोग मुझ बुड्ढे को घास नही डालते थ इसलिए जिद्द सवार रहती थी। अब सब मुझे जानन बुलान लगे हैं

मैं नही समझ सका।

कहने लग—शुरू शुरू म बीबी बच्चे भी ऐसा ही करत थ। मैंने जिद्द म ही उन्हे उनके उनके रास्त पहुचा दिया। फिर कुछ नही रहा। लेकिन फिर जिद्द हो गयी कि ये कम्बख्त समझते हैं कि इनके बिना जी नही सकूगा, ता फिर दौड निकला हालाकि तबीयत बहुत बागी हुई छप्पन बरस की उम्र म किसी पर यह जाहिर करते ग्लानि होती थी कि रोजी चाहिये, रोटी नही है ! पर अब किससे ठानू ध्वन ? तुम्हारे पास कुछ तो ऐसा होना चाहिये जो लडत रहने का कारण हो कुछ तो हो जिसे बदलना दरकार हो।

—इतन सालो तक क्या था आपके पास ? मैंने पूछा।

—झूठ।

—क्या ?

—झूठ था वह जोर दे कर बोले—इतने सालो तक एक जदद झूठ था मेरे पास। अब वह भी नही है। क्योकि लाग मानने लगे हैं कि मुझे उस तरह स जीने का, और अपनों म प्यार और सम्मान पाने का हक निश्चित रूप से था। उस तरह मे जिस तरह म, जिस तरह से मैं चाहता था मजा यह कि झूठ गया तो गया मेरे हाथ सच भी न लगा।

—अब कोई झूठ नही पकड सकते आप ? मैंने उनकी खिन्नता व आवेश से प्रभावित हो कर कहा।

—यानी ? वह अचानक अपनी खुशमिजाजी पर लौट आये।

—आप चाहते है नौजवानो का हक छीनू ?

मैं सिहर उठा। मुझे अपना जीवन भी व्यर्थ लगने लगा। मेरी आखें मुदी जा रही थी जब उन्होंने कहा—आप जिंदगी भर हजार बातो पर गुस्सा करते रह सकते है लेकिन मरते वक्त न गुस्से मे काम चला सकते है, न हजार बातो के फेर मे पडे रह सकते है। आप थोडा चैन चाहते है और चैन मिल जाये तो आप शान से मरते है, नही तो अनिच्छापूर्वक।

मेरा मन उनके प्रति अपरिमित अपरिलक्षित श्रद्धा और स्नेह से भर गया। मुझे लगा कि उनसे सहानुभूति करके मैं आज तक उनसे क्षुद्रता से पेश आता रहा हू। शौर्य हृदय और मस्तिष्क मे पडा रहता है और मेरे जैसे लोग उसे आचरण और आदर्शो मे ढूढते रहते है।

उस सध्या सोकर उठा तो सब आ गये थे।

मीनू एक पैकेट सा ले कर पद्रह नबर मे जाने लगी तो पूछा—कहा यू भाग रही है कपडे तो बदल ले !

—एक मिनट बस ! हाथ का पकेट दिखाते हुए बोली—दवाइया दे दू राव साहब को !

—क्या हुआ उन्हे ? मैं चौका।

—मुझे लगता है अल्सर मैच्योर हो गये है। वह सजल हो गयी।—आप उन्हे डाक्टर को दिखाने पर तैयार कर लीजिये न पिताजी !

मुझे बेमाख्ता गोपट्टर की याद आयी—पीने के प्रति उनकी अरुचि या मजबूरी !

उनकी तबीयत सचमुच काफी गडबड थी। डाक्टर ने पूरी जाच के बाद चेतावनी दी—सभल जाइये, आपने सुना है न एक देवदास था। पता है, उसे क्या हो गया था ?

इतने मनहूस माहौल को उन्होंने फूक से उडा दिया—जानता हू। डाक्टर के कान के पास मुह ले जाकर बोले—इश्क हुआ था। लेकिन यह इश्क से पहले की स्टेज है। मैं देवदास से कई पीढी ताजा और जवान मरीज हू, डाक्टर !

उसके जाने के बाद वाले—मने जो चुना था टस्ट के मुताबिक, वही सही सर्वोत्तम निकला। सुना ' मिच मसाला फ्राई मत दे। मारीन और स्लाइस दुरुस्त ?

उनकी हसी धीरे धीरे सक्षिप्त हो गयी और मुझे देखती आख जनायाम छत पर टिकवर स्थिर हो गयी। बहुत देर म उन्होंने कहा—मुझे चगा देखकर तुम्हे क्या मिलता है धवन ? काश तुम करुणाकर होते सच तो यह है कि तुम्हारे तुम लोगो के यह मज इतना सब करने से अच्छा लगता है पर तसल्ली नही होती। करुणाकर, उसकी मा, विद्या सरस्वती, वेणु बदन पद्मा रवींद्रन वगरह यह सब करते तो मैं कब का मर चुकना पसन्द करता। तुम्हारे सबके करने से रुकावट पैदा होती है मैं फसता चला जाता हू। तुम्ह मरते को खींच लाने की विधि कैसे मालूम पडी। धवन ? यह सब बद करो तुम ! तमाशा मत बनाओ ! देखता हू रोम नीचा दिखाते है मुझे। दफा हो जाओ खबरदार जो करुणाकर को या उसकी मा को खबर की तो

वह सन्निपात म उतर गये थे।

वह सुविधापूवक हिन्दी बोलने लगे थे। नियम आडे बदन गये थे। कुती सती कभी को कह देती कि वह खुद कपडे बदले मुझे अकेला छोड जाती पर सुबह काफी और नाश्ता राव साहब को अपने हाथो से लेकर और बगाकर आती। कभी-कभार मैं साथ जा बठता। एक आध बार अस्फुट स्वर म वह उठे—बेटी, तू इतनी अच्छी है कि म दुखी होने लगता हू। क्या चिंता है तुझे मेरी ? गिरिजा और रुक्मिणी के साथ कुछ न आया।

★

कहा क्या गलत हो गया या क्या ज्यादा हो गया क्या समझू अब ? जी होता है छलाग लगा दू, इसी तिमजिले म।

मारते मारते धाडबदर रोड तक खदेड आऊ तुम्हे मिस्टर हरामी राव

★

—रात फिर आखो म उतार दी। कुती उधर पडी रही। भोर होते ही उठी तो फिर नही दिखी।

दफ्तर का तो बहाना ही था। कहा भागना चाहता था, निकल गया।

पैदल ही चल पड़ा। स्टेशन तक जाकर बस की लाइन में खड़ा हो गया। दफ्तर की बिल्डिंग दिखते ही उठते कदम रुकने लगे। कैबिन में घुसा, पर माथा ठोक-ठोककर कुछ ही देर में बाहर निकल आया। वापसी की बस में जा बैठा। हाजी अली में आकर बैठे रहना दूभर हो गया। उतर कर समदर के साथ-साथ चलने लगा। शिवसागर की झोपड़पट्टी से भभके उठ उठकर चले आ रहे थे। उनका पीछा करते करते लकड़ी की स्याह बेंच पर टिककर कई भभके गले उतारकर इत्मीनान से योजना बनाने लगा।

सूरज मेरे सामने पानी में उतरा था। झुटपुटे के बाद अंधेरा आया। फिर किसी को नहीं देखा। उसी जगह को तलाश कर रहा था जहां सूरज डूबकर गायब हो गया था। कंधे पर दुलार करता हाथ घूमा। कोई मीठे, सोंधे स्वर में पुकारा—पिताजी !

सिहरन हुई। लाल आंखें और सूखा जर्द मुंह लिये विशू खड़ा था। कार पर सड़क पर थी।

—घर से आया है ?

—जी !

सर के ऊपर की हरी पीली रोशनी की ट्यूब की उपस्थिति के प्रति सजग होकर मैंने कहा—बैठ जा।

वह बैठ गया। उसके कंधे पर बांह रखी तो बिखराव थोड़ा संभला। सोच लौटा। हठात उसका माथा चूम लिया।

—पिताजी ! वह मिटमिटा उठा। मेरी पलक छूकर अपनी गीली अंगुली दिखाते हुए बोला—यह क्या ?

—तो क्या करूं ? अपना स्वर मुझे पराया लगा।

—सब सुन लिया है मैंने, घर चलिये पप्पा।

इतने सहज होकर सारी बात कहने के उसके अंदाज पर मैं स्तब्ध रह गया। विरोध में एकदम असमर्थ होकर उठ गया। बगल में सहारा बना वह साथ-साथ चला। होले होले अनायास मुझ पर जम आया कि मैं लगभग वृद्ध हूं, इसलिए कि मेरे बच्चे जवान हैं और पूरे पक्के जहर वाले हैं।

मौन तूने कमर ही तोड़ डाली मेरी क्या किया बेटी ?

घर की तरफ लौटते हुए, बीच बीच में, विशू और मेरी निगाहें आपस में टकराती रहीं। वह मुझे स्थिर रहकर घूरने लगता, दरवाजे में घुसते ही कुती पहलू में सिमट आयी और फफक उठी। विशू मिनट भर खड़ा रहकर सामने के कमरे में चला गया जिसमें मीनू के होने के चिह्न थे। दरवाजे में घुसते ही उसने परदा खिसका दिया। मुझे, लगा कि हम दोनों और उन दोनों के बीच एक सीमा सी चली आयी है, जिसके इधर हम दोनों अकेले थे।

चाय वाली प्याली में से उड़ती भाप को घूरता मैं पड़ा रहा और एक पर एक फोन घनघनाते रहे। विशू सबको बताता रहा हां पिताजी आ गये हैं।

सती और कवी चुप आकर बैठ गयीं। बड़ी-बड़ी कवी बिसूरने लगी। उसकी ओर देखा तो जबरदस्ती गोद में चढ़ आयी और चिल्लाकर रोने लगी। थोड़ा अविरक्त होने की कोशिश की, पूछा—दीदी कहां है तेरी ?

सुनकर सती भाग गयी। सुना, कह रही थी—दीदी, ओ दीदी ! सुनती हो ? पिताजी बुलाते हैं ! वह शायद झिंझोड़ रही थी उसे।

घबड़ाकर खोपड़ी सोफे से टिका दी और नजर सीलिंग पर रख दी।

फिर सिसकियां ? क्या है, बाबा ? क्या है ? परों पर स्पर्श मीनू पैर अपने नीचे दाबे गलीचे पर गिरी हुई थी।

सारी अशांति माथे पर चढ़कर चिनचिनाहट करने लगी। तबियत में भभक कर चीख पड़ा—हट जा दुष्टा दूर हो जा नजर से !

पैर समेट लिये। तब भी पड़ी रही। बेगैरत लड़की !

—दूर हो जा, कहता हूं ! पूरी ताकत जुटाकर मैं बोला। पीठ पर मारने को उठाई हुई लात जाम हो गयी और सिर पटाख से सोफे के हत्थे पर जा गिरा।

बच्चे को टरकर भागते देखा।

—होश में आओ, सूरज प्रसाद ! पागल क्या हुए जा रहे हो !

राव के बच्चे, निकल तो बाहर ! दांत ठस्स हो गये। चेतना विलुप्त होने लगी।

चांद फीका पड़कर छिपा जा रहा था। आराम कुरसी पर करवट बदलते ही रुदन की सी आवाज निकलती थी। अंधेरे में लच लाल सी आंखों से

देखने की मिथ्या कोशिश कर रहा था। सिटकनी उठने की ध्वनि हुई और किसी खिड़की के पट खुल गये फिर क्रोध चढ़ने लगा।

सिटकनी उठने की दूसरी, मद्धिम, डरी सी ध्वनि हुई। दरवाजा खुला। पसीने की बदबू को लेकर हवा का एक झोंका सरसराया। साथ ही कुछ आहटें बिखर गयी। आंख झपकते ही उस बालकनी के उत्तरी कोने पर आधा शरीर और पूरी खोपड़ी दिखी चमकती चिकनी सिलहटी जैसी। नंगे पांव फर्श पर घिसटने से तणनाद सा सुनता रहा

—मिस्टर राव इधर सुनो। न रहकर अचानक पुकार उठा, पर स्वर थम कर विफल हो गया।

तत्क्षण घिसटते पैरों का तणनाद थम गया और क्षण भर बाद ही बिस्तर पर गिरने और हांफने की आवाजें उभरी।

सभ्रम में खड़ा रहा एक मिनट दो मिनट

—जाओ। जाओ।। राव की भयाकुल दबी हुई चीख थी।

—होश को विदा मत करिये। हलका मद्धम स्वर मीनू का था।

रक्त में एक अंतिम उफान सा आया और फिर सब ठंडा अवसन्न पड़ने लगा।

उलटे पैरों बैठक में लौट आया।

★

गलियारे से दरवाजा खुलने की चरमराहट हुई। देखता रहा। मीनू शायद देहरी में ही स्तब्ध खड़ी रह गयी। कपाट, धड़ाम से बंद हुए और वह सधे स्थिर कदमों से चलती बैठक में चलकर अदृश्य हो गयी।

विवशता ने नमस्कार डाला। पलकें भारी होकर रिसने लगी बाहर की भोर छू तक नहीं रही थी।

सिमटी हुई आहट सुनकर देखा मीनू थी। मन मुखड़े, सप्ताह भर के उलझे केशों और सजल नेत्रों के साथ।

—पिताजी

देखता रह गया।

—उन्हें मेरी बहुत जरूरत है।

और कुछ बालू कि उसने गोद म तार पटक दिया । पूरा घर उसकी मिम क्रिया से काप उठा ।

—आप इसीलिए नाराज है न पिताजी कि वह मरे लिए सञ्ज नही लगते ? मरे कधे स लगी वह कह रही थी ।

—अयोग्य भी लगते है ।

—प्यार के अयाग्य ?

—समझन की काशिश करो बटी ! मुझे उनस अब भी हमदर्दी है

—जा उन्ह चाहिये वह न दकर उन से महज हमदर्दी क्या दिखाया जाय ? एसा क्या करत हैं आप हम लोग ? वह फिर कडवाहट स भरन लगी।

—तुम भावुक हा रही हा बट काबू रखने हुए मैंने कहा—यह एक अशो भन और अनतिक स्थिति होगी हम सबके लिए और उनके लिए भी ! तुम जानती हो शायद तुम्ह अनुभव भी होगा यह सबध सिर्फ चाहन के बल पर नहा चल सकत ! वह तुम्हारा करेंग क्या ? या तुम उनका क्या करोगी ? चाहना एक बात है

मैं साफ साफ नहीं कह पा रहा था पर वह शायद समझ रही थी ।

कधे पर टिकी थोडी देर तक शात रही । मैं पीठ दुलारने लगा ता बाह से मरी गरदन घेरकर हलके-हलके सुबकने लगी ।

—पिता जी मैं सच या झूठ नहीं बता सकता । पर आज वह मुझे वैसा ही चाहते ह जसा पचास साल पहल किसी को चाह सकत थे ! मैं भी

—तुम जानती हो, वह कभी भी ससार त्याग सकत ह । म भरसक सयत रहा ।

—और इसीलिए उन्ह इच्छित रूप स जीने और मुझे पाने का अधिकार नही रहता ?

—चुप रहा ! मैं चिडचिडा पडा । मेरे खयाल स तुम्ह बताने की कोई जरूरत नहीं कि तुम्ह चाहना और प्यार करना एक बात है, और तुम्हे पाना दूसरी ! मुझे यह सब अनतिक लगा रहा है ।

—पिताजी, सारी नतिकता सबध पनपने और स्वीकारने तक थी । अब ह म स्वीकारन से बडी कोई अनतिकता नही हा सकती ।

—तुझे लज्जा भी नही आती ? मैं आश्चय व क्षोभ स भर उठा।

—आती है मगर इमलिए नही कि व मेरी कामना करते हैं। इमलिए, कि इतने उत्कठित हृदय का सब लोग इतने सालो तक तिरस्कार करत रह है मैं उन साला मे अजनमी थी पिताजी हम दोनो एक दूसरे क लिये कुछ भी करेंगे। एक दूसरे का चाहन के लिए कोई भी कीमत द देंगे

वह कहती रही। मै लाचार क्रोध से उसकी झुकी नजरो वाली मुखमुद्रा दखता रहा।

पाखडी, खूसट बुड्ढे लुच्चे राव! बौखलाकर मैं पेंच पर पेंच खाने लगा।

सब मेरे सामन होता रहा डाक्टर आया। गया। त्रिशू ट्यूटोरियल्स लेन चला गया। मीनू ने भी आखिर धज सवार ली और बेकरी और सब्जी के लिए चली गयी। सूप भी मेरे सामने ही बना और पद्रह नबर म पहुच गया। कुनी की फफकिया कभी भी सुनायी पड जाती।

★

हतप्रभ बैठा था, कुनी आकर चुपचाप खडी हो गयी

—बोला!

—कुछ होता नही तुमसे ? वह याचना भरे स्वर म बोली।

—तुमसे कुछ होता है ? मैं गुरा पडा।

वह वही बैठ गयी।

हारकर तय किया कि राव को ही जा समझाऊ। पैरो पडू। कहू, बाबा जाओ यहा से कुछ ले लिवाकर ही जाओ!

ताने म चाबी फ्मान स पहले वल दवायी।

बूढा आदमी पलग पर चित पडा सीलिंग को घूरे जा रहा था।

—आओ घनन! वह बोला।

—बैठो! उसन कहा पर मैं खडा रहा। तबीयत चाही, अभी गला घोट दू!

—तबीयत कैसी है ? मुझे अपने स्वर और शब्दो की वजह से चौंक उठना पडा।

—जानता हू, मुझे लगा वह मुसकरा रहा है, तुम मन म कुछ ले कर आय हो सिफ तबीयत पूछने नही ।

—सुनो, धवन तुम मुझे क्षमा नही कराग पर मुझे तुमस माफी मागनी भी नही है

—हू बीच म ही राक दने की इच्छा क बावजूद म नही बाल सका। वह बोले जा रहा था।

—मुझ यह कबूल करने म घबराहट ता हा रही है कि तुम्हारी बटी का इस तरह चाहता हू जिस तरह स अपनी पत्नी को कभी नही चाह सका पर तुम लागो को भी वसे ही चाहता रहा हू जिस तरह स अपने बच्चा को चाहन की काशिश की थी धवन मैं उसके लिए तुमस सबध तोड सकता हू, पर तुम्हारे लिए उससे नही। एक या दाना सबध टूट जान पर भी देखने म आयगा कि रगवधन राव पहल की तरह ही चलता फिरता है और पता नही कब छुट्टी करगा मन तुमस कहा था कि जिदगी भर कट सकती है पर मरत समय एक सच जरूर मिलना चाहिय। मरा खयाल ह कि वह मुझे मिल गया

—बाकी फसला तुम करोगे, या या वही करेगी? मुझे आशा है कि इस बात को लकर तुम मुझ शर्मिंदा नही देखना चाहत। समझन की कोशिश कराग कि एमा करना मरी मजबूरी थी। जिम तरह तुम्हारा क्षमा न कर पाना मजबूरी है

मै उलट परा लौट पडा।

—और सुना, आते आते वह पीछ स बाला—मुझ यहा नहा रहना अब।

बठक म पहुचा। सास धौकन लगी थी, सर घूम रहा था। कुती बाट जोह रही थी।

★

आर सब मेरे सामन हाता रहा। शाम और सुबह गुजरता रही, कुता नाक का पानी पाछती, रोती या कुछ भी करती रही। सती कैंची डर डर इस उस कान म हाते रहे।

दिन चढा आर धूप उतरती चली आयी। न कोई नजदीक आया न किसी का बुलाया। सनी चर्की बिशू, कुती बारी बारी स झाककर लौट

गये। अत मे आचल का सरसराहट कानो तक चली आयी। मीनू की महक आयी।

—पिताजी !

—क्या है ? मीधे दखते दखत पूछा।

जवाब मे खामोशी के बजाय सुबकी सुनायी दी। कदम लौटने के बजाय आग बढ आये। कल्पना म, एकबारगो, उसके पूरे बचपन की स्मृति कौंध उठी। मणिका कणा की तरह व क्षण चमक उठे, जब मुझे उदास देखकर उसके चेहरे पर वैमात्ला आह्न भाव उभर आत थे और उसे देखकर मुझे अदर ही अदर वलवले उठने लगते थे। सती नही थी तब। रात थोडा गडबड करके सोया था। नियम से घटे भर बाद तक सोता रहा था सुबह। उसकी ताबडतोड रुलाई से आख खुली। कुती हसती हुई उसे चुप करा रही थी। पूछा, क्या हुआ ? कुती ने बताया, इस ऊपर के एक घटे म पतालीस मिनट तुम्हारे पलग के पास खडी तुम्हें चितापूर्वक दखती रही पद्रह मिनट मुझे काचती रही। आखिरी इक्वायरी के जवाब म मैंन कहा कि पिताजी की तबीयत खराब है। आसू भर के बोली दवाई कहा है ? कहा अभी नहीं है, ता मुझे मारती मारती रो रही थी। सभालो लाडली को ! मैंन कहा, आओ, मैं ठीक हू। सुनते ही चुप हो गयी। मा के चेहरे पर चाटा मारकर तुरत फुरत आसू पाछे और उसकी गोद से उतरकर मुझस आ लिपटी—ताजी दर तक सोना ता बान लिया कीजिये। नही तो हमे कसा तो लगता है

लेकिन, अब वह सब हाथ स निकल चुका था सामने आकर खडी हा गयी। नजर उठाकर देखन को मन नही किया।

—पिताजी ऽऽ ! और अगले ही क्षण पैरो पर गिर पडी।

—पिताजी, आप मुझे दड भी नही द सकते ? हाथ अपन गालो पर खींच कर तरसा रात की तरह रोने लगी—आप मेरा दान न कीजिय, पर त्याग तो कीजिय पिताजी। आपका इतना भी हक नही ?

अकुलाकर हाथ खीच लिया।

—चली जा ! चिल्लाने की कोशिश की।

पल भर को उसका रोना, भीगा चेहरा उठा, टूटी हुई वदनाविदग्ध दृष्टि

वही, और वह धीर स उठकर चली गयी। बालकनी म मेर साथ शब्द बच रह गये ताजो, दर तक सोना हो तो हमे बोल दिया कीजिये पिताजी आपका इतना भी हक नहीं ? पिताजी

—विशू ! आमूल सिहरन हुई या घबराकर मैंने पूरे कंठ से पुकारा।

कुती भागकर आयी।

—क्या हुआ ? हडबडाकर बोली।

—बिशू स कहो उसे छोडकर आये।

—किसे ? वह झुंझलायी विशू तो हास्टल गया !

—तो तू छोड आ, दुष्टा को !

—पागल हो गये हो ! वह मकान दखने गयी है अभी आ जायगी !

कुछ बिलंब स, सारी स्थिति समझकर ठिठका रह गया। फिर बरबस हँसी आने को हुई। चाबियों का पर्स उठाकर उसकी ओर फेंका, उससे कहलवाओ कि कार लेकर जाय ! मंझली को पुकारा—सती !

कुती उसे समझाती रही। मैं आँखें मलता रहा।

—बेटे दीदी के पीछे भाग जाओ। कहो, पिताजी कार ले जाने को कहते हैं।

ककी भी साथ म दौड गयी।

अकेली कुती बची। पास आ गयी। उसके कंधे पर हाथ रखकर उठ बैठा।

★

बाथरूम स निकला तो मीनू दिखी—मेरे लिए वार्डरोब टटोलती।

—तू यहीं है ? हैरानगी दबाते हुए मैंने पूछा।

—जी, बस हो पाच मिनट रुक गयी !

—ऐसा लगा कि उसका विरह मेरे लिए जितना कठिन प्रमाणित हो रहा है, उसका थोडा बहुत शायद उसके लिए भी हो रहा है 'ताजी' के लि होते हैं, अब बच्चो के दिन आये हैं

सुख सा हुआ—साथ बैठा तो सबने थोडा थोडा नाश्ता पानी कायदे स कर लिया। सती बनी स्कूल की ड्रेस म थोडा थोडा हँसी, बिदकी, अडी तो मन

जरा सा हल्का हुआ । स्कूल बस का भापा बजा तो दानो हम तीना को बारी-बारी से पुच्च पुच्च कर के भाग गयी !

जूता के तसमे कस रहा था, तो कुनी टाई लिए खडी थी । कहने लगी—मन न लग तो चले आना !

मुसकराना ही पडा। और तेरा न लग तो दफ्तर चली आना ! और बिना ज्यादा कुछ बोले हमने एक दूसरे को समझा दिया ।

—पिताजी, मैं पहले आप को छोड दू ? फिर निकल जाऊगी ! मीनू थी।

मुह से निकल गया—ठीक है, मन ही मन दोहराकर बोला, मुझे छोडकर निकल जाना सुखी रहा बेटी !

विदा-अलविदा

मोटा मोटा सामान जा चुका था और छोटा छोटा बध रहा था। बस एक, दो या तीन दिन और, जोकि स्वत विदाई की मुलाकाता और नाश्तो और भोजनो के नाम लिखे जा चुके थे और फिर अलविदा अलविदा !

दोनो बच्चे खुश थे। दिन मे कई कई बार जूते कपडे पहनकर आसपास घूम आते—हम दिल्ली जाते हैं पापाजी, मम्मीजी हम वही रहेगे अब हमजोलियो को बडे बूढो को वे बार बार तरह तरह के लीलाप्रकरण करके यह सवाद देते। यहा तक कि आखिर रुचि भी सारे प्रत्रजन काय भरपूर रीय म निबटाने लगी। हालाकि फसला लेने के दौरान उसने प्रबल विरोध किया था मगर पूरी तरह से सारी बातें अपने मन की कर लेने के बाद भुवन मानो एक दम हार गये। वे टूटने से ज्यादा पराजय सपूण पराजय अनुभव कर रहे थे

कोई एक घटना, घटनाक्रम, व्यक्ति या समाज पक्ष जिम्मेदार नहा था। एक पूरा दौर था—आनाति का दौर—जिसने उन्हे उलीचकर एक तम किनारे पर फेंक दिया था। जहा न उनका कोई पक्षधर था न विरोधी, जहाँ न वे किसी की बात समझ पाते थे न उसका अपनी समझा पाते थे। उस अभि शप्तावस्था स उबरने के लिए जब उन्होंने प्राणपण से सघष किया था—सभझने की, समझाने की कोशिशें की थी—तो मित्रो और प्रतिपियो तक ने साथ छोड दिया था और उकताकर भनाकर पूरी तरह ऊब खोकर और कुछ कुछ

धूतता म जब उन्होंने चमत्कार लक्ष्य निर्धारित किये थे, तो सुजन दुश्मन एक स्वर म वाह वाह कर उठे थे

हर विवेकी पुरुष की भाति भुवन भी यही मानते थे कि पराजय को स्वीकारना ही सही पराजय है। अपने काम या ध्यान म मग्न आदमी को बल अथवा नीति से गिरा देना उनके कोश मे पराजय नही, पराघात और अपराध था, मगर समय के साथ साथ भुवन महसूस करने लगे थे कि ऐसे आघात से जो मरता नही, उन्हे भी लोग पराजित मान लेते हैं, फिर उनके कहने-करने का कोई अर्थ नही रहता और यही बरसो तक उनके साथ होता रहा था

★

उस साल ग्रीष्म प्रवास के बाद पहली बार व स्कूल जा रहे थे। सुबह के अभी सात भी नही बजे थे। डाक्टर कामतानाथ रोड पर पहुचे तो दूर से ही नवाब कोठी और मुसिफ बगले के बीच बरसो से उजाड, वीरान पडे चौधरी भवन की बदली सुधरी धज देखकर वे चकरा गये और साइकल पर उनका पैडल मारना धीमा हो गया। इस ओर के प्रवेशद्वार के ऊपर वाली पतली टीन की अर्धचद्राकार पाटी पर पीले हरूफो म लिखा था—'डॉ तुली'ज जनरल क्लिनिक'; और नीचे, दायें दरवाजे पर बडा सा नामपट था—डा (कैप्टेन) एम एस तुली, एम बी बी एम (लाहौर), एम डी (लदन), वगैरा वगरा, गरदन। मोडे मोडे न चारदीवारी लाघ गय तो दूसरे द्वार पर वैसी ही टीन की अर्धचद्राकार पाटी पर लिखा था—'द डिवाइन होम । उसके नीचे, दरवाजे पर लगे नामपट पर ब्यौर थ—द डिवाइन होम ऑव् अवर लिटल एजिल्स, फुलटाइम इग्लिश मीडियम क्लासेज फार चिल्डेन अडरटेकन, प्राइवेट, प्रिंसिपल मिसेज मोनिका तुली एम ए बी ए (आनस), फोन २६८२/२७६३।

भुवन साइकल पर पैडल मारना करीब-करीब भूल गये और आश्चर्य से नामपट के ब्यौरे दखत-दखत बेसाख्ता दरवाजे के पीछे किसी हलचल को सुनने की उपेक्षा करने लग। तभी द्वार के चहदरवाजे से एक परिधान झलका और हला कहती हुई एक साक्षात सौंदर्य स्त्री सामने आ खडी हुई—गुड मॉर्निंग, म आइ हल्प यू ? खूब कायदे की भूषा, सुरुचिपूर्वक जूडे म गुथ अत्यलकृत केश और चित्ताकर्षक सौम्य मुसकान दतो धवल दतपक्तिया

—नो, थक्स ! और बौखलाकर भुवन म बस पडने ही दयात बना। एक

चक्कर घूमकर, बरबस उन्होंने पीछे देखा तो वह मुसकान प्राय खिलखिलाहट मे बदल गयी—बाय ! महिला की गोरी सुडौल बाह और हथेली हवा मे लहराये।

कई गज आगे जाकर उन्होंने फिर देखा। बाहु फिर हवा मे लहरा उठी।

तीन चार घंटे बाद स्कूल मे ही उस महिला का परिचय मिल गया।

मैनेजर के कार्यालय से डिग्री कालेज का सिपाही बहादुर एक गश्ती चिट्ठी लेकर आया। दस्तखतो के लिए पेन पकडकर इबारत पर झुके हुए थे कि बहादुर की खिलखिलाहट सुनकर उन्होंने रोष से घूरा।

—खिक खिक खिक बहादुर बगल मे मुह छिपा रहा था।

—क्या है ?

—क्या बताऊ, हेडमास्साब ! आप देख ले तो आप भी खिक खिक खिक

भुवन ने गुस्से मे ताका—बदतमीजी नही !

बहादुर बहुत सीधा और बहुत सरल था। कान छूकर बोला—नही हेडमास्साब, बताऊ एक हीराइन आयी है इधर कसराबाद मे। पिंसिपल बनके खिकखिक ! बोलू, बालक ने बालक का नाम, और बन गयी पिंसिपल। पाटिया लगा दिया उधर और बन गयी कह कि इग्लिश इस्कूल खोली है। मैं सोचा, तो ठीक है। कहू हमारे इधर तो हाइस्कूल वालेक भी हेडमास और तुम कच्ची पक्की के बिगर भी पिंसिपल इग्लिश है इसलिए। खिक खिक खिक

भुवन को कौतुक हुआ—तुम्हे कहा से खबर लगी ? कौन है वो ?

—खिक् खिक् खिक बहादुर के चेहरे पर इस बार ताजा सी सुर्खी लग गयी। बगाली हैं हेडमास्साब। विलायत पास ! इसी से स्यात पिंसिपल हो गयी होय। मरद पंजाबी बतावें डाक्टर हेडमास्साब आप देख लें तो दंग रहें हमारे यहा आयी

—तुम्हारे यहा ? भुवन चौंके ? कब ?

—एक पखवारा हुआ। बोली अपने बच्चा को उधर भेजो पढने को। हम कहा हमारा छोकरा तो जाता है हिन्दी मे। बोली छोटे बहादुर को भेजो हेडमास्साब छोटे बहादुर की मा के पास बैठ गयी। यह बात कर वह बात

कर बैठे बैठे दस चपाती बेल डाली, एक पकवान बनाना बताय गयी। खिक्-खिक्

बहादुर उस दिन अपनी बात खत्म करके किसी तरह चला गया। पर उसके बाद रोज कोई न कोई खबर नयी प्रिंसिपल, मिसेज तुली और उनके अंगरेजी स्कूल के बारे में मिलने लगी। करीब करीब राजाना क मसगवाद की गली गली घूमती, अपनी ओर से माताओं पिताओं और बच्चों को बुलाती, परिचय करती। कुछ दिन बाद डाक्टर कामतानाथ रोड का दृश्य थोड़ा बदला बदला-सा रहने लगा। सुबह भुवन स्कूल आ रहे होते तो चौधरी भवन, यानी डिप्ज़न होम के बाहर छोटे छोटे बहुत छोटे-छोटे बच्चे अपनी माताओं बड़े भाई-बहनों अथवा सरक्षकों के साथ खड़े दिखते। चहदरवाजे के पास एक साफ सुथरी आया—मरी, जिसके बारे म खबर मशहूर हो गयी कि मिसेज तुली न उसे खासतौर पर 'मगवाया' है—खड़ी रहती और एक एक बच्चे को अभिभावकों से लेकर भीतर प्रविष्ट कराती रहती।

कुछ दिनों के बाद बच्चे नीली फ्राक और सफेद ब्लाउज या सफेद कमीज और नेकर और कत्थई टाई के यूनिफार्म म दिखने लगे। और कुछ दिन बीते तो उसी यूनिफार्म म कुछ अपेक्षाकृत बड़े बच्चे भी दिखने लगे।

डेढ़ दो बजे के करीब जब व लौटते तो अक्सर चौधरी भवन का मदरसा बद हो चुका होता। कभी-कभी थोड़ा पहले लौटते तो बद दरवाजे के भीतर से बच्चों से गीत आदि गवाता एक मधुर मादक कठ गूज रहा होता, और बच्चों का कोरस उत्साह से दोहरा रहा होता—

डिंग डाग बेल
पुसी इन द वेल
हू पुट हर इन ?
लिटिल जानी ग्रीन

उधर कालेज के इक्नामिक्स लेक्चरार जोगेंद्रनाथ ने एक दिन भुवन से मसखरी की—यार मेरा बस चले तो मैं तो नर्सरी उर्फ स्कूल में सबक सीखने जाया करूं अफसोस अपने क्वारे रहने का भी है। नहीं तो बच्चों के बहाने ही उसके आसपास फटक लिया करते।

भुवन ने राय दी—नौकरी के लिए दरख्वास्त दे दो!

जोगेंद्रनाथ हसा और फिर रीझकर बोला—देख, सच कहता हूँ, तेरी वाइफ के बाद कसरावाद में खूबसूरती दूसरी बार देखने को मिली है।

भुवन मुसकरा भर दिये। रुचि के भी कसराबाद में जमकर चरचे थे। उन्हें गर्व भी हुआ मगर, उन्होंने अचानक गौर किया रुचि में ऐसी कोई गहरी बात थी कि उसके सौंदर्य पर लट्टू हो उठने वाले भी उससे बात करने, खुल बोलने का साहस नहीं कर पाते थे उस दिन वे मन ही मन रुचि और मिसेज तुली के रूप मुकाबला करते घर पहुंचे। बहुत देर तक, एकदम करीब बैठकर उसे प्यार उड़ेलती नजरों से देखते रहे और बोले—तुम्हें पता है कि नहीं रुचि! शहर में तुमसे मोरचा लेने वाली एक चीज आयी है?

रुचि ने भरपूर शरारत से पति को देखा और कहा—हां, और वह बंगाली जादूगर श्रीमान भुवनेंद्र दत्त एम. ए., रिसर्च स्कालर की मुरीद भी है।

भुवन खिलखिलाये भी और चौंके भी—यानी?

—कुछ खास तो नहीं। पर जब उसे पता चला कि वह छैला-बांका छोकरा सा दिखने वाला साइकल सवार जो उसकी गुड मार्निंग पर सरपट भाग निकला था, नित्यानंद मिशन कालेज का कोई मजनूं न होकर नित्यानंद मिशन स्कूल का हेडमास्टर है तो वह सचमुच फिदा हो गयी।

भुवन के कान दहक गये—तो तुमसे मिल चुकी है?

—मिल के बस कर देती तो मुझे चैन मिल जाता। पर लगता है वह तब तक बस नहीं करने वाली, जब तक मेरा मियां उससे इधर या उधर का सवाल तय नहीं कर लेता।

—कहां टकराती है तुमसे?

—तीन चार बार तो यहां आ चुकी है। इत्तफाकन तुम थे नहीं।

—और?

—और अक्सर शाम को मिल जाती है। जब मैं बच्चा को घुमा रही होती हूं और तुम घर में पोथों में सिर डाल बैठे होते हो और रुचि नकलें उतारने लगी हाय, रुचि, सिंगिल अगेन! मैं कहती हूं येस मिसेज तुली, जाय हैड टू, फार दिस किड इज सो फांड आॅव् वीइंग आउट! बट—व्हेर'ज योर मैन? ही इज टोण्ड विद हिज रिसर्च और लो सुनो, आह हा हा हा

यू पुअर थिंग ! डोंट टेल मी ही इज इनडिफरेंट टू यू अराउंड मिडनाइट टू ! बेशर्म कहीं की !

भुवन खुलकर हंसे—मजेदार औरत है कि नहीं ?

—ठीक है। मगर तुम्हारा इतना जिक्र करती है कि मैं कभी न कभी जल उठूंगी।

—मेरा खयाल था कि वह जरूरत से ज्यादा किसी से घुलने मिलने वाली जात नहीं है ! तुमसे कोई काम निकालना चाहती है ?

—हां ! रुचि ने फिर नकल उतारी रुचि डार्लिंग, आय'उड लव यू टू टीच चिल्ड्रेन विद मी एट द डिवाइन होम ! आय बेट यू'ल गेट डबल देन व्हाट यू गेट नाउ, विदिन मंथ्स ओनली थैंक्स, मिसेज तुली, माइ हज्बेंड वोंट लाइक द आइडिया ! ओह कम आन ! आय'ल मेक हिम टू लाइक इट हरामखोर ने एक जिन तो 'लाइक इट' कहते हुए यों अपनी छाती की तरफ आंखें मटकी कि मैं बोर हो गयी

—लेकिन वह तुम्हें पसंद करती है न ?

—लाचार होकर। बेचारी समझती थी कि हम न ह से बाहर न कान उसकी टुच्ची अंगरजी के सामने टिक सकेगा। पर बेचारी रुचि डार्लिंग

—खैर ! भुवन ने उसे टोक दिया। तुम उससे कह दो कि तुम्हें रुचि वुचि और डार्लिंग वार्लिंग कहकर न बुलाया करे।

—ए लो, वह मेरी जाय फ्रेंड हैं जा जन गय ? है तुम तो

पता नहीं कब तक यह चुहल चोचले चलते, अगर दरवाजे से चाकाती हुई आवाज न आती तो।—हलो, रुचि !

दोनों ने चौंककर उधर देखा वही स्मिनि वही अनिंद्य रूप और वेश भूषा वही खुलापन।

—हलो मिस्टर दत्त ! एट लास्ट आय मीट यू ! उसी सहजता और निस्संकोच से मिसेज मोनिका तुली ने कहा।

—ह हलो ! भुवन उसी तरह चौंकना उठे।

रुचि दोहरी होकर हंसने लगी।

*

मगर दो-तीन दिन बाद उसी तरह सुबह सुबह, चौधरी भवन के बाहर खड़ी

मिसज तुली न उन्ह हाथ हिलाकर सुप्रभात कहा और व भद्रतावश साइकल से उतर गय। दो पहचानी पहचानी सी सूरत शक्ल वाले बच्चो न उन्ह 'मास्साब नमस्त' की तो मिसज तुली न मजाक म कहा—इट सीम्स आय म गोइग टू किडनैप सार आव यार ब्वायज तो व उतन लजालू साबित न हो सके।

—क्या नाम है तुम्हारा ? उन्होंन एक बच्चे स पूछा।

—विनोद कुमार।

—कौन सी क्लास म आय ?

—दूसरा पास किया था। लडक न सर झुकाकर कहा। अभी सकेट म लडके को शायद अपनी स्थिति स सतोष नहीं था। इसलिए पूरी बात नहीं कह सका। मिसज तुली न उसके सिर पर हाथ फेरकर हौसला बढाते हुए कहा—म हैव आइ टाक गोड एट राइट आलराइट आय विल बी प्रोमोटेड।

—हैव आइ टाक लडका थोडा अटका आलराइट प्रोमोटेड। लडका अच्छा खासा शरमा गया। मिसज तुली न कहकहा लगाया और शाबाशी म उसकी पीठ थपथपाती हुई बोली—एट लीस्ट यू ट्राइड वरी वल! गुड! वरी गुड!

भुवन न मन का मलाल चहरे तक नहीं आन दिया।

उस दिन स्कूल म उन्होंन पाचवी तक के सारे रजिस्टरो की चेकिंग कर वायी हर कक्षा मे स तीन तीन चार चार विद्यार्थी गायब थ।

अगले दिन उन्होंने सूचना एकत्र की कि डिवाइन होम म कुल पतीस या छत्तीस विद्यार्थी थ। अथात अधिकाश नित्यानद मिशन स कपट या फुसलाय हुए थ और अधिकाश विद्यार्थी वहां थ जो पढने लिखने म होशियार माने जाते थे।

विसगति यह थी कि मिसज तुली दिन पर दिन रुचि के साथ ज्यादा स ज्यादा घुलती मिलती जा रही थी। शायद इसका एक कारण यह भी था कि सौदय, कुशलता और विवेक की प्रतिमूर्ति होने क साथ साथ रुचि संस्कारो और लालन पालन की दृष्टि स एक हद तक प्रगतिशील शहरी महिला थी। उड दो दशको म ढाई तीन सौ छोटी मिनी क मनपन न हर लिहाज स कसबाई चरित्र

वाले कसरावाद के अफरे पट में न कोई मिसेज तुली की महत्वाकांक्षी व उच्चता पीडित भावनाओं को समर्थन वाला था, न रुचि की एकाकी मथा को सराहन-उभारने वाला।

भुवन को प्रतीत हुआ कि मिसेज तुली आजकल पहले की तरह गली गली जाकर जिस तिस गृहिणी का अपना बच्चा डिवाइन होम में भेजने का अनुरोध नहीं करती। बल्कि, रुचि के अलावा, आजकल उनका वक्त कसरावाद की अमीर *और नीम-अमीर, टिपिकल किस्म की समाजप्रिया महिलाओं में बीतता है।* एक दिन अपराह्न के समय जब वे रुचि के साथ चाय फरमा रही थीं तो उन्होंने यों ही पूछ लिया—आजकल आपकी मिशनरी एक्टिविटी खत्म सी है, क्यों?

—खत्म नहीं है मिसेज तुली ने खिलखिलाते और थोड़ा रहस्य जताते हुए कहा। जहां होनी चाहिए थी, वहां पहुंच गयी है। मेरे दिमाग में यह साफ है कि मेरे स्कूल में वही माता पिता बच्चे भेजेंगे, जो एक तो पैसा खर्च कर सकते हैं दूसरे अपने घर पर अपने रहन सहन के जरिये बच्चे को उसकी आदतें अख्तियार करने के लिए तैयार कर सकते हैं। ऐसे लोग अपने बच्चे आज नहीं तो कल मेरे यहां भेजेंगे ही। इसके बाद कुछ लोग चाहते हैं कि उनका बच्चा उनकी गाढ़ी कमाई खर्च करके भी कुछ सीखे, कमाये। ऐसे लोग भी अपने बच्चे मेरे पास ही भेजेंगे। फिर मैं गली गली क्या प्रोपेगंडा करती फिरूं।

★

साल भर गुजरते गुजरते चीजें बहुत बदल गयी थीं। डिवाइन होम में खासी भीड़ हो गयी। यहां तक कि मिसेज तुली ने दाखिला से इनकार करना शुरू कर दिया।

—ए हेडेक एंड मिस्ट्री किड्स! माइ! वे तोबा सी करती हुई बोलीं—एट भार इन हाफ आवर दस टाइनी टाट्स!

सुबह जाते और दोपहर को लौटते समय चौधरी भवन के दरवाजे पर जब भुवन को जिन अभिभावकों की भीड़ मिलती उनमें से कई एक के चेहरे उनकी पहचान के होते कचहरी के वकील, बड़े दुकानदार कारखानेदार वगैरा। नाजीन कारें आतीं। दस बीस स्कूटर। एक सरकारी जीप भी जिसमें बच्चे की बगल में या उसका इंतजार करती एक मगरूर चेहरा अधेड़ औरत बैठी रहती। जाने किसने आते जाते खबर दी कि वह एस डी एम की बीवी है।

अगस्त के अंत में भुवन ने निष्कर्ष निकाला कि नित्यानंद का प्राइमरी विभाग अब भी खासा बड़ा है, मगर पहली और दूसरी कक्षा में जरूर बच्चे कम भरती होते हैं। जब भी तीसरी चौथी या पांचवीं का कोई विद्यार्थी इधर उधर होता—और हर हफ्ते दस दिन में ऐसे एक दो मामले होने लगे थे—तो वे बड़े खिन्न होते और व्यक्तिगत स्तर पर अपमानित महसूस करते डिग्री कालेज के प्रोफेसरों के बच्चों में से इस बार प्रायः कोई दाखिल नहीं हुआ था।

जल्दी ही एक भारी हंगामा हो गया।

एन सी सी लाजमी होने के बाद कैसराबाद विद्यार्थी सैनिक शिक्षा विभाग का क्षेत्रीय मुख्यालय बनाया गया। मुख्यालय का प्रधान एक मेजर था, जिसकी आगरा से यहां बदली हुई थी। उसने आते ही पूरा शहर सिर पर उठा लिया और चिल्ला चिल्लाकर बोला—क्या जंगली जगह है! एक भी कायदे का स्कूल नहीं! कहां फेंक दूं मैं अपने बच्चों को? और आगरा में अपने बॉस और मेरठ में कलक्टर तक को उसने अपनी भीषण समस्या से आतंकित कर दिया।

बड़ी झोंका थाकी के बाद बड़े बच्चों को किसी रिश्तेदार के संरक्षण में उसने आगरा में ही हॉस्टल में इंतजाम कर दिया, मगर छोटे को उसे साथ ही रखना था। मिसेज तुली को उसने एप्रोच किया तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया—एक तो मेरे यहां बच्चों क्या बिल्ली तक बैठाने लायक फ्लोर नहीं बचा। दूसरे नर्सरी के बच्चे इतना आगे तक निकल चुके हैं कि नये बच्चों को दिन रात पढ़ाते रहने पर भी इम्तहानों तक वह उन्हें नहीं पा सकेगा एंड दे चाइल्ड इज सो डल! उन्होंने रुचि को बताया।

भुवन हसरत से भर उठे कि मेजर एक बार उनके पास तो आये

मगर मेजर ने मिसेज तुली के रवैये को चुनौती के तौर पर लिया। एक दिन शाम को वह अपनी जीप पर सवार होकर आगरा रवाना हो गया और अपने कमांडेंट की खोपड़ी में घुस गया—और पूरे छत्तीस घंटों तक घुमाता रहा। उसके बाद आगरा लखनऊ मेरठ और दिल्ली से एक साथ कैसराबाद में फोन घनघनाने लगे। एडमिनिस्ट्रेटर के यहां एम डी एम के यहां, एम एल ए गुहनसिंह के यहां और अनेक प्रभावी नागरिकों के यहां। साथ के साथ चौरंगी भरों को दौड़े यहां तक कि नित्यानंद मिशन कालेज के प्रिंसिपल

ब्रह्मानद भटनागर और नित्यानद एजूकेशनल ट्रस्ट के प्रधान हरिप्रसाद अग्रवाल भी मिसेज तुली का समझाने लगे। डिवाइन होम की तूती बोल उठी।

मिसेज तुली थकी मादी, पर चेहरे से अत्यत सतुष्ट और तरो-ताजा सी शाम को चाय पीने चली आयी। बोली—यू नो दट बास्टड एम एल ए रुचि ! एन एक्स-आर्मीमन ही हैल्पस टु वी ! ही वेंट टु डॉक्टर एंड ओह ! क्या बहस हुई ! ए डजनफुल आव टॉप पीपल एड वन पुअर मी ! आय कुडट हैल्प बट टु सक्म !

भुवन सुनकर स्वस्थ न अनुभव कर सके बृहस्पतिवार की सुबह मेजर पूरी वर्दी मे सपत्नीक अपने 'टाइनी टॉट' को मदरसे छोडने आया। उसके पास ही विक्टोरिया फशन का वास्कटदार सूट पहन एक पचास बावन वष का अतीत-सौंदय पुरुष खडा सिगार पी रहा था। कोई टिपिकल बात थी उसमे जो देखन स ही डाक्टर प्रतीत होता था पहली बार भुवन ने डाक्टर महद्र स्वरूप तुली को देखा

दशहरे के बाद स्कूल के वक्त बदले और डिवाइन होम के भी। नित्यानद नौ मे साढे तीन और डिवाइन होम सीधे ग्यारह से चार। इस ढर्रे का अभी हफ्ता भर भी नही हुआ था कि उन्होंने पाया, नित्यानद स बहुत-से लडके छूटकर चौधरी भवन के बाहर आ खडे होते हैंऔर उसकी छुट्टी होने की प्रतीक्षा करत रहत हैं। और छुट्टी के बाद यूनिफाम म सज लडके लडकिया को अभिभावकों की उगलिया पकड-पकडकर गरामा गरमा जात देखन हैं। अक्सर उतनी वेला डिवाइन होम के भीतर से कोरस की आवाजें आ रही होती

वाक ए डूडल डू !

हूाटस माइ डेम टु डू ?

कभी कभी उन्हे बडी बचकानी सी कल्पना करने लगत कि नित्यानद म बच्चो के अभिभावक अपने-अपन बच्चे को छुट्टी के बाद साथ ले जाने के लिए खडे है दूर दराज के गरीब मोहल्लो म, फक्टरी या दूकान की चाकरी के बीच म से फूट हुए मेहनतकश मा बाप—आस पास के गावो से, कई कई कोस नग पैर चलकर आये किसान

★

राजमहल रोड को घंटाघर की तरफ से आती हुई बाजार रोड एकदम आधम आधा काटती हुई दूसरी ओर हापुड़ रोड में जा मिलती थी। राजमहल रोड से घंटाघर या स्टेशन की तरफ चल पड़ो, तो सारी बस्ती बड़ी दूकानें दायें बायें फली मिल जाती थी। इसी सड़क पर टाउन हाल के बिलकुल सामने कवि लेखक लालचंद लाल की दूकान थी—सुदर्शन प्रकाशन प्रकाशक एवं नयी व पुरानी पुस्तकों के विक्रेता वगैरा वगैरा।

सत्र शुरू होते से फौरन पहले और बाद, करीब महीने भर तक जब सर भुवन को यहाँ रुक कर लालचंद से बातें करनी पड़ती थी। इस बार भुवन जब उसकी दूकान के करीब पहुंचे तो दरवाजों पर फला फलाकर लटकायी रंगबिरंगी सचित्र व चिकनी किताबों की नुमाइश देखकर काफी हैरान हुए।

—क्या चक्कर है, कविराज? भुवन ने पूछा।

लालचंद ने एक आंख दबाकर उंगली से दूकान के भीतर देखने का इशारा किया जहां उन्हें ताजा पेंट किया एक बोर्ड दिखा डिवाइन होम की पांचवीं कक्षा तक की सारी पुस्तकें और कापियां आदि उचित दामों पर यहां मिलेंगी।

—यह क्या?

क्या क्या! मेम साहिबा से मैंने अर्ज की कि मैं कमराबाग का पुराना खादिम हूं। पहले तो बड़े शक से पेश आती रहीं फिर बुलाने लगीं मीटिंग पर मीटिंग। वाली लुक मिस्टर लाल, देखिये गिटपिट गिटपिट लालचंद ने तरह तरह की मुद्राएं और संकेत रचे—जो बुक नोटबुक जिधर से बनाऊं उधर से मंगवायेंगे? मैंने कहा, हां देवी फर्स्ट प्रीफरेंस डिवाइन होम के स्टूडेंट को देना होगी मैंने कहा कसम खाता हूं मनमाने दाम नहीं? मैंने कहा बिलकुल नहीं! भई, बिजनस करना है! कहकर लालचंद ने सांस ली और आवाज बुलंद करके परले फुटपाथ पर के हलवाई का नाम लेकर चीखा—दो चाय!

—मंगवा ली सारी किताबें? भुवन के स्वर में तिक्तता थी, जिसने लाल चंद को नहीं छुआ।

—लगता है जिन्दगी भर मंगवाता रहूंगा। यह कापी दिल्ली से वह कापी

नवई से। यह किताब इसमे, यह सिफ उसमे। अर, दस किताबें ता कहती है, सिफ जापान म मिलती है। मैंने कहा, देवी बाली, डोट वरी मिस्टर यू आर-बिल सी टु इट यू गेट दम ! और खुद पता दिया। चिट्ठी लिखी

—कापिया भी इपोट कराग ?

—अरे कापिया ? इन्ह कापिया कहत हो ! मैंन तुमन कभी दखी भी हागी ? यह देखो ! लालचद न पाच सात नग पकडकर उनके सामने रखे—इस बार कागज पर खाली पानी का ब्रुश फेर दो, ता रग बिरगी तसवीर निकल आय इस किताब को या खोल दो ता झावडा बन जाय लालचद चमत्कार-पर चमत्कार बताता रहा—यह साढ तीन रुपय यह चार रुपय दो रुपय बारह आन डढ रुपया अरे दत्तजी, कच्ची पक्की के वच्चे के लिए साल भर म तीन चार सौ की खरीद बता दी है। हमारे बाप हम पर इत्ता खच करत तो न शास्त्री हा के बताता ता नाम लालचद 'लाल नही

—हमारे लिए भी एक बोर्ड लगा दो इसके साथ ही ! भुवन ने मजाक किया।

—लगवा तो दू, पर अरे हा, लालचद न विषय बदल दिया, सुनता हू छठी सातवी आठवी क गणित भी बदल दिय हैं। और अभी तक नय का पता नहा। मेरठ स भी पुछवाया

☆

बाजार से लौटते समय व बडे उदास और भर-भरे से थ। घर पहुचे ता बिल्डिग क नीचे ही जती मिल गयी।

—पापा ! पिता की टागा से लिपटती बोली। आटी ! ऊपर आटी है!

—कौन सी आटी ?

—छपद आटी अक्सर सफेद परिधान म होने के कारण मिसेज तुली का नन्ही लडकी 'सफेद आटी कहने लगी थी।

सीढिया के नीचे साइकल खडी करके जती का गोद म उठाकर ऊपर चढ़ते हुए ऊटपटाग बातो से सतुलित होने का यत्न करने लगे—तेरी मम्मी भी ता सफेद है न, बटे!

—मोन छपद !

—सफेद आटी अच्छी है या सफेद मम्मी?

नन्हीं लडकी ने सोचकर कहा—मम्मी ! पर तत्काल बोली—मगर पापा, हमको आंटी के स्कूल में जाना है। वो बी छपद है।

भुवन चुप रह गये।

मिसेज तुली मानो उन्हीं की प्रतीक्षा कर रही थीं— ग्रीटिंग्स फार द इयर, डियर हस्बेंड आव माइ स्वीट रुचि ! कुड यू हल्प मी बिलीविंग व्हन दे टल मी यू आर द हेडमास्टर ऑव दैट टाट जॉव ए स्कूल काल्ड नित्यानंद !

—व्हाट वाट यू बिलीव सिंपल थिंग्स ?

—बिकाज आय व नेवर मीन एनी वन लाइक यू, डिस्प्लेरिंग एंड फ्लैशिंग एवरी सैक्ड एंड आल यंग।

भुवन सचमुच खुश हो गय। और इतना झेंपे कि तुली तो तुली, रुचि भी खिलखिलाकर हंस पडी।

मगर इस छेडा छाडी की गुदगुदी जल्दी ही खत्म हो गयी।

—सुनो ! तुली के जाने पर रुचि ने कहा। आज वह फिर वही कहने आयी थी और बडा अनुरोध कर रही थी।

—क्या ?

—वह चाहती है कि मैं भी डिवाइन होम में आ जाऊं।

—और तुम क्या चाहती हो ? भुवन उखड गय।

—मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है छोटे बच्चों को पढाने में। मगर पैसे की बात है। जितना मुझे कानेज में मिलता है उससे दुगुना देने को वह अब भी तैयार है।

—और तुम्हारा खयाल है कि डिग्री कालेज को पढाने के तुम्हारे सपने में और इस प्रस्ताव में कोई फर्क नहीं है !

—पैसे की ही बात थी रुचि भीतर ही भीतर उलझ गया चलो हटाओ ! मगर तुम्हें सचमुच वह पसंद करती है।

—कोई खास वजह ?

—तुम्हारे मेहनती स्वभाव और लगन की वह तारीफ करती है।

—जाहिर है कि मेरी स्तुति में तुम्हीं ने यह सब बताया उसे।

रुचि ने हलकी चुहल भरी आवाज में कहा—मैंने नहीं कहा, उसने सब पूछ लिया। बडी गुणी औरत है !

थोड़ा सोचकर, एकटक उसकी आखो मे घूरते हुए उन्होने पूछा—और तुम्हे पक्का यकीन है कि वह इस गरीब मास्टर से इश्क विश्क जैसा कुछ करने पर उतारू नही है ?

रुचि की आखें अचानक चमकी और उनसे गहरी राहत सी झलक उठी—मुझे बहुत खुशी है कि तुम इतने बोल्ड होकर सोच सके । ऐसा हो भी तो वह औरत कोई बेवकूफी नही कर सकती ।

उसी तरह उसकी आखो म घूरते हुए उन्होने कहा—अगर तुम सच बताने का वादा करो तो मैं पूछू कि क्या वह मुझे भी नौकरी देना चाहती है ?

इस बात से बेखबर कि बेटी उसकी पीठ से लगी उसकी चोटी के पिन नोच रही है, रुचि उठकर पति से लिपट गयी और गरदन से माथे तक, देर तक ओंठो से गुदगुदाती रही ।

—पूरी बात बताओ । उसके दोनो हाथ पकडकर उसे रोकते हुए भुवन न पूछा—कब कहा उसने ?

—बहुत दिन पहले । मैंने कहा कि तुम्ही कहो । मगर कभी कह नही सकी, इसीलिए मुझे यकीन है कि वह तुम्हारी बहुत इज्जत करती है, और तुमसे घबराती भी है बट स्टिल शी इज फाड ऑव यू । जब उसने बात रखी थी तो बोली थी कि वह रिसर्च मे तुम्हारी मदद करेगी । अगर तुम मान जाओ तो ।

—उसे मेरी तरफ से धन्यवाद देना और कहना कि आगे से कभी ऐसी बात न सोचे ।

उसने एक बार फिर उनके गले म बाहे डाल दी । फिर नेटी को पास खीचते हुए बोली—कह रही थी कि इस बार डिवाइन होम मे

—और सुनो ! उसे टोककर भुवन ने शात दृढ स्वर म कहा, आइंदा मे उसके स्कूल के बारे मे जितना हो सके कम बातें करना

✶

बातें, जो डिवाइन होम के बारे मे व नही सुनना चाहते थे, उन्हे बाद मे साक्षात् देखने को मिली । मगर उसी दिन उन्हे एक ऐसा शुभ समाचार प्राप्त हुआ जिसका सबध उनके जीवन की चिरसचित आकाक्षा से था ।

शाम को वे अपने गुरु, प्रिंसिपल भटनागर से मिलने गये ।

—आओ, भुवन ! उन्होने स्नेह स उन्हे पास बैठाते हुए कहा—सर-सरसा

से मैं तुम्हे याद कर रहा था। न आते तो एक-आध दिन म बुलवाना पड जाता।

—जी! भुवन का दिल धडक उठा।

—हा, भटनागर बाले, इस साल से तुम्हे इटर क्लासेज दना तय किया है।

—जी! भुवन की आख छलक पडने को हुइ।

—तुम्हारी थीसिस क क्या हाल है? मुख्य विषय थोडा बगल करके उन्होंने पूछा।

—जी, इस साल सब्मिट कर दूगा।

—तीन साल तो तुम ले चुके!

—जी हा, मगर कुछ सर्वे करने थे, इटरव्यू लने थे, छुट्टियो के अलावा कोई वक्त नही निकल पाता था, इसलिए पूरा एक साल इसी काम मे चला गया।

—चलो खैर। मैं इसलिए भी पूछना चाहता था कि इस साल शायद तुम्हे ज्यादा भार उठाना पडे तब प्रिसिपल साहब न पूरी बात बतायी—ऐसा है कि साइकॉलॉजी म इस साल, या हद से हद अगले साल, परमिशन मिल जायेगी। उधर तुम्हारी पी एच डी हो जायगी। सब ठीक हो जायेगा। यू विल बी दयर मगर तब तक एक या दो साल तुम इटर का एक्स्पीरिएस भी ले लो तो क्या बुरा?

—जी।

—मनेजिंग कमिटी मे सब खबर है इटर कालेज मे साइकालाजी वाले सिंह साहब इस पूरे साल छुट्टी लेन वाले हैं। उन्हे टी बी हैं, इलाज करायेंगे। सो उनकी जगह इटर के प्रिंसिपल—जिनके तुम विद्यार्थी भी रह चुके हो—को मैंने तुम्हारा नाम सुझाया था, और व मान गये अब समस्या थोडी दूसरी है। प्राइमरी का चाज अभी तुममे कमिटी नही छडवाना चाहती। जूनियर और हाई स्कूल म से तुम्हे टेंपररी रिलीफ दिला दिया जायेगा। हा तनख्वाह के मामले म मैं देखूगा कि तुम्हे नुकसान न हो कोई एतराज?

—जी कोई नही भुवन न कृतज्ञतापूवक कही

—लेकिन ध्यान रखना, प्राइमरी के रिजल्ट इस बार अच्छे नही हैं। डू योर बेस्ट! इसका असर पडेगा।

—जी, भुवन ने गुरु के चरण छुए।

घर पहुंचकर रसोई में मग्न रुचि को उन्होंने इतनी जोर से भींचा कि वह चीख उठी। वहां से उठाकर उसे कमरे में ले गये और बिस्तर पर पटक दिया। प्रिंसिपल से हुई बातें शब्दश: दोहराकर, चार क्षण ठहरकर, हर्ष-विगलित से बोले—अब मेरा कद कम से कम तुम्हारे जितना हो गया, रुचि।

★

अगस्त के तीसरे सप्ताह में लगातार तीन दिन तक बादल बरसते रहे तो उप-स्थिति प्राय: शून्य हो गयी। और उस दिन भुवन सीधे प्राइमरी से, अपने पुराने रास्ते से लौटने लगे। माडल टाउन की सरहद के ऐन इधर वाले छोर पर, नूरी बाग से छूता हुआ, लाल पत्थर का काथलिक गिरजा था। उस दिन भुवन उसके बाहर दर्जनों रिक्शे और प्रांगण में पचीसियों छाते बरसाती कोटों वाले स्त्री-पुरुष खड़े देखकर चौंके। न शनिवार था, न इतवार था, न ही कोई त्यौहार था। कोई गमी होती तो प्रार्थना मंडप खुला होता। फिर तत्काल उन्हें रिक्शों से परे एस. डी. एम. की जीप खड़ी दिखी। फिर भी उन्हें कुछ समझ न आया तो उन्होंने साइकल सड़क से उतार दी और फाटक के करीब हो गये।

और अगले ही क्षण उन्हें जो पता चला, वह फिर उनकी समझ से बाहर था। गिरजे के पीछे की ओर भी एक विशाल, अत्यंत विशाल प्रांगण था, और शायद उधर से ही गैर पेशेवर कंठों का कोरस सुनायी दिया था।

रेन रेन गो अवे,

कम अगेन, अनदर डे

उनकी अक्ल हैरान रह गयी। तेज-तेज पैडल मारकर वह कामतानाथ रोड पर मुड़े और तब जाकर जरा स्थिर हुए, जब चौधरी भवन के बाहर भी हमेशा की तरह बच्चों की प्रतीक्षा करते अभिभावक खड़े दिखे, और भीतर से कोरस सुनायी दिया—मगर यह कोई नर्सरी काफिया वाला गीत नहीं था, बल्कि बाइबल का कोई छंद था।

घर में पैर रखते ही उन्होंने रुचि से पूछा—डिवाइन होम की कोई ब्रांच भी खुल गयी है क्या?

—ब्राच तो नही खुली, रुचि ने बताया, इस बार सवा दो सौ बच्चे हो गये थे और चौधरी भवन में जगह नही बची थी। मिसेज तुली ने दौड धूप की तो फादर मास्त्रोनी ने उन्हे गिरजाघर का पिछवाडा इस्तेमाल करने की सुविधा दे दी।

अब जाकर भुवन पर कुछ कुछ स्पष्ट हुआ। लेकिन उनका चैन मानो छिन गया—बच्चे डिवाइन होम मे है ? उन्होने पूछा।

—आव् कोर्स ! तुम नही जानते ?

★

ग्राड ट्रक रोड की ओर बढते हुए डा कामतानाथ रोड पर काफी इधर से ही कुछ कुछ पुराने बगलो का सिलसिला शुरू हो जाता था, जिसमे आगे चलकर क्रमश मुसिफी बगला, चौधरी भवन, नवाब कोठी और फिर कुछ दूसरी कोठिया पडती थी। इन विशाल भवनो के पीछे एक बडा, हरा भरा और साफ सुथरा मैदान था, जिसकी बायी पट्टी पर सुलेमान गज की इमारतें थी, दाया ओर कैथलिक गिरजा था और सामने नूरी बाग की बस्ती थी। यह मैदान मूलत शायद नूरी बाग की बस्ती का ही हिस्सा था। आज, डिवाइन होम देखने आने पर भुवन को पता चला कि वह मैदान अब कानूनन कैथलिक गिरजे की सपत्ति है और पहले से कई गुना दर्शनीय है।

सुलेमान गज की तरफ कटीले तारो की एक ऊची पक्की बाड तन गयी थी। नूरी बाग की गली के समानातर अशोक वृक्षो की कलम रोपी हुई थी और नवाब कोठी की ठीक पीठ के साथ दो दो कमरो की पक्की, खूबसूरत कुटियो की कतार फैली हुई थी जिनके सामने एक फव्वारेदार बगीचा विकसित हो रहा था। मिसेज तुली ने बताया, ये उन ननो के निवासस्थान है, जो नार्थ इडियन चर्च की ग्राम सेवा योजना के तहत सीतापुर और इलाहाबाद से बुलायी गयी है और जो बुलायी जाती रहेगी।

मैदान अभी विकसित किया जा रहा था—मगर जैसा था, वैसा भी खूबसूरत ही था। चौधरी भवन के पिछवाडे से चारदीवारी तोडकर एक फाटक-सा बना दिया गया था, जिसमे से होकर बजरी की पगडडी पर चलते चलते भुवन, रुचि और जती मिसेज तुली के साथ गिरजे के पार्श्व प्रागण मे पहुचे। फादर मास्त्रोनी को प्रिंसिपल तुली के जरिए मिश्रा के आने की सूचना थी या

नहीं, मगर व अपने बगले के बाहर इस प्रकार मिले, मानो उन्ही का स्वागत करने को वहा मौजूद हा। परिचय की रस्म के बाद पल भर भी खोये बिना उन्होंने जती को गोद म उठा लिया और चहल कदमी सी करते हुए प्रार्थना-मडप के पीछे एस्बेस्टास के एक नव निर्मित शेड के पास ले आये। शेड दा भागा म बटा हुआ था, दोनो मे छोटे बच्चा के बैठने के बाक्डे और नर्सरी कक्षाओ की खेलो-और पढो जसी सामग्रिया पडी हुई थी।

—कसी है यीशु की की छाया म यह पाठशाला? उन्होने मोहिनीपूवक मुसकराते हुए परिष्कृत हिंदी म पूछा।

—अति सुदर! भुवन ने कहा, सुदरता और पावनता की अपूव अनुभूति म उनके दिमाग पर धुध नही छायी। बाक्डो को छूकर देखते हुए उन्होंने तुली से पूछा—बडे मजबूत और महग हैं। कहा से बनवाये आपने?

मिसेज तुली ने फादर मास्त्रोनी की ओर सकेत किया—आप जानते होगे।

भुवन को लगा कि तुली के इस कृतज्ञताज्ञापन स मास्त्रोनी प्रसन्न नही हुए—सब यीशु का प्रसाद है, अध्यापक मित्र! जो हर भक्त को मिलता है। बाक्डे इस प्रसाद का स्थूल रूप हैं।

भुवन का झटका लगा। मास्त्रोनी उसके बाद कितनी ही बातें करते रहे मगर व उनम अधिक नही रम सके। चौधरी भवन लौटकर, चाय की मेज पर बठने से पहल मिसेज तुली गैराज म गयी और दो तरुणिया के साथ लौटी। उनम म एक माया सिंह थी।

—मिस मारी टलर। माई क्लीग! मिसेज तुली ने भेंट करायी।

—ठीक इसी वक्त से, मैडम, भुवन ने अनपेक्षित रूप से उखडकर कहा, मुझम और आपम एक समझौता लागू होगा आप मेरे साथ कभी अगरेजी नहा बोलेंगी और मेरी मौजूदगी म औरो के साथ भी कम से कम अगरेजी बोलेंगी।

मिसेज तुली का चेहरा अपमान और लाजवश उतर गया और वे कई क्षण चुपचाप उन्हें देखती रह गयीं। रुचि उनकी इस औघड करवट से अशात हो गयी।

—आय ऍम सॉरी! किसी तरह बात शुरू करते हुए मिसेज तुली ने कहा—वरी सारी मेरा खयाल था कि डॉक्टर भी हम लोगों के साथ चाय

पीत। मगर वह ही इजट स्पीक हिंदी वरी सागी, मिस्टर दत्त दत्तजी ! बात खत्म करत करत वे बरबस मुसकरा दी और फिर हस पड़ी।

—अगर ऐसा है तो उनके न आने से भी चलेगा ! भुवन ने शात स्वर मे कहा।

—तुम्हे क्या हो गया है ? रुचि रोकते रोकते भी झल्ला गयी।

—मिसज तुली को जमीन पर आने की राय दे रहा हू। और तुली से बाते—आपने राय मशविरे के लिए ही मुझे बुलाया था न ?

—येस, थक्स ! लेकिन, प्लीज, मुझे हैरस मत कीजिये शायद आप मूड मे नही हैं। मै कोशिश करूगी कि

—चलेगा ! भुवन ने कोमल स्वर मे कहा।

सहसा रुचि ने मुसकराकर तुली को चुटकी काट ली।

दोनो अध्यापिकाए अत्यत कौतुक से भुवन को एकटक निहार रही थी। भुवन ने उनकी तरफ देखकर धीरे से एक आख दबा दी।

—आप कमाल के के आदमी हैं। मिस्टर दत्त ! माया सिंह बतरह मुसकरा उठी।

जती लान पर जाकर धमाल करने की जिद करने लगी तो मारी टेलर और रुचि उसे लेकर बाहर चली गयी।

—जस्ट नाउ यू बिहेव्ड एज इफ आय वर यार वुमन ! मिसज तुली ने उपालभ किया।

—हिंदी ! भुवन ने सिर्फ एक शब्द कहा।

—ओफ ! तुली सिटपिटायी और फिर जैसे उन्हे गुदगुदगुदी होने लगा—चलो, यही सही। बोलो अब।

—क्या ?

—क्या हम कुछ बातें नहीं करेंगे ? स्कूल के बारे म

—जरूर करेंगे, कहकर भुवन ने माया सिंह का तीखी दृष्टि से देखा। आपकी अध्यापिकाए बडी सुशील हैं

माया और तुली ने एक-दूसरे को अर्थपूर्ण देखा।

—मैं चलू मैडम ? खडे होकर माया ने कहा।

—ओ के, तुली ने कहा, थक्स फार जॉयनिंग अस, माया !

दाना को अभिवादन करके वह गयी तो तुली न कहा—तुम्हारी हिंदी उस पर छा गयी ।

—आप स्कूल क्या चला रही है, मिसेज तुली ? भुवन ने गभीरता से पूछा ।

—क्या यह बुरी बात है ?

—हर काम के पीछे एक मकसद होता है ।

—मैं तो आपको अपना मकसद बता सकती हू, डियर इफ्उड आर् रचि । तुली के स्वर मे अचानक व्यग्य झलक उठा । बट आय'म नाट सो श्योर व्हैदर दोज ट्रस्टीज आव योर नित्यानद मिशन आर ऑलसो क्लियर एबाउट देयर एम्स ।

क्षण भर को भुवन अपना ओज खो बैठे ।

—व मूख और गलत लोग हो सकते हैं । लेकिन वे मेरे मित्र नही हैं । इसीलिए मैं आपसे पूछ रहा हू ।

—मित्र समझन के लिए धन्यवाद, भुवन जी । मैं आपको बहुत पसद करती हू ।

—आपन अपने बारे म कभी खुलकर नही बताया ।

—कुछ खास बताने लायक नही है मे बी ए फ्यू इयर्स ओल्डर दैन यू, आय म द ओनली चाइल्ड ऑव माइ पेरेंटस एड मैरेड वाइफ ऑव डॉक्टर तुली

भुवन चुप रहे ।

—आय'म नॉट ए हैप्पी वुमन । हालांकि वे मुझे बहुत प्यार करते है ।

—बच्चे इस घर म नहीं दिखते ।

तुली के चेहरे पर पीली काली छाइया तैर गयी ।—डू यू इन्सिस्ट ऑन माई टेलिग यू एवरी थिंग ?

—अगर आप चाहें तो ! मुझे दोस्त समझें, तो ।

कई क्षणों तक शून्य में देखती रहने के बाद वे बोली—ठीक है आप भी जान लीजिये । कहा से बताऊ ? मैं मा क्यों नही-हू से ?

भुवन कुछ नहीं बोले ।

—वेल आय मेट महदर, दैट इज डॉक्टर महदर स्वरूप तुली, व्हेन

रिजाइड फ्रॉम आर्मी। चालीस साल का बेकार डाक्टर बेचारा बड़ा दुखी था। वी मेट इन एन एक्स आर्मीमैन्स पार्टी, माइ फादर बीइग ए रिटायर्ड ब्रिग्रेडियर। प्यार हुआ। मेरे डैडी ने अपने जमाई को इग्लैंड भेजा, जहाँ वह सिर्फ एम एस कर सका। फादर गुजर गये। मैंने सब घर द्वार बेचा डाक्टर ने क्लिनिक खोला, बट हिज वाइफ एंड थ्री चिल्ड्रेन क्रिएटेड ए हैल देयर हम यहाँ भाग आये। बस!

—कुछ समझ नही आया। पर ठीक है। लेकिन आपके

—मेरे बच्चे! तुली ताड़कर बोली और हँसी—बताती हूँ। ड्यूरिंग कोर्टशिप डॉक्टर हैंड द फैक्ट फ्राम मी कि वह शादीशुदा है और उसके तीन बच्चे भी हैं। लदन में हमारी शादी हुई। जब बात खुली, तो मैंने एक अच्छी वाइफ की तरह उसे सारे झझट से छूटने में मदद की। यू कान्ट ब्लेम मी इफ आय स्टार्टेड हेटिंग हिम, एड आय हेट मदरिंग हिज़ चाइल्ड। अगर मेरे बच्चे होगे तो बड़े झगड़े होगे—प्रापर्टी के दुनिया भर के। सो, टू हैल विद मदरहुड!

—क्या खयाल है, आप हमेशा बच्चा के बगैर ?

मिसेज तुली उनका तात्पर्य समझकर आरक्त हो उठी—यू आर ए शेमलेस वन ? बट दैन, यस! नोबडी कैन ग्रब मी अनअवेयर्स!

—थोड़ा तो समझ में आता है कि आप स्कूल क्यों चलाना चाहती हैं अपने आपको व्यस्त रखने के लिए ही तो!

—हा और ज्यादा कुछ नही जानती

—आप नित्यानद क्यों नही ज्वायन कर लेती?

—आइ हेट दैट कान्ट्स आव जक!

—आप समाज सेवा शुरू कर सकती हैं पैसा की ही बात है तो बड़ी क्लासों का भी पता सकती हैं

—नहीं, तुली ने अधैर्य से टोका। मैं बच्चों में रहना चाहती हूँ। मुझे सिर्फ एक बात बताइये, मिसेज तुली ने दृढ़ स्वर मे कहा, क्या आप पति पत्नी मेरी कोई मदद कर सकते हैं? या कम से कम आप रुचि को मेरे साथ काम करने के लिए राजी कर सकते हैं?

—मैं कुछ नहीं कर सकता आप रुचि से पूछ सकती हैं। मैं वादा करता हूं कि मैं उस पर इन्फ्लुएंस नहीं डालूंगा।

—शुक्रिया, भुवन बाबू! मिसेज तुली की आंखों में आंसू भर आये। बट प्लीज लेट मी इन्सिस्ट आन योर फ्रेंडशिप? आय लव टु बी विद रुचि एंड जती मैं काम अकेले कर सकती हूं पर अकेले शायद रह नहीं सकती

भुवन पर मायूसी छाने लगी। इस महिला के प्रति व किसी भी हालत म कटु नहीं हो सकते थे। और यही कठिनाई थी।

रुचि, जती और मारी अंदर आयीं तो मिसेज तुली ने कहा—लेकिन मिस्टर दत्त, आपको प्रमाण देना पड़ेगा कि आप मेरे मित्र हैं, और रहेंगे।

—बस?

—आप आज यहीं भोजन करेंगे

भुवन ने स्वीकार कर लिया। रुचि वातावरण की बोझिलता को महसूस करती अभी तक चुप थी।

छिटपुट बातों में वक्त कटा। मारी और माया भुवन को घेरे रहीं। माया के गले में लटकते क्रास से पता चलता था कि वह ईसाई है, मगर निष्णात हिंदी बोलती थी।

जब भोजन परोसा जा चुका तब जाकर डॉक्टर तुली बमुश्किल आ पाये—आय हैड टु क्लोज द क्लिनिक बिफोर टाईम, मिस्टर दत्त! परिचय के बाद क्षमाप्रार्थना सी करते व बोले—नाओ, वुड यू केयर टु सिप सम ड्रिंक ऑर बियर प्लीज़?

भुवन ने कभी ऐसे पेय नहीं पिये थे, डॉक्टर जब जल[illegible]-जल्दी दो तीन पैग गले से उतार रहे थे तो भुवन सोच रहे थे, कुछ [illegible] [illegible]वाद के जो बुरे दिन आने वाले हैं, उनकी जिम्मेदारी क्या इन्हीं [illegible] [illegible]ये?

खाने और रुखसत के बाद मारी और माया [illegible] [illegible]चि से बातें करती और जती व नीलू म लाड करती उनके [illegible] [illegible]।

★

अनायास ही भुवन के भीतर एक प्रबल मानसिक [illegible]
जितना ही वे उसमें उबरने की कोशिश करने,
डूब जाते।

रिजाइड फ्राम आर्मी। चालीस साल का बेकार डाक्टर बेचारा बडा दुखी था। वी मेट इन एन एक्स-आर्मीमैन्स पार्टी, माइ फादर बीइंग ए रिटायड ब्रिग्रेडियर। प्यार हुआ। मेरे डैडी ने अपने जमाई को इंग्लैड भेजा, जहाँ वह सिर्फ एम एस कर सका। फादर गुजर गये। मैंने सब घर द्वार बेचा, डाक्टर ने क्लिनिक खोला, बट हिज वाइफ एंड थ्री चिल्ड्रेन मिएटेड ए हेल देयर हम यहा भाग आये। बस!

—कुछ समझ नही आया। पर ठीक है। लेकिन आपके

—मेरे बच्चे! तुली ताडकर बोली और हसी—बताती हू। ड्यूरिंग कोर्टशिप डाक्टर हल्ट द फैक्ट फ्राम मी कि वह शादीशुदा है और उसके तीन बच्चे भी है। लदन म हमारी शादी हुई। जब बात खुली, तो मैंने एक अच्छी वाइफ की तरह उसे सारे झझट से छूटने मे मदद की। यू काट ब्लेम मी इफ आय स्टार्टेड हेटिंग हिम एंड आय हेट मदरिंग हिज चाइल्ड। अगर मेरे बच्चे होते तो बडे झगडे होते—प्रापर्टी के, दुनिया भर के। सो, टू हेल विद मदरहुड!

—क्या ख्याल है, आप हमेशा बच्चो के बगर ?

मिसेज तुली उनका तात्पय समझकर आरक्त हो उठी—यू आर ए शेमलस वन ? बट देन, यस! नोबडी कैन ग्रब मी अनअवेयस!

—थोडा तो समझ म आता है कि आप स्कूल क्या चलाना चाहती हैं अपने आपको व्यस्त रखने के लिए ही तो!

—हा, और ज्यादा कुछ नही जानती

—आप नित्यानद क्या नही जायन कर लती ?

—आइ हेट दैट काइन्ड ऑव जक!

—आप समाज सेवा शुरू कर सकती हैं पढाने की ही बात है तो बडी क्लासो को भी पढा सकती हैं

—नही, तुली ने अधैय से टोका। म बच्चो म रहना चाहती हूं। मुझे सिर्फ एक बात बताइये, मिसिज तुली ने दृढ स्वर मे कहा, क्या आप पति पत्नी मेरी कोई मदद कर सकते हैं ? या कम से कम आप रुचि को मेरे साथ काम करने के लिए राजी कर सकते हैं ?

—मैं कुछ नही कर सकता आप रुचि से पूछ सकती हैं। मैं वादा करता हू कि मैं उस पर इफ्लुएस नहीं डालूगा।

—शुक्रिया, भुवन बाबू ! मिसेज तुली की आखो मे आसू भर आये। बट प्लीज लेट मी इसिस्ट आन योर फ्रडशिप ? आय लव टु बी विद रुचि एड जती मैं काम अकेले कर सकती हू पर अकेले शायद रह नही सकती

भुवन पर मायूसी छाने लगी। इस महिला के प्रति व किसी भी हालत म कटु नही हो सकते थ। और यही कठिनाई थी।

रुचि, जती और मारी अदर आयी तो मिसेज तुली न कहा—लेकिन मिस्टर दत्त, आपको प्रमाण देना पडेगा कि आप मेरे मित्र हैं, और रहग।

—कसे ?

—आप आज यही भोजन करके जायेंगे

भुवन ने स्वीकार कर लिया। रुचि वातावरण की बोझिलता को महसूस करती अभी तक चुप थी।

छिटपुट बातो म वक्त कटा। मारी और माया भुवन को घेरे रही। माया के गले म लटकते क्रास से पता चलता था कि वह ईसाई हैं मगर निष्णात हिंदी बोलती थी।

जब भोजन परोसा जा चुका तब जाकर डॉक्टर तुली बमुश्किल आ पाये—आय हैड टु क्लोज द क्लिनिक बिफोर टाईम, मिस्टर दत्त ! परिचय के बाद क्षमाप्रार्थना सी करते व बोले—नाओ, बुड यू केयर टु सिप सम ड्रिक आर बियर प्लीज ?

भुवन न कभी एसे पेय नही पिये थे, डाक्टर जब जल्दी-जल्दी दो तीन पग गले से उतार रहे थ तो भुवन सोच रह थ, कुछ वर्ष बाद फसराबाद के जो बुरे दिन आने वाले हैं, उनकी जिम्मेदारी क्या इसी आदमी पर होनी चाहिये ?

खाने और रखसत के बाद मारी और माया टहलती टहलती, रुचि स बातें करती और जती व नीटू ग लाड करती उनके साथ घर तक चली आयी।

★

अनायास ही भुवन के भीतर एक प्रबल मानसिक द्वद्व छिड गया था। और जितना ही वे उसमे उबरने की कोशिश करते, उतना ही उसम और गहरे डूब जाते।

दशहरे के बाद सर्दियां शुरू होने तक तीसरी चौथी और पांचवीं के कुछ विद्यार्थी—अधिकांश लड़के—हमेशा विद्यालय छोड़ जाते थे। ये अनिवार्यतः घटिया विद्यार्थी नहीं होते थे बल्कि सुशील माता पिता और घर परिवार के बड़े संवेदनशील लड़के होते थे। मगर इस बार रजिस्टरों की गिरावट के बाद जो तसवीर उभरी, उसने भुवन का रोम रोम विचलित कर दिया।

सात वर्गों में जो अस्सी पिचासी छात्र रहते थे, वे सभी वार्षिक परिणामों को क्षीण करने वाले थे। विशेषकर पांचवीं के।

ऐसे में जब उन्हें सूचना मिली कि मिसेज तुली ने पांचवें दरजे के अपने विद्यार्थियों की विधिवत व अधिकृत परीक्षा के लिए हाली थमड़े स्कूल, हापुड़ के साथ व्यवस्था नक्की कर ली है तो उन्हें जीवन में पहली बार डगमगाहट सी महसूस हुई।

इंटर कालेज में आखिरी पीरियड लेकर वे फिर प्राइमरी में लौट गये और बहुत देर तक अपने दफ्तर में अकेले बैठे रहे। बार बार वे अपने से सवाल करते कि क्या वे द्वेष और हीनभावना के शिकार हो रहे हैं। या डिवाइन होम सचमुच अनजाने ही एक विध्वंसक भूमिका अदा करने जा रहा है? क्या वे पोंगापंथी हैं? दकियानूस हैं? सुशिक्षा और सामाजिक उत्थान के विरोधी हैं?

साइकल पकड़कर बहुत दूर तक वे पैदल ही चलते रहे।

वे कामतानाथ रोड पर भी नहीं मुड़े। सीधे घंटाघर की ओर निकल गये और बाजार में से होकर गुजरने लगे। सहसा उन्हें लगा कि उनकी घर लौटने की कोई इच्छा नहीं है। पंद्रह बीस मिनट में शहर से दो मील बाहर नदी के किनारे पर उन्होंने साइकल रोक दी और आंखों पर बांह रखकर चित लेट गये। सान्ध्यपूर्व के सूने आकाश में ऊंचे उड़ते एकाकी पक्षियों के मंद स्वर सुन कर दिमाग में एक बेसिर पैर का विचार आया कि भीतर शहर में जो हो रहा है, या होने वाला है उससे नदी आज भी अछूती है। इन वर्षों में वे इधर कभी-कभार ही आये थे। पर विद्यार्थी जीवन में प्रायः सुबह शाम वे दौड़ लगाने इधर आते थे। इम्तहान करीब आते थे तो दोपहर-वेला भी किताबें पाटते हुए तट पर मंडराते रहते थे। उन्हें समझ में नहीं आया कि उन दिनों और इन दिनों में ठीक-ठीक क्या अंतर पड़ा हो गया है।

भुवन उन लोगा म स नही थे, जि ह निष्ठावान एव चितनशील होने के लिए बौद्धिक अभ्यास करने पडते है। जीवन और आबोहवा को वे विराट भावना और विचारमय अर्थों म ग्रहण करते थे और सस्कारा स ही इनसे प्रेम करते थे। यही कारण था कि जीवन के प्रथम दस साढे दस बरस एक सुदूर जिले के देहात म गुजारने के बावजूद कैसराबाद उनके स्वत मानस म अखड सपूर्णता के साथ प्रवाहित होता था

आसपास तक के गावा म आगे पढ़ने का प्रवध न होने पर पिता न उन्ह छठे मे दाखिला दिलाने के लिए अपने बडे साले के पास कैसराबाद भेज दिया था। तब भी यही सस्था थी जो आज है—नित्यानन्द मिशन एजूकेशनल ट्रस्ट, नित्यानद प्राइमरी स्कूल हाई स्कूल, इटर कालेज और बस। कचहरी के मुलाजिम मामा न भुवन को पितृसुलभ स्नेह के साथ साथ अपने घर रखा, मगर व स्कूल म ही थे कि मामा परलोकवासी हो गये।ई। पद्रह वर्षीय भुवन को हेड मास्टर जनादन गोस्वामी न धय बधाया, दुलारा और समझाया कि अब ससार म उसके अकेले और अपने विवेक के सहारे चलन की अवस्था आ गयी है, और उसे साहसपूवक यह चनौती स्वीकार करनी चाहिय।

बीस रुपये महीने घर से, बीस रुपये की टयूशनें और पद्रह रुपये छात्रवत्ति—इन्ही के बल पर उन्होंने इटर किया। फिर डबडबायी आखें लिए प्रिंसिपल ब्रह्मानन्द भटनागर के घर जाकर खडे हो गये—अब आगे क्या करू, सर?

प्रिंसिपल भटनागर न अपने मित्र, नामी प्रिंसिपल डाक्टर चक्रवर्ती के नाम एक चिटठी लिख दी, जिसे लेकर वे खुरजा पहुच। दाखिला मिल गया मगर पिता न मनीआडर भेजना बद कर दिया। लिखा, तुम्हारा छोटा भाई भी इटर साइस करन अपन छोट मामा के पास लखनऊ चला गया है और तुम लोगा की छोटी बहन की शादी भी इसी साल करनी है

प्रिंसिपल चक्रवर्ती सारी स्थिति के प्रति सहानुभूतिपूण दष्टि न अपनाते, और कसराबाद म हेड मास्टर जनादन गोस्वामी सजीवनी सहायता का प्रबध न करते, तो भुवन शायद गाव ही लौट गय होते, या खत्म हो गय होते।

बी ए का इम्तहान देकर गाव जान मे पहले व हफ्ते भर के लिए कसराबाद चले आये। पुरान साथी मित्रों और गुरुओं म से अधिकाश ग्रीष्म-

प्रवास पर चले गये थे। जनार्दन गोस्वामी कभी कहीं नहीं जाते थे। उनके चरण छूकर बैठकर उन्होंने बताया—मैं बी टी करने जा रहा हूँ

—कहाँ ? गोस्वामी ने विचारपूर्वक पूछा।

—मेरठ उन्होंने कहा।

गोस्वामी बड़ी देर तक चुप रहे तब बोले—मेरा तुम पर हक है या नहीं ?

भुवन ने कातर दृष्टि से उन्हें देखा—कहकर नहीं देखेंगे ?

गोस्वामी ने उनका कंधा सहलाया। मुझे पता नहीं कि इस भागमभाग के जमाने में तुमने मास्टरी करने का फैसला क्यों किया है। मगर, मन करे तो ट्रेनिंग के बाद यहीं चले आना। कुछ दिन अपने शिष्य के साथ काम करने का गौरव मुझे देना चाहो तो !

भुवन भहराकर गुरु की छाती में समा गये थे।

—परपरा चलाने का मेरा कोई सपना नहीं है, भुवन ! जाने कब उनकी आँखें भर आयी थीं। बस एक नन्ही सी इच्छा है जिंदगी भर मास्टरी की। जब पढ़ते थे और फिर जब पढ़ाने आये तो गुरु शिष्य के बीच प्यार-व्यार जैसा या वैसा ही कुछ होता था, जो बाद में नहीं रहा। तुम्हारे साथ ऐसा कुछ लगा। सोचता हूँ, तुम भी ऐसे कुछ तार शायद पैदा कर सको। पढ़ने की धूम मच गयी है। छोटे छोटे, निरीह बच्चे गाँव से चार चार आठ आठ कोस चल कर स्कूल आते हैं पर सूने लौट जाते हैं। उन्हें शायद तुम्हारी मोहब्बत फल जाये, भुवन !

भुवन ने विचलित होकर गुरु की हथेली अपने दोनों हाथों में ले ली। गुरु ने इसका अभिप्राय समझ लिया—दो बरस बाद मैं रिटायर हो जाऊँगा। तब इस बात का सुख साथ रहेगा कि अपनी ही तरह धड़कनें महसूस करने वाला एक दिल पीछे छोड़े जा रहा हूँ। गुरु के सान्निध्य में बैठे उनके दोहित्र से मिलते हुए भुवन के मन में उस दिन कैसराबाद की बड़ी सजीव छवि कौंधी थी कैसराबाद पूरे इलाके का दिल है, धड़कन है। उन्हें लगा था—उत्तर पूर्व महरौनी-दादरी और दक्षिण पश्चिम में सूबेदारगढ़ और किरमतपुर तक से रक्त नलिकाओं जैसी सैकड़ों देहाती पगडंडियों से जीवन रक्त इसके बाजारों और नित्यानंद मिशन में आता है। और यह रक्त संसाधित होकर उन्हीं नलिकाओं द्वारा वापस सैकड़ों गाँवों वाली उस देह में वापस पहुँच जाता है। सबके सींग

हुए विद्यार्थियों के रूप में, भरी टेन लिए गाते हुए, ढुली हुई बलगाड़ियां लौटाते हुए किसानों के रूप में मिल मजूरों के रूप में

नदी किनारे निश्चल लेटे भुवन स्वप्नभंग के झटके से चौंककर नहीं उठे थे, बल्कि अपलक सारी स्थितियों के बारे में सोचते सोचते इस कल्पना से बेचैन हो उठे थे कि दस पंद्रह साल बाद शायद कमरावादनुमा यह दिल रोगी हो जायेगा। उन्हें निश्चय हो गया—डिवाइन हाम ज्यों ज्यों पनपेगा कैसराबाद रोगी होता जायगा।

★

नदी से लौटने लगे तो सांझ घिर आयी थी। रास्ते में लालचंद कवि को निठल्ला बैठा देख साइकिल से उतर पड़े।

—क्या हाल है कवि? शो केस पर कुहनी टिकाते उन्होंने कहा।

लालचंद ने उन्हें उचटती नजर से घूरा—तुम्हारी तबीयत ठीक है मास्टर?

—तुम्हें क्या शक है? उन्होंने विनोदी जामा ओढ़ना चाहा।

—शक्ल पर काबू नहीं रखोगे तो किसी को भी शक होगा! और वह सड़क पार, हलवाई की दुकान की ओर गरदन उचकाकर चिल्लाया—पांडे महाराज! पाव भर की दो चाय फेंको!

—काम-काज कैसा है? भुवन ने पूछा।

—अरे काम तो बड़ा गजब है, दत्त गुरु! शो केस के बीच वाली लकड़ी की पटरी उठाकर उसने रास्ता खोलते हुए कहा।

भुवन के गद्दी पर बैठते ही लालचंद ने एक क्लाक का डिजाइन उनके सामने रख दिया 'घाटी के स्वर मूर्धन्य कवि लालचंद 'लाल' की नवीनतम कविताओं का ग्यारहवां संकलन।'

—'नवीनतम' और 'ग्यारहवें' का भाषा चमत्कार अद्भुत है! भुवन ने मुस्कित होकर कहा।

—क्या मतलब? लालचंद ने संदेहपूर्वक पूछा' और पत्र प्रूफों का बंडल सामने खिसकाते हुए बोला, आप मेहरबानी करके इन्हें देखने में मेरी सहायता करेंगे?

सब कुछ एक ओर करते हुए उन्होंने कहा—तुम्हारी सहायता मेरा धर्म

है लाल कवि ! मगर यह त बताओ कि तीन साल की गुठली के बाद फिर यह सकलन ! धदा वदा छाडन वाले हो क्या ?

—आपको किन बेवकूफा न मास्टर, हेडमास्टर और फिर प्राफेसर बना दिया ! बिना धधे क कसरावाद म किसी कवि की आज तक किताब छप सकी है क्या ?

—लगता है तसवीरो की किताबा स बडा माल मिलता है !

—चुप मास्टर ! लालचद न रहस्य से कहा। माल मिलता है, मिलेगा भी। मगर मेम साहब पीछे पड गयी हैं।

—यानी ?

—यार, लालचद न खामखा अगल बगल दखकर रहस्य से कहा, बडी तज चीज है, कमबख्त ! यह ठीक है कि उसके लडके-लडकिया की वजह स लुत्फ आ गया। पचीस पचास लोग उसके यहा के रोज ही दो चार रुपये की कापी पेंसिल लेते रहते हैं। मगर साली को एक एक पाइ का अदाजा है। बोली, मिस्टर लाल, सारा प्राफिट नही रख पाओग ! मैंने कहा, बहनजी बचता ही क्या है ? ता फट उगलिया पर गिनकर कहती है, मेरे यहा का हर बच्चा औसत तीन सौ रुपय की खरीदी करता है तुम्हारे यहा से। सवा दो सौ के हिसाब के पैंसठ हजार क उपर जाते हैं। पचीस परसेंट के हिसाब स से भी तुम्हे कम से कम सोलह सत्रह हजार हजार बचते हैं यार यही लालचद को अपनी मूखता का एहसास हो गया और उसकी कैंची जैसी जुबान थम गयी। मगर राज की बात वह करीब करीब बक गया था।

—फिर ? भुवन बडी सजगता से सुन रहे थे।

—कुछ नही। मैं बोला क्या सेवा करू, तो कही, ठीक टाइम पर बता दूगी तब से मैं तो हर वक्त टाइम ही देखता रहता हू।

—ठीक टाइम पर मुझे खबर करना ! उनकी आवाज अनायास अयगर्भित हा उठी।

लालचद न उन्ह ध्यान से देखा—कहते हो तो जरूर करूगा सुना मैंने भी है कि तुममें और प्रोफेसर भाभी से उसकी छनती है

—अब बस कर ! भुवन उसकी गभीरता लखकर चिढ उठे। और गद्दी से उठ खडे हुए।

—प्रूफ, गुरु ! लालचंद ने पत्र प्रूफों की तरफ संकेत किया।

—अभी मुझे अपनी थीसिस का काम निपटाना है। दो महीने बाद दिखाना। उन्होंने साइकल थाम ली।

—गुरुरुरु ! लालचंद ने पीछे से पुकारा।

—अगले साल! ! उन्होंने सड़क के बीच से बिना पलटे ही कहा।

★

रुचि उनकी प्रतीक्षा करते करते व्याकुल हो उठी थी और संध्या-भ्रमण की वेला भी गवा चुकी थी। खेल-खेल और 'छपेद आटी' से भेंट चूक जाने से जती अलग चिड़चिड़ायी हुई थी। झल्लाकर रुचि ने उनसे पचीसों सवाल पूछे और ढेरा आश्चर्य किया, मगर वे जरा भी संतोषजनक उत्तर न दे पाये। अंत में वे एकदम खामोश हो गये और दीद झुकाये लाचार से बुरी भली सुना चुकने की राह देखने लगे। रुचि पहले तो किंकर्त्तव्यविमूढ़ रह गयी, फिर उनकी घनी आंखों में झांकती विस्मय से बोली—तुम्हें हुआ क्या है ?

भुवन की इच्छा हुई कि उसके कंधे से लगकर हलका सा रो लें, या देर तक बस सर डाले चुप पड़े रहें। मगर घर में सास आयी हुई थी। वे कुछ न कर सके।

—आज न पूछो, रुचि ! अंत में वे गिड़गिड़ाये।

★

दिसंबर की बीस या इक्कीस तारीख थी। रात के साढ़े आठ-नौ बजे के करीब ओवरकोटों और मफलरों में लिपटी मारी टेलर और माया सिंह के साथ मिसेज तुली आयी।

—हलो क्यूट्स ! मफलर सिर से खिसकाकर, मुंह से भाप फेंकते हुए तुली बोली—शानदार काफी का एक एक प्याला पिला सकती हो, रुचि ? इस वक्त जिंदगी में इससे बड़ी कोई तमन्ना नहीं !

दो मिनट वहां बैठकर माया ने पूछा—माजी सो गयीं ?

—नहीं, भीतर हैं, रुचि ने वहां अभी बुलाती हूं।

—आप बैठें तो खामी सकुचाती हुई वह बोली, मैं ही बुला लाऊं !

—आओ ! रुचि ने बेतरह मुसकराते हुए कहा। उसके भीतर निकल जाने पर बोली—यह लड़की अम्मा के पैर छूने की घती है।

है, लाल कवि ! मगर यह त बताओ कि तीन साल की गुठली के बाद फिर यह मकलन ! वदा वदा छाडन वाले हो क्या ?

—आपका किन बेवकूफो न मास्टर, हडमास्टर और फिर प्राफेसर बना दिया ! बिना ग्रंथ क कसराबाद म किसी कवि की आज तक किताब छप सकी है क्या ?

—लगता है, तसवीरो की किताबो से बडा माल मिलता है !

—चुप मास्टर ! लालचद न रहस्य से कहा। माल मिलता है, मिलेगा भी। मगर मेम साहब पीछे पड गयी है।

—यानी ?

—यार, लालचद न खामखा अगल बगल देखकर रहस्य से कहा, बडी तज चीज है, कमबख्त ! यह ठीक है कि उसके लडके-लडकिया की वजह स नुत्फ आ गया। पचीस पचास लोग उसके यहा के रोज ही दो चार रुपये की कापी पेंसिल लेते रहत है। मगर साली को एक एक पाई का अदाजा है। बोली मिस्टर लाल, सारा प्राफिट नही रख पाओग ! मैंने कहा, बहनजी बचता ही क्या है ? ता फट उगलियो पर गिनकर कहती है, मेरे यहा का हर बच्चा औसत तीन सौ रुपय की खरीदी करता है तुम्हारे यहा से। सवा दो सौ के हिसाब के पसठ हजार के उपर जाते हैं। पचीस परसेंट के हिसाब स से भी तुम्ह कम से कम सोलह सत्रह हजार हजार बचते हैं यार यही लालचद का अपनी मूर्खता का एहसास हो गया और उसकी कची जसी जुबान थम गयी। मगर राज की बात वह करीब करीब बक गया था।

—फिर ? भुवन वडी सजगता से सुन रहे थे।

—कुछ नही। मैं बोला क्या सेवा करू, ता कही, ठीक टाइम पर बता दूगी तब स मैं तो हर वक्त टाइम ही देखता रहता हू।

—ठीक टाइम पर मुझे खबर करना ! उनकी आवाज अनायास अर्थगर्भित हा उठी।

लालचद न उन्ह ध्यान स दखा—कहते हो तो जरर करगा सुना मैंने भी है कि तुमसे और प्रोफेसर भाभी से उसकी छनती है

—अब बम कर ! भुवन उसकी गभीरता लखकर चिढ उठे। और गद्दी से उठ खडे हुए।

—सूप गुड ! मालकिन ने पत्र मूर्ति की तरफ गर्व किया।

—अभी मुझे अपनी पोजिशन का नाम दिखाना है। दो महीने बाद दिखाऊंगा। उन्होंने सादगल माग ली।

—गुड लक ! मालकिन ने पीछे से पुकारा।

—अगले साल ! उन्होंने गदर के बाद में बिना पलटे ही कहा।

★

रुचि उनकी प्रतीक्षा करते करते व्याकुल हो उठी थी और संध्या भ्रमण की वेला भी गवा चुकी थी। मेल-जोल और 'टी पार्टी' में भेंट चूक जाने से अलग चिड़चिड़ायी हुई थी। तमतमाकर रुचि ने उनसे पचीसों सवाल पूछे और ढेरों आक्षेप किये, मगर वे जरा भी संतोषजनक उत्तर न दे पाये। अंत में वे एकदम खामोश हो गये और दीठ झुकाये लाचार से कुर्सी मली गुत्था पुवन की राह देखने लगे। रुचि पहले तो किंकर्तव्यविमूढ़ रह गयी, फिर उनकी पनीली आंखों में झांकती विस्मय से बोली—तुम्हें हुआ क्या है ?

भुवन की इच्छा हुई कि उसके पंख से लगकर हलका सा रो लें, या देर तक बस सर डाले चुप पड़े रहें। मगर घर में सास आयी हुई थी। वे कुछ न कर सके।

—आज न पूछो, रुचि ! अंत में वे गिड़गिड़ाये।

★

दिसंबर की बीस या इक्कीस तारीख थी। रात के साढ़े आठ-नौ बजे के करीब ओवरकोटों और मफलरों में लिपटी मारी टेलर और माया सिंह के साथ मिसेज तुली आयीं।

—हलो क्यूटस ! मफलर सिर से खिसकाकर, मुंह से भाप फेंकते हुए तुली बोलीं—शानदार काफी का एक एक प्याला पिला सकती हो, रुचि ? इस वक्त जिन्दगी में इससे बड़ी कोई तमन्ना नहीं !

दो मिनट वहां बैठकर माया ने पूछा—माजी सो गयीं ?

—नहीं, भीतर हैं, रुचि ने कहा अभी बुलाती हूं।

—आप कहें तो खासी सकुचाती हुई वह बोली, मैं ही बुला लाऊं !

—जाओ ! रुचि ने बेतरह मुसकराते हुए कहा। उसके भीतर निकल जाने पर बोली—यह लड़की अम्मा के पैर छूने की धती है।

काफी पीते हुए तुली न कहा—भुवन, एक रिक्वस्ट है आपसे, कल माया का बथ डे है और आपका जरूर आना है।

—मेरा थीसिस सब्मिट करन का टाइम है। सिर्फ रुचि के पहुच जान से नही चलेगा? भुवन ने यह महज बहाना नहीं किया था।

तुली तत्काल कुछ न कह सकी, मगर फिर निहायत ईमानदारी से बोली—माया लाइक्स यू वरी मच! आग आपकी मरजी।

चलते हुए माया न उनके सामन रुककर इतना ही कहा—दस मिनट मिलने पर भी आ जाइयगा। और दरवाजे म खडी होकर झटके स यह कहकर निकल गयी—एड प्लीज, नो प्रजेंट!

अगले दिन शाम को सास के भी चलने का सवाद सुनकर उन्ह आश्चय हुआ। कट्टरपथी न होते हुए भी गिरज और मास मदिरा वाली जगहों का व निषिद्ध मानती थी।

गिरजे से माया पहल ही हो आयी थी। तुली क बठकखान म फादर मास्नोनी और और अपन परिवार क सिवा सिफ एक अतिथि को पाकर उन्ह निचिन्त लगा। वह एक कृश, अकालवृद्ध मगर ओजस्वी मुखमडल वाली महिला थी, जिसे दखकर यह कहना भी असभव था कि वह अपने दिनो म कभी सुदर रही होगी। किंतु तब तो व एक शब्द भी बोलन योग्य न बचे, जब वद्धा का हाथ पकडकर धीरे धीरे उसे उनके पास लाकर वह बोली—मा, य भुवन है जती नीलू के पिता!

और मा न खुरदुरी, बढगी पुरबी म कहा—जियत रहो, बेटा!

—कब आयी आप? उन्होंने किसी तरह पूछा।

—परौं, बेटा, मा ने कहा। बिटिया लिही के ब़दडे भी है बडा दिन भी, चली आओ! सो अठवाडे को आ गयी तुम सब भल लाग हो,बटा! बिटिया का तुमम दख खुस हुई।

—ईश्वर की कृपा है! व बोले।

भोजन परसा जाता देख उन्होंने तुली से पूछा—डाक्टर नहीं आयेंग?

—नही! तुली किंचित कटुता से बोली व ड्रिक्स बगर खाना नहीं खात, इसलिए उन्ह व्हिस्की भेज दी गयी है। उसके बाद खा लेंग।

मेज पर जब उन्होंन मासाहार भी न देखा, तो व एकदम समझ गय

कि माया ने किस प्रकार उनकी सास को आने पर राजी किया होगा। और भोजन समाप्त होने पर किसी पल तुली को एक कोने में अकेला पाकर उन्होंने कहा—मुझे अफसोस है कि मेरी सासजी की वजह से डाक्टर साहब का बायकाट करना पड़ा।

तुली ने उसांस भरकर कहा—मेरी बेवकूफी थी, डियर फादर हुसैन, जो मैंने समझा कि तुम मानसमान नहीं ताड़ सकोगे। फिर भी, जो आदमी एक दिन के लिए भी अपना कार्यक्रम नहीं बदल सकता, उसके लिए अफसोस की कोई बात नहीं होनी होनी चाहिये।

—आपकी हिंदी इधर काफी अच्छी हो गयी है! भुवन ने असुविधा के भाव दबाते हुये कहा।

फादर मास्कोना ने तब रिक्ट आकर विदा मांगी। माया ने उन्हें बरामदे में छोड़ दिया।

थोड़ी देर बाद दो गुट बन गये। उसकी सास, जेठी, बड़ी, मामी और माया की माताजी चटाइयों से उठकर बरामदे में बैठीं जहां किन बातों में खूब मस्त और व्यस्त थीं। तुली और भुवन बैठक में ही थे। फिर जब ने भीतर झांका तो तुली भी उठकर बाहर चली गयी।

—जन्मदिन मुबारक हो, माया! भुवन ने कहा।

आपको हर बात का अंदाज है! माया ने मुसकराकर कहा। मैं जानती थी कि आप ये शब्द कहने की रस्म निभायेंगे जरूर—और तब मैं भी कहूंगी, थैंक्स। मगर कब, इसका मुझे अंदाजा नहीं था।

भुवन ने मुसकान के अलावा कोई प्रतिक्रिया नहीं की।

माया ने कुछ क्षण उन्हें और कुछ क्षण बैठक में इधर-उधर देखते हुए उनके बोलने प्रतीक्षा की, अंत में खुद ही बोली—एक बात पूछनी थी आपसे, बस हां।

—क्या?

—मैं साइकालोजी से एम ए करना चाहती हूं। उसमें आप मेरे लिए कुछ भी कर सकेंगे?

अचानक भुवन ने महसूस किया कि फिरंगी क्रिया-कलापों वाली ये तीनों महिलाएं उन्हें हृदय से महत्व और सम्मान देती हैं। उनकी सामाजिक हैसियत

जानत हुए भी ये महिलाए जिनके कैसराबाद मे डके बज रह हैं, उण्ह क्यो जिस तिस तरह अपन बीच किये रहती हू ? माया निरीहतापूवक बोली—मैं यहा किमी को नही जानती मेरा कभी कोई गाइड भी नही रहा । आप मुझे थोडा रास्ता दिखाइये । प्लीज़

उन्होन तय किया कि अपने मन की बातें वह कभी इसी लडकी स करेंगे । कोमल स्वर मे बाले—मुझसे जो भी हो सका करूगा ।

—बस ! इतना ही चाहिये मुझे ! उसन कृतज्ञ स्वर म कहा ।

और घर लौटत हुए आखिर पत्नी से व कह ही उठे—रुचि, ये हसीन औरतें तुम्हारी ही वजह से मुझे भाव दती हैं ।

रुचि कलपकर रह गयी ।—अपने को किसी से छोटा महसूस करन वाले तो तुम कभी नही थे । तुम्ह क्या होता जा रहा है ?

कुछ तो जरूर होता जा रहा था । भुवन बिस्तर मे पडे पडे, पौ फटन तक जगते सोचत रहे—क्या होता जा रहा है ?

और दूसरी तरफ रुचि चकित और दुखी होती रही

सुबह रुचि ने गिडगिडाकर कहा—दखो जो मन मे है वह निकाल दो । नही ता मैं

इतने बरसा म पहली बार भुवन ने प्रिया की आखो म आसू दख थे । दहल उठे । खूब ईमानदारी से जवाब तलाशने लगे ।—मेरे मन म कुछ नही है रुचि । पता नही क्यो, इधर बेसहारा सा हाने का एहसास हान लगा है, बस !

★

पी एच डी मिल गयी । भुवन की बलया ली गयी । और उन्हान अचानक अपन आपको लक्चरार बनन की प्रतीक्षा म बेकरार पाया ।

मगर वार्षिक परीक्षाओ के रिजल्ट निकले तो भुवन और उनक साथिया के पैरो तले से मानो जमीन खिसक गयी प्राइमरी के पास छात्रा का सख्या म बाइस प्रतिशत कमी आ गयी थी और ऊपर क दर्जों म औसतन बारह तरह प्रतिशत । मनजिग कमिटी न सारे स्टाफ को बुलाकर कवायद करावा डाला । भुवन न अपन लिए आदश सुना—कम-स कम इस साल आपको इटर कालज मे प्रोमोट नही किया जा सकता ?

न रो भी नही सके । रवि से भी नहीं मह सके ।

उनके सामने ही एक नया लेक्चरार साइकालाजी के लिए भरती कर लिया गया । प्रिंसिपल भटनागर न दिलासा दिया—अगले साल सही, भुवन ! तुम्हारी मंजिल ता इसस भी ऊची है ।

मगर इसके बाद भुवन कभी स्वस्थ चित्त नहीं रह सके ।

★

नये बरस के दाखिले हुए ता भुवन न देखा कि पहले दूसरे दर्जों म सब मैले-ही-मले चेहर हैं । उलीच और त्यागे हुए—बेसहारा !

अब भुवन अपनी पढाई से फारिग थे । पढाते और खाली वक्त म पडे पडे सोचते रहते । उधर मिसेज तुली बहुत व्यस्त हो गयी थी । छात्रा की भरमार था लेकर परेशान रहने लगी थीं । जिन विद्यार्थियो को उन्होंने हापुड ले जाकर प्राइमरी पास करवा दी थी, उनमे से अधिकाश के माता पिता व अभिभावको ने उन्ह अगला दर्जा खोलने पर मजबूर कर दिया । उन्होंने जन इच्छा के आगे नत मस्तक होकर अपना स्टाफ और बढा लिया और सबस अपील की कि अब सस्था का रिकग्नाइज करवाने म उनकी मदद करें । और भुवन न देखा कि मेजर यादव एम डी एम, एम एल ए, सभी परे मन स इस बात के लिए दौड धूप कर रह हैं—लखनऊ और दिल्ली तक । माया ने एम ए साइकालाजी के फाम वगैरह भर डाले थे, अत वह प्राय रोज आती थी और सारी खबरें दे जाती थी ।

उन्हीं दिनो भुवन ने पाया कि सहसा व विद्यार्थियो पर क्रुद्ध होन लगे है । एक दिन चौथी के तीन चार लडको को उन्होंने कच्छे म कुरता डाले देखा, तो टोका, उनम से एक फूल सिंह न सीधा सा तर्क दिया—वो इगलिश स्कूल म भी तो ऐसे ही पहनते हैं !

और शायद जिंदगी म पहली बार भुवन न कसकर अपन कुछ विद्यार्थियो की मरम्मत की और उदास हो गये ।

पर कुछ दिन बाद व बुरी तरह आहत हो उठे

हुआ या कि इसी फूल सिंह का एक भाई, बहुत छोटा, नाहर सिंह दूसर दर्जे मे पढता था । उन्होंने हिदायत दे रखी थी—इम्तहान नजदीक है, बच्चो ! छुट्टी के बाद शहर मे ज्यादा मत भटका करो । सीधे घर जाया करो ! इसलिए

कि बहुत से बच्चे स्कूल से छूटकर काथलिक गिरजे और चौधरी भवन के गेट पर खडे हो जाते थे और डिवाइन होम के साफ-सुथरे, बावर्दी बच्चो को छूटकर निकलते देखने का इतजार करते रहते थे। निश्चय ही यह दृश्य उनमे हीनता की भावनाए भी जगाता था

उस दिन हाई स्कूल के अपने साथी गयाप्रसाद दुबे के साथ व घर लौट रह थे, तो उन्होंने देखा कि फूल सिंह अपने कुछ साथियो और नाहर के साथ चौधरी भवन के बाहर बैठा, ब्लेड से अपने बस्ते का झोला काट-काटकर टाइया तैयार कर रहा है। एक 'टाई' उसके छोटे भाई ने पहन रखी थी।

भुवन यह कौतुक देखकर साइकल से उतर गये। सारे लडके तुरत भाग गये। पर नन्हा नाहर सकपकाकर भय के मारे, जड हो उठा। फूल सिंह दो कदम दूर ठिठका, और फिर चेतावनी देता हुआ ताबडतोड भागने लगा—मास्टर, मेरे भाई को मारा तो तेरी मया मरेगी! खबरदार!

इस पर गयाप्रसाद दुबे ने झट साइकल दौडायी और सडक पर ही फूल सिंह की भयकर पिटाई कर डाली फूल सिंह ने आखो के आसू पोछते पोछते जग का ऐलान कर दिया—देखियो, साले, मास्टर के बच्चे! मजा चखाऊगा!

अगले दिन से फूल सिंह और नाहर सिंह ने स्कूल आना ही बद कर दिया। भुवन के मन म अनवरत कसक रहने लगी।

★

मार्च आते आते भुवन स्थायी रूप से मानो घबराये-से रहने लगे। परीक्षाओ के परिणाम उनके सामने एकदम साफ हो उठे। और इन परिणामो का परिणाम भी।

मिसेज लूली ने आकर मिन्नत की—भुवन साहब मैं भीख मागने आयी हू। माया इम्तहान देन जायेगी। महीने भर के लिए रुचि उधार द दीजिय। शाम को फोर्थ और फिफ्थ के बच्चो को

भुवन गिडगिडा उठे—मैं आपके बच्चो का दुश्मन नहीं हू मोनिका। मेहरबानी करके शर्मिंदा न करें। रुचि जाओ न यार!

सबके सारे-के-सारे इम्तहान निबट गये। छुट्टिया के खाली दिन आये। नित्यानद की प्राइमरी का बुरा हाल हो गया। मनेजर न उन्हे बुलाकर सारे दिये गये आश्वासन वापस ल लिये।

प्रिंसिपल भटनागर ने दुखी स्वर मे पूछा—यह क्या है, भुवन ?

वे फूट पड़े—सर, आप फेल होने वाले बच्चो की गिनती कीजिये। उतने ही हैं, जितने हमेशा, हर साल होते थे। पास होने वाले कम हो गये हैं।

—मतलब ?

—डिवाइन होम !

प्रिंसिपल साहब न समझते हुए घूरा।

—और सर, अब बड़ी क्लासो पर भी असर पड़ेगा।

—ऐसा हुआ तो तुम्हारा क्या होगा ? मैं किस मुह से तुम्हे निकालकर अपने यहा लाऊगा ?

भुवन चुप रह गये।

उस साल उनकी इटर की पार्ट-टाइमी भी छिन गयी।

और तभी एक भयावह खबर आयी—बजरिया लालचद 'लाल' !

—मेम साहब ने, गुरु, पाच हजार डोनेशन माँग लिया है !

—क्या ! रिश्वत ? भुवन चौंके।

—जो भी हो ! और सबसे माग रही हैं।

—खोलकर बताओ न, यार !

पर जो लालचद नही बता सका, वह उन्हे कुछ दिन बाद मालूम पड गया कसरावाद के जिम्मेदार और प्रभावशाली नागरिको की दौड धूप रग लायी थी, और सोने मे सुहागे का काम किया था मिसेज तुली की सक्रियता और चारु व्यक्तित्व ने नये साल से डिवाइन होम बाकायदा जूनियर पब्लिक स्कूल के रूप मे खुल रहा था। सरकारी अनुमति और अनुदान एक साथ आये थे। मगर जो बात भुवन को परेशान कर गयी, और जिसकी तरफ वाह वाह में मग्न लोगो को ध्यान तक देने की फुरसत नही मिली, वह यह थी कि कार्डिनल ऑव मेरठ ने कार्थलिक गिरजे के पीछे वाला मैदान डिवाइन होम की इमारत बनाने के लिए दान दे दिया था। चार सौ विद्यार्थियो लायक फर्नीचर जुटाने के लिए कुछ सेठो ने साठ हजार रुपये जुटा दिये और—इसमे से एक नित्यानद मिशन के मनेजर लाला खूबचद अग्रवाल भी थे।

मिसेज तुली पूरे मई शहर से बाहर, लखनऊ और दिल्ली के दरवाजे खट-

घटाती रही। जून के पहले हफ्ते मे धाड धाड करती पहले की तरह ही, एक दिन आ धमकी।

भुवन उन्हे बधाई देते-देते सहसा सजल हो उठे।

—क्या हुआ ? व चकित रह गयी, और रुचि चौक उठी।

—आय'म ग्लैड' मोना ! वे बोले। मगर किसी ने उनका यकीन नही किया।

मिसज तुली बताती रही। ८०० ५० ८०० ७५ ९५० ९५ १०५० का 'टॅटटिव' ग्रेड फिक्स करवाना चाहती हैं व और तमाम बातें आखिर उन्हाने कह ही दिया—देखो भुवन, यू आर मोर दन ए ब्रदर टु मी, एड रुचि इज मोर दन ए सिस्टर अब तो रुचि को मेरे यहा भेज दो ! मैं उसे वाइस प्रिंसिपल बनाने का सपना देख रही हू। आखिर तुम किस बात से नाराज हो ?

—यकीन मानियें, इस बारे मे रुचि को मेरी इजाजत लेने की जरूरत नही है।

—तुम शायद सच ही कहते होगे। मगर सभी जानते हैं कि समथिग सम व्हेयर हट स यू। नाउ व्हाटस इट ? तुम्हे मेरे यहा का क्या पसद नही है ? क्या मैं तुम्हे गलत औरत लगती हू ?

भुवन न क्षमा चाहते हुए, व्याकुलता, से मिसेज तुली के दोनो हाथ अपने हाथो मे दबा लिये—प्लीज, मोनिका, मुझे यों न फटकारिये। और उन्होंने पावनतम आश्वासन दिया—बल्कि आप मेरे नजदीक एक आदर्श महिला हैं।

—थैंक्यू भुवन ! आइ विलीव यू प्लीज थिंक आवर माइ रिक्वस्ट ! अनफाचूनटली, देयर इज नो टाइम नाउ एड दे हैव पुट मी अडर लाटस ऑव रूल्स एड रेगुलेशस

व चली गयी। भुवन सोचते रहे।

रात को बच्चा के सोने के बाद व पत्नी से बोले—रुचि, मिसेज तुली की बात मान लो !

रुचि ने उनके सीने मे कान लगाकर कहा—तुम मुह से तो कह रहे हो पर तुम्हारा दिल आज उस तरह स नही धडक रहा, जिस तरह खुशी के मौकों पर अक्सर धडका करता था।

—दिल ही तो है, यार ! कभी-कभी दिमाग का साथ नही देता।

—तो बताते क्यो नही क्या है तुम्हारे दिमाग म ? उसने उन्हे झकझोरा। क्या भरा पड़ा है उसमे पिछले डेढ़ साल से ?

भुवन ने गौर किया, और तब पाया कि रुचि भी यह नही समझ सकेगी कि डिवाइन होम न उन्हे क्या अशात कर रखा है। कोमल स्वर म बोले—सच मानो, मैं चगा होने की कोशिश करूगा।

★

पर बहुत दिनो तक भुवन चगे नही हो सके। बल्कि और सतप्त रहने लगे। भरसक कोशिश से व किसी तरह रुचि को यही समझा पाये कि उसकी तरक्की से, उसके बड़े होने से, व खुद को छोटा महसूस नही करते गो कि तुली के पास इसका भी इलाज था—आप भी मेरे यहा आ जाइये ! पर इसे स्वीकारना उनके लिए असभव था।

डिवाइन होम का उदघाटन और महिला वदिक से रुचि की विदाई का समारोह करीब करीब एक साथ हुए। विदाई समारोह म वे सामाजिक आचार निभाने को ही गये पर गरीब लडकियो के चेहरे पढते रहे। रहे दुर्भाग्य से वह बडी लोकप्रिय अध्यापिका थी। अत अनेक लडकिया रो पडी। वे लौटती बार उसके कान म फुसफुसाये—ऐसी विदाई शायद किसी भी पब्लिक स्कूल के बच्चे नही देते, रुचि !

—ठीक कहते हो ! रुचि ने सच्चे दिल से स्वीकारा। पर कितनी ही भाव-भीनी चीजें छोडनी पड जाती हैं !

—कोशिश करना कि ये गरीब बच्चे तुम्हे हमेशा याद रहे।

रुचि ने उन्हे खूब ध्यान से देखा, और बोली—तम्हारे दिल म जो चुभता रहा है उसका कुछ एहसास मुझे था, जो आज ठीक साबित हुआ। पर क्या हम अकेले इस तूफान का मुकाबला कर सकते हैं ?

भुवन पत्नी के सामने चुप रह गये, पर तूफान का मुकाबला करने की कोशिश उन्होंने जारी रखी—छिपे छिपे।

हर यार दोस्त से तजकरा करते, समर्थों को टोहते—एक स्कूल पब्लिक स्कूल की तर्ज पर खोला जाये। छोटे बच्चो के लिए। हिंदी मीडियम का।

—शिशु मदिर जसा ? सुनने वाले हसनाबाद के एक तथाकथिक 'हिंदू' दल के स्कूल का हवाला देकर पूछते ।

वे सकोच स कहते—हा पर इसमे क्या बुराई है ?

और उन्हे दस तरह की आलोचनाए सुनने को मिलती । प्रतिक्रियावादी, पोगा, कट्टर एक आध समझदार दोस्त न कायल होने के बावजूद कहा—भूलते हो ! अगरेजी स्कूल का जादू कुछ और है । उसके लिए बडे लोगो की तिजोरिया खुल जाती हैं, पर जो तुम कह रहे हो । उसके बदले मे लेक्चर से ज्यादा कुछ नही पाओगे ।

खूब सोचकर उन्होने अपने एक पुराने सहपाठी, मिल मालिक धर्मवीर के पास जाने का फैसला किया ।

—क्या हाल हैं तेरे, भुवन ! बीरू बडी सहृदयता से मिला । उसका छोटा भाई नरेंद्र वीर उनका विद्यार्थी रह चुका था । उसने गुरु के पर छुए । करीने से बैठकर, थोडी गपशप करके भुवन बोले—एक मतलब से आया हू, बीरू

और उन्होने सब बता दिया । सुनकर बीरू स्तब्ध रह गया ।—तुझे पता है, हमारे यहा के सारे बच्चे डिवाइन होम मे है, और हमने भी वहा चदे दिये हैं ?

—खूबचद न भी दिये हैं, हालाकि मैनेजर वह नित्यानद का है ।

—खूबचद प्रोफेशनल लीडर है । बहरहाल, दूसरी मुश्किल । तूने कसे मान लिया कि जो स्कूल तुम खोलोगे, उसम बच्चे डिवाइन होम जसे ही आयेंग ?

—मैं कम पैसे वाले मा बाप के बच्चा के लिए बेहतरीन तालीम की बात कर रहा हू ।

—अगर तू थोडा बहुत भी लीडर फीडर या पोलिटिकल माइडिड होता तो समझ जाता कि हवा मे लड रहा है और कुछ ही देर म बीरू ने साबित कर दिया कि जो मा-बाप बच्चों को बढिया तालीम दिला सकते हैं, उन्हें पब्लिक स्कूल के अलावा कुछ पसद नही आयगा ।—न होने की बात दूसरी है । जसे हमारे तुम्हारे वक्त म नही था । अब है तो लोग हरगिज उसका इस्तमाल करेंगे । तू क्या समझता है, *नौकरियों के बाजार म शिशु मदिर के* लडके चलेंगे या डिवाइन होम के ?

भुवन सुन्न बठे रह ।

—डार्लिंग, जो काम तू हाथ मे लेने की सोच रहा है, वह हमारा-तुम्हारा काम नही है । हाकिम और हुकूमत का है । तू मुझे अपना दुख बता

व कुछ नही बोले

शहर के धुर उस छोर से, बीरू से मिलकर भुवन लौट तो उनके दिमाग मे एक भी विचार नही था । राजमहल रोड के किनारे किनारे एक मैदान-सा था, जिसम हस्बमामूल एक धुआनुमा शाम का माहौल उतरने लगा था । धूप ढल चुकी थी, साये साथ छोडन लगे थे । पार, मिरजापालान स्थित, अपन घर जाने के लिए भुवन साइकल से उतरकर मैदान लांघने लगे तो अचानक उन्ह लगा कि व व्यर्थ मे खिन्न और क्षुब्ध हैं, और न सिर्फ अपना स्वास्थ्य का नुक-सान कर रहे हैं, बल्कि पत्नी को भी अकारण सताप द रहे हैं ।

—मुझे दुनिया बदलनी है, या जिदगी काटनी है और बाल-बच्चों को सुख पहुचाना है ? उन्होंने अपन आपसे प्रश्न किया और तय पाया कि दुनिया को सवारना उनका काम नही है ।

कई दिनो तक भुवन क मन म द्वद्व छिडा रहा—एक निरथक और अका रण द्वद्व, जिसका जिक्र भी नही किया जा सकता था । बडे दिनो की छुट्टियो मे डिवाइन होम ने अपन यहा उत्सव किया तो लखनऊ से शिक्षा मत्री भी आये । उनका मन हुआ कि एक बार मत्री से जाकर अपनी तकलीफ कह, मगर खूब गौर करने पर उन्होंने पाया कि जब तक अपना वतमान सब कुछ वे छोड छाड नही देते, तब तक कुछ भी कहने लायक नही हैं ।

अलबत्ता अगले दिन व माया सिंह से चार बातें चला बठे । उन्होंने वितृष्णा से पूछा—क्या करोगी यह एमे-वमे करके ?

उसने सादगी से कहा—नना के कालेज मे लेक्चरार बनूगी ।

—यानी कई-एक डिवाइन होम खुलवाओगी ?

माया उनके स्वर की तिक्तता अनुभव करके स्तब्ध रह गयी । हार्दिक दुख से बोली—मैं आज तक नही समझ सकी कि आप हम लोगो के काम से क्यो नफरत करते हैं ? इसलिए कि आपके यहा अच्छे विद्यार्थी नही हैं ?

—ऐसा नही, माया । मुझे सिफ एक ही तकलीफ है कि तुम लोग नित्या-नद की पूरी प्राइमरी को दाखिले नही देते । और अब जो बच गये हैं, वे

से लगने लगे हैं। शायद एक नया पब्लिक स्कूल खुलने पर हर बार हर जगह ऐसा ही होता है।

—यही मुश्किल है, भुवन बाबू। मैं अछूत मा बाप के यहा पैदा हुई थी। हमारे यहा भी नित्यानद जैसा एक स्कूल था। मेरे माता पिता ने बहुत कोशिश की पर मैं अछूत ही बनी रही। फिर हम लोगो को वही करना पडा जिसे हमारे यहा बहुत खराब, अनैतिक मानते है। मगर तब मैं पढ भी गयी और अछूत भी नही रही।

—क्या ऐसा सबके लिए नही हो सकता ? क्या गिरजाघर वाले सारे गरीब बच्चो को अपना प्रसाद नही दे सकते ? घूम फिरकर तो दो ही तरह के लोग हैं—गरीब और अमीर। गरीबो को ले जाओ तुम लोग !

माया की आखे चमक उठी—ऐसा हो जाय तो मजा आ जाय, भुवन बाबू। मगर यह उनसे कहना कहना चाहिये जो मेरे और आप जैसे लोगो को, और आपके और हमारे यहा के बच्चो को अपनी अपनी शतरज के हिसाब से आगे-पीछे करते रहते है। कुछ को लडाते, कुछ को हराते और कुछ को मरवाते रहते हैं। गिर्जे के भीतर भी शतरज बिछी है और बाहर भी। आप बाहर वाले हैं। उनसे कहिये कि खेल बद कर दें या चालें बदल दें।

—तो तुम भी यही समझती हो ?

—मैं देशद्रोही नही हू। मिसेज तुली भी नही हैं। हम सबके पास जितना मौका है, जैसा मौका है उसी हिसाब से चलते हैं। कसूर हमारा यहा है कि हम बगावत नही करते। और भला कैसे करे ? सभी लोगो ने अपना सब कुछ छोडकर कभी ऐसा नहीं किया

—जाने दो भुवन ने बेचैनी से उसे टोका। हो सके तो यह, इतनी सी बात जिन्दगी मे कभी भूलना मत। ज्यादातर लोग इसे भूले हुए हैं।

★

रुचि ने पाया कि पति कुछ-कुछ धुने हो गये हैं।

पर भुवन टूट चुके थे।

विद्यार्थियो मे अब उन्हे कोई रुचि नही रह गयी थी। एक ही उन्माद उन पर सवार था कि किसी तरह पत्नी से आगे निकलें। शाम को वे बच्चो से अलग

घूमने निकल जाते। चोरी चोरी अर्जियां लिखते। भेद तब खुला, जब जवाब आने शुरू हुए।

जवाबी चिट्ठियों में से एक दिन एक काल लेटर निकालकर वे बहुत देर तक गुम-सुम रहे। फिर साइकल उठाकर बीरू के यहां गये। पता चला कि वह बाल बच्चों सहित मसूरी गया हुआ है और जून खत्म होने से पहले नहीं आयेगा।

भुवन ने मसूरी का पता लिया, और घर आते ही बोले—रुचि मैं दो तीन दिन के लिए मसूरी जा रहा हूं।

—पूछ रहे हो या खबर दे रहे हो ?

—खबर दे रहा हूं। बहुत जरूरी काम है। और पत्नी के प्रति बरती रुखाई से सिहरकर, तत्काल बोले—एक सिफारिश के लिए जा रहा हूं इससे ज्यादा क्या बताऊं ?

रुचि ने वह काललेटर देखा, जिसने भुवन को इतनी सरगरमी में डाल दिया था, और लौटाते हुए रो पड़ी—आखिर तुमने मुझे माफ नहीं किया !

अठारह घंटे की यात्रा करके, बीरू के पास पहुंचकर उन्होंने सीधे कहा—मुझे सैंडर्स स्कूल से काल लेटर आया है, और तुम्हें मेरी मदद करनी है।

बीरू को राजी करने में काफी मेहनत करनी पड़ी। पर आखिर वे अपने साथ ही उसे ले आये।

इंटरव्यू से महज एक दिन पहले, वे सराबाद रुकते हुए वे बीरू के साथ दिल्ली पहुंचे। घंटे भर के अंदर ही कैपिटल सोसायटी ऑव एजुकेशन के चेयरमन, मिल मालिक बनारसीदास बजाज से उनकी मुलाकात हुई। बीरू से उनके रोजाना के व्यावसायिक संबंध थे। अतः उसने बिना भूमिका के कहा—यह मेरा बचपन का दोस्त है एम ए पी एच डी सैंडर्स स्कूल में कंडिडेट है।

बजाज साहब ने काफी परेशानी जाहिर की—कि इस बार दो एम पी भी बोर्ड में हैं और उनके भी आदमी हैं पर अंत में उन्होंने पक्का आश्वासन दे दिया।

इंटरव्यू के दौरान प्रिंसिपल जार्ज सल्डाना ने सीधे सादे से एम ए पी एच डी भुवनेश्वर दत्त का पलड़ा असाधारण रूप से भारी देखा तो थोड़े उखड़ गये। बहरहाल, उनकी नियुक्ति हो गयी। मिस्टर सल्डाना ने कौतुक के

मारे उन्हें शाम को अपने साथ चाय के लिए रोक लिया। भयाकुल भुवन ने फिर बीरू को साथ ले लिया। बातचीत के दौरान भुवन का भय और मिस्टर सल्डाना की शकाए कुछ कम हुई तो उन्होंने पूछा—एम ए तक की लाचारी तो समझ म आती है, मगर डाक्टरेट के बाद भी आप प्राईमरी स्कूल की हैड-मास्टरी से क्यो चिपके रहे ?

भुवन फिर असवाध स्थिति मे पड गये। नही, नौकरी का कोई भी तलबगार वैसी ऊची, आदर्शाच्छादित बातें नही कर सकता फिर भी उन्होंने भरसक सच ही कहा—मुझे डिग्री कालेज की लेक्चरारशिप मिलने की उम्मीद थी पी एच डी तो पिछले साल ही मिली

—और अब आप किसी बेहतर नौकरी की तलाश नही करेंगे ?

भुवन फिर परेशानी मे पड गये। मगर फिर उन्होने भरसक सच बोल दिया—कम से-कम पसे के लिहाज से अब कोई नौकरी मुझे नही फुसला सकती। दूसरी बातें जब मारी पडेंगी तो

मिस्टर सल्डाना सतुष्ट हो गये।

नियुक्तिपत्र को उन्होने बार-बार पढा ६५० ६५ ६७५ १०० १२७५ डियरनेस एलाउस, यह एलाउस, वह एलाउस उनकी डाक्टरेट का सम्मान करते हुए दो तरक्किया उन्हें नियुक्ति के साथ ही दे दी गयी थी।

पति के आगे निकल जाने पर रुचि हृदय से खुश हुई। उसे विश्वास हो गया कि अब सब ठीक हो गया है। उनके इस्तीफे ने पूरे नित्यानद मिशन म बावला मचा दिया। प्रिंसिपल न कहा—यह क्या, भुवन ? डिग्री कालेज म तुम्हे बुलाने की बात मैं कभी नही भूला। और इस बार मैं तुम्हारे लिए लडने ही वाला था।

—किसी भी लडाई का कुछ फायदा नही, सर ! हटाइए। भुवन मर्माहत होकर बोले। लडना मुमकिन ही नही मुझे बहुत अच्छी तनख्वाह मिल गयी है

★

उमी स्कूल कालेज का विद्यार्थी और अध्यापक होने के कारण उन्हें मिलने वाले की सख्या बेहिसाब थी। उनसे अलग होना उनके लिए भी पीडाजनक था। पर इस घडी को टालने के लिए उन्होंने नित्यानद के रास्ते तक की तरफ जाना बद कर दिया।

पर दिल्ली वापस करने से एक या दो दिन पहले, एक दिन शाम को घर मे छिपना उनके लिए हरगिज मुमकिन रहा। रुचि ने भीतर वाले कमरे म आकर कहा—पंडित जी आये हैं!

—क्या! भुवन घबरा गये।

रिटायर होने क कुछ ही दिन बाद प जनादन गोस्वामी की आंखों की रोशनी चली गयी थी। भुवन लपकते हुए बैठक म आये तो उन्होंने पाया कि गुरुजी अब छडी लेकर चलते हैं, और आहट की आवाज सुनने के लिए उनकी ज्योतिहीन आखें विपरीत दिशा मे स्थिर हो जाती हैं भुवन ने चरण-स्पश किया तो वे शून्य आखें सहसा भर उठी—जा रहे हो, भुवन!

भुवन एक शब्द नही बोल पाये। छटपटा उठे—गुरुजी, देख पाते होते तो कम-से-कम मेरी आखा म झाकते कि मैं किस तरह जा रहा हू

—शहर से कहा जा रहा हू! भुवन भरसक काबू रखकर बोले।

—ओह बूढे गुरु के कठ से आह निकल गयी। पर तत्काल सभल गये। मैं यो ही पूछने चला आया था बेटा! कोई आकर बोला कि तुम्हे तनख्वाह खूब अच्छी मिली है। सोचा, बधाई दे दू जरा सर तो दो छू लू

भुवन उनकी गोद म गिर गये।

चाय-नाश्ता पडा ही रहा। रुचि ने साफ महसूस किया कि अनुरोध और वास्ता देकर भी वृद्ध को कुछ खाने के लिए मजबूर करना नशसता होगी। ज्यादातर वक्त गुरु शिष्य चुप ही बठे रहे।

अत मे गोस्वामी बोले—जाओ, बेटा! भला कौन कब तक रुक सकेगा? फिर जेब से दवा की एक पुडिया निकालकर रुचि से बोले—बेटी, एक कटोरा गरम पानी दे दो।

रुचि फुरती से भीतर हुई तो उन्होने फुसफुसाकर कहा—मुझसे सालिगराम न जिक्र किया था कि तुमने शिशु मदिर सा कुछ चलाने के लिए उससे जमीन मागी है थोडी कोशिश मैं भी करू?

भुवन तिक्त हो उठे— कुछ नही होगा उससे!

गोस्वामी उनकी ऐसी तेजजवाबी से सन्न रह गये। फिर कुछ नही बोले। जाते जाते विलाप सा कर उठे— तुम्हे मैं रोक नही सकता, भुवन। अब वक्त ही

किसी को रुकने नहीं देता पर जरूरत पड़ने पर मुझे सहयोग देना

उस दिन जनार्दन गोस्वामी चले गये। मगर कई महीने बाद स्थायी संताप बन गये। सालिगराम से उन्होंने बिना करार वरार के वह जमीन ले ली और घर घर विद्यालय खोलने के लिए माली फैलाकर चंदा मांगने चल पड़े। उन्होंने सरे-आम डिवाइन होम के खिलाफ जेहाद छेड़ दिया

भुवन दिन रात अशांति और अपराध चेतना से जूझने लगे।

आखिर एक दिन उन्होंने पत्नी से कहा—रुचि, इस शहर में मैं अब नहीं रह सकता।

रुचि अब तक पति का समूचा कष्ट भांप चुकी थी। बोली—दिल्ली में मकान देख लो। मैं रोज कसराबाद आ जाया करूंगी।

★

वसंत चढ़ते ही विदाई का दिन आ गया विदा कसराबाद! अलविदा गर्दिश! उस दिन सामान बांधते बांधते रुचि को भी बड़ा कष्ट हुआ। पति से बोली—हम लोगों की आदत घर बसाने की तो रही है, डेरे डंडे उठाने की नहीं

—वक्त बदल गया है रुचि। फालतू अफसोस मत करो!

कुछ देर बाद रुचि फिर बोल पड़ी—हम दोनों कायदे से पढ़ लिख गये, इसलिए सब कुछ बदलने की सोच गये। वरना कुछ न कर पाते।

पता नहीं क्यों भुवन के भीतर आग दहकने लगी।

★

सामान नये मकान में पहुंचाते पहुंचाते दुपहर भर लग गया। इतवार था, अंतिम विदा बेला में, स्टेशन पर बाकी मित्र मंडुआ के साथ मिसेज तुली भी आयीं और माया सिंह भी। और पता नहीं कैसे, गयाप्रसाद दुबे के साथ, छड़ी टेकते टेकते पंडित जनार्दन गोस्वामी भी चले आये। अथाह पीड़ा और भक्ति से अभिभूत होकर भुवन उनके घुटनों पर लोट गये।

वे क्षण असाधारण मौन के थे। फिर भी, पता नहीं कौन-सी आहट सुनने के प्रयत्न में जर्जर वृद्ध की आंखें विपरीत दिशा में गड़ गयीं।

—अंत में अस्फुट स्वर में वे गुदगुदे बोले

—देखना भुवन कोई अभागा शायद इधर आने को भी तैयार मिले!

ब्लैकमेलर की चिट्ठी

सुनिय श्रीमती वर्मा,

कल शाम गुस्से म आकर आपन कुछ ज्यादा कह दिया। बात तीखी होने के साथ साथ सन्त और वेधक भी थी। मुझे बेहद तकलीफ हुई, लेकिन फिर भी मुझे आश्चय हुआ। इसलिए कि आपन सच कहा था और यह सच मेरे प्रति कुछ सहानुभूतिपरक था। ऐसा मैं इसलिए मान ले रहा हूं कि उस समय आप मेरे प्रति घृणा से भरी हुई थी। घणा के आवेग म झूठ नहीं बोला जा सकता, या कम से कम सत्य को रोक पाना असभव होता है। अपनी मडली की सहेलिया को लक्ष्य करते हुए आपन कहा था, 'जान इस अधम का मौत न आन का क्या कारण है और क्यो बेचारे अपने मा बाप को स्वग म भी नींद नही लेने द रहा! एक हरामजाद, आज मैं तुझे मजा चखाती हू!"

अभी मैं आपकी बोली हुई अगरजी म गलतिया ही ढूढ रहा था कि शतरज की गोट जैसी एडी वाला आपका सैंडिल मेरी कनपटी को छीलता हुआ गुजर गया था। उसके गुजरते ही दूसरा सडिल मेरी ठुडडी का फोडता हुआ, टकरा कर, मरे पास ही गिर गया था। फिर आपने एक ढेला फेंककर मेरी छाती पर ठोक दिया एक और ढेले स मेरी हथेली म भयकर मोच आ गयी थी। बडी मुश्किल से मैंन अपनी चीख रोकी थी। लकिन मर खाली पेट पर आपन जो लात मारी थी, वह सबसे भयकर थी। गिर जाना ही था तब मुझे, मगर गिरन म भूल हुई और आपका एक सडिल मेरी दह क नीचे दब गया। उसकी सजा

पन बहुत ज्यादा दी। एक सडिल पहनकर दूसरे को ढूढती हुई आप उन्मत्त उठी थी। मेरी चरम विपत्ति के कारण आपके दायें पैर म सैंडिल था और ां परे खिसकाने के लिए उसी से आपने मेरे होठो पर वार कर दिया। परे मैं खिसक ही क्या पाता, हा, तीसरी या चौथी चोट पर अपना रोना मुझसे का नही जा सका और मजबूरन, शायद तरस खाकर, आपको अपन हाथा से ा छूना पडा यह बात अलग है। आप जानती तो थी न कि एडिया पर मोटे हे की परतें चढी हुई है।

बाद म जब हाथ झाडते हुए मेरे ऊपर खडे होकर आपन अपनी मडली को ाते हुए कहा था, "पता नही भगवान ऐसे कपूतो को जिंदा ही क्यो रख डता है। इस बदजात के मा बाप और भाई-बहन क्या बताऊ मिसज वार्मा" और यू कहते कहते जब आप दूर निकल गयी थी और आपकी ाज के बद होन के साथ-साथ आपकी सखियो की वलडन वलडन की ाजें और बधाई के शब्दा का शोर स्तब्ध सद वातावरण म कहकहा के साथ जारो से सुनायी देन लगा था। तो सच कहू मिसेज वर्मा, मेरे परिवार के ा जिन अक्रूर शब्दो का प्रयोग आपने किया था, उनके लिए मैं आपके प्रति नता महसूस कर रहा था। मैं नही जानता, मेरी आखें आज लगातार ा भरी क्या आ रही हैं। ये चोटें और नीली देह लिये बाहर जाने का मन हा रहा।

और मैं सच बताऊ आपका मिसेज वमा, वह सब मैंने नही कहा था। वसा मैं नही कहता। कह पाता ही नही और आपका तो अपनी बुद्धि के णतम सकट म भी नही कह पाता, क्योकि आपके और अपनी मा के चेहरा मिलान मैं एक जमाने से करता आ रहा हू। जब जब, तब मैं आपको ा था, बरबस चाहने लगता था कि मेरी मा के चेहरे की झुरिया उड ;, कोई चमत्कार हो या कायाकल्प की कोई प्रक्रिया जारी हो जाय, जिससे उनके सफेद बाल काले हो जायें। अगर ऐसा हो पाता, तो मरी माताजी आप जसी ही खूबसूरत और स्वस्थ हो जाती। उनम उत्साह होता, इच्छा ा माधुयमय स्निग्धता होती, चिडचिडापन और खोया खोयापन न हाता।

लकिन वह फबती तो रवि ने कसी थी। मुझे बुखार था और उस पुलिया

पर मैं यह सोचकर लेटा हुआ था कि यहा एकात है और उस तरफ इस घन-घोर सर्दी कुहासे म कोई नही आयेगा। पर शनो महरी का पीछा करता हुआ रवि उधर आ निकला। शनो घबराई हुई थी। क्योकि अगले ही क्षण उसके साथ थोडी बहुत हरकत हो सकती थी। सो रवि को मैंने बुला लिया। वार होकर वह मेरे पास आ गया था। रईस का बेटा कीमती गरम कपडा से सजा-धजा, अपने अकेलेपन की नहूसत को फोडने के लिए मैंने उसे छेडा। तभी आप लोग उधर आयी। उसने मुझसे कल्ला लेते हुए मुझे एक ऐसा जवाब दिया, जिसका मतलब आपको ही लेकर था और जो आपको जानबूझ कर सुनाई देना था। सिटपिटाहट म आप जो कई क्षण खडी रह गयी, उसी म, कुहास म वह दूर जा निकला था। और वह सब हो गया।

सुबह वह चिढाने के लिए मुझे देखने आया था। उसने बताया कि मल रोड पर ही आप लोग उसे मिल गये थे। उसने आपसे 'हल्लो आटी ?' कहा था और अपना कौतुक दबाते हुए आपका मूड खराब होने का कारण भी पूछा था। आपने उसे सब कुछ बता दिया। उफ, मिसेज वर्मा, यह तो आपने मुझे मारने से भी बढकर बज्र काम किया! उसने सबको बता दिया है। क्या आप मानेंगी कि इस वजह से मुझे निहायत शर्म झेलनी पड रही है? कितने ही लोग आ चुके हैं सुबह से मुझे देखने को! रवि, ठीक है, आपको 'आटी' कहता है, मगर आपकी भतीजी इदु को 'डार्लिंग' के सबोधन से चिटिठया लिखता है। उसकी बहन इदु के साथ पढती है न? वह उनके घर जाती है अपनी सहेली के साथ और वह अपनी बहन के साथ आपके यहा आता है

✶

हा, ठीक है कि मेरे पिता स्वर्गवासी हो चुके हैं, मगर मेरी माताजी को आप लोग व्यर्थ ही मरा हुआ समझा करते हैं। मेरे भैया भी जिंदा हैं और पहले से निश्चय ही बेहतर जिंदगी बिता रहे हैं हालाकि मुझे पता नहीं कि सहारनपुर से बदलकर कहा गये, लेकिन जीजी को मालूम है और जीजी का पता मुझे मालूम है। उफ जब आप लोग बिना मुझसे पूछे यह कह देते हैं कि वह अधेड व्यक्ति के साथ भाग गयी, तो मेरे मन पर कैसी कैसी गुजरती है! उन दिनो सभी यह समझते थे कि मेरी दीदी की बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है और वह उस अधेड, व्यभिचारी, शराबी और अच्छी तनख्वाह वाले आदमी के साथ किसी

लालच म लगी हुइ है । हम घर वाले भी तब उस पर शर्मिंदा और क्रुद्ध थे। लेकिन वह आदमी उसके प्रति किस तरह और कितना समर्पित था । वे लोग सही मायना म कितना प्यार करत थे और अब वे लोग कितने सुखी है, य सारी बातें जानकर भ्रात धारणाओ पर आश्रित आपके विश्वास को कितनी ठेस लगेगी मैं इसमे दिमाग नही खपाना चाहता ।

उन दोना म से मुझे कोई भी नही चाहता—दीदी जीजाजी के कारण, क्योकि उन्ह पुरुष जाति स सख्त चिढ है और भैया मेरी सारी सभावनाओ के नष्ट हो जाने के कारण । फिर भी अपनी आवारगी को पोषित कर पाने की क्षमता मैं लिय हुए हू । यह क्षमता इसीलिए बनी हुई है कि व दोना अब बुनियादी अर्थों मे औसत श्रेणी के सुखी लोग हैं । मा की मुझे कितनी याद आती है मिसेज वर्मा ! आप मुझे आज्ञा देंगी कि मैं आपको आटी कहू ? सभवत आप भी पूछ सकती हैं कि अगर मुझे मातृत्वमयी चीजो से इतना ही लगाव है, तो अपनी सगी मा के साथ मैंने विश्वासघात क्यो किया ? कितना जटिल है इसका जवाब ! मैं इसके सिवा कुछ नही बता सकता है कि पराजित लोगो से मुझे वितृष्णा होती है और उनके सानिध्य मे मैं बहुत घबराता हू । और आटी, मेरी मा एक शतश पराजित व्यक्तित्व वाली महिला थी । उनकी याद और चुवन मुझे हमेशा इसलिए गिलगिले लगते रहे कि उनम जीवन के प्रति ठसक व अक्खड निहित न हाकर दयनीय स्तर तक भय का भाव भरा हुआ था ।

लेकिन कितनी मजेदार बात है कि अब मुझे माताजी पर गव हाता है क्योकि इस स्थिति म व मुझे ज्यादा पूज्य व स्वाभिमान की प्रतिमा मालूम देती हैं । तीन साल पहले जब मैं एक दुकान के मालिक से झगडा करके एक सौ पच्चीस रुपये की नरसमनशिप छोड आया था त उस दिन बुरी तरह रोते हुए उन्होने मुझसे कहा था कि जब जब पिताजी नही रहे और व मेरे आसरे हुई हैं तो मैं उन्ह भूखा व अपमानपूर्वक मर जाने के लिए मजबूर कर रहा हू । उस दिन हमारे यहाँ दो दिना का अधूरा राशन था, और छोटे छोटे तकादे वालो का जमघट था। इन सबका शान मे आकर मेरी छोटी हुई नौकरी के पास कोई समाधान नही था । चिढकर तब मैंने कहा था, "आपको मरना ही है तो मैं आपको बचा कहा तक सकता हू ?"

मरे एसा कहने का कारण यह था कि अब चाहकर भी मैं उस नौकरी को

पान के लिए मालिक से क्षमा याचना करने जाना नहीं चाहता था—इसलिए भी कि मैंने झगडा उसी की ज्यादती के आधार पर किया था। और उसने मुझसे ज्यादती इसलिए की थी कि वह मेरी हालत को जानता था। इसमें मेरा यह दोष जरूर था कि उसे यह अनधिकृत अधिकार, बिना मेरी इच्छा के मिल जाने पर भी अपनी विपन्नता को क्षमा न करके ही ऐसी उद्दंडता मैंने तीसरी बार की थी। पहले दो बार ऐसा करने पर माताजी को घर में पडे हुए थोडे से कीमती सामान में से अधिकांश औने पौने पर गवा देना पडा था।

अगले दिन से अपनी मशीन पर जब वे दूसरा के कपडे सिलने लगी और रोजगार दफ्तर से जाकर आया की नौकरी करने की अपनी इच्छा दर्ज करवा आयी, तो मैं खून का घूट पीकर गया। और तब मैं बिलकुल जब्त नहीं कर पाया, जब वे मेरे ही एक सहपाठी के यहा उसके संयुक्त परिवार के बच्चो की निगरानी पर नियुक्त हो गयी। अपनी उस नौकरी के शुरू में वे मुझसे अजहद प्रेम करने लगी थी। चुन चुनकर चीजें बनाती थी और मुझे बडे चाव से खिलाने की फिराक मे रहती थी, और मैं भूखा होने के बावजूद थाली पटक दिया करता था। उस दिन वे एक प्रस्ताव लायी थी—कि जिन बच्चो की वे देख भाल करती हैं, उन्ही को पढाने के लिए 'मास्टरजी' चाहिये थे। यह उन्होने साथ में और कहा, 'मेरी बडी साध है कि इस काम को हाथ में लेकर तू फिर से दाखिला ले ले। हम दोनो की मेहनत से जीवन बडे मजे में गुजरेगा।"

मैंने उस दिन न केवल थाली पटकी थी, बल्कि उन्हे गालिया भी सुनायी थी। मैंने उन्हे जवाब दिया था, "अब आपको अच्छी तरह रहने की सूझ रही है, मगर उस समय आपकी यह फुरती कहा गयी थी, जब पिताजी दवाइयो और फलो के अभाव में दम तोड रहे थे? 'उनके मर जाने के बाद मजे से जीवन गुजारने से बढकर आपके लिए शायद अब कोई विचार नही हो सकता। अच्छा हो कि आप अपने जीवन की चिंता करें, मेरा बहाना लेने की कोई जरूरत नही। अगर आप अब भी उस सेठ के यहा नौकरी करेंगी, तो मैं यहा नही रहूगा।'

उन्होने जिद की, तो मैं अपनी धमकी पर पूरा उतर गया। कुछ दिन बाद जब शहर के बाहर से वे मुझे ढूढ लायी और अपनी हार उन्होने कबूल कर ली, तो मैंने देखा कि हम दोनो ही बीमार थे। जगल मे जैसे हम पडे हुए हों। घूट भर पानी के लिए किसी को पुकारा नही कि खूखार जानवर आये नही।

किंतु मै कोप के घातक प्रकोप मे तो तब आया, जब व परम दुखी व मूक तो हो उठी पर मशीन चलाने से बाज न आयी। आंटी, आप तो सिर्फ इतना जानती है कि उस दिन कृतघ्नता की उच्चतम चोटी तक जाकर मैंने अपनी मा को लगभग साधारणिक मार मारी, हालाकि ताज्जुब इस बात का है कि उस घटना के दौरान या उसके बाद आप लोगो म से उनके पास कोई नही आया था। मन कहता है अगर तब आप आती और मुझे इसी तरह सैंडिला से मारती हुई माताजी का बचा ले जाती, ता आज यह सब शायद ऐसा न होता।

★

जब मुझम समझदारी के अकुर फूटने शुरू हुए तभी मैंने अपने आस पास फैले हुए जमाने की प्रवत्तिया म भयकर परिवतनों का आभास पाया था, और इस परिवतन के परिणामस्वरूप मैं अतर्मुखी, मौन साधे रहने वाला भयकर आलोचक, और आचरण म ऊल जलूल हो उठा था। साथ ही वह जमाना मुझे अपने दायरा से बाहर धकेलता चला गया था। आप जानती है न कि उस जमाने मे जमानसार होकर आप भी रह रही थीं। आपके रहन सहन का ढग काफी प्रभावशाली व बाइज्जत था। आपके सपर्क म आने वाले लोग धनक थ, आपके सबध व्यापक थे मगर उनमे हम लोग कही नही थे। मेरे हमउम्र, सहपाठी लडके लडकिया भी मेरी वितृष्णा व शुष्क निष्कर्षों से भरी बातचीत से उकताहट महसूस करते थे और मुझसे बोलने-चालने म रुचि नही लेते थे। सर्वांगीण उपेक्षा से बिधकर मैं क्रुद्ध और विचित्र प्रतिक्रियाओ के शिकजे म फसा हुआ एव सनकी किस्म का स्वाभिमानी छोकरा बनकर रह गया था। मेरे चाट खाकर उपजे हुए इस स्वाभिमान ने लगातार मेरे पहल करने के मादे को कुठित किया। मुझ पर उन दिना आप याद कर सकेंगी दूर से ही आभा देने वाली गभीरता की परत चढ गयी थी जिसके कारण मुझे सारा शहर पहचानने लगा था। मेरे पुराने मित्र शहर म नये आने वाले अपने हमउम्रा का मेरे बारे म कुछ इस चमत्कार से बताते थे कि उनम कौतुक व असमता का भय समा जाता था। उनके ऐसे व्यवहार से कभी कभी मुझे लगता था कि व मेरे आत्मनिष्ठ ओजस्वी व्यक्तित्व से घबराते हैं और बात करने का साहस नहीं जुटा पाते। यहा तक कि एकाकीपन की बर्फ को तोडने के लिए कभी कभार मैं उनसे स्वाभाविक होकर बात करता भी, तो व अस्वाभाविक हो उठते अत्यधिक विनम्रतापूर्वक निस्सगता

अथवा पीछा छुडाऊ ढग से जवाब देते । इसी दौरान जिस बात ने आगे चलकर मुझे सबसे ज्यादा चक्कारा था, वह था मेरा यड इयर मे पहुचना जन लड-कियां मेरे प्रति अदभुत सम्मान का भाव रखते हुए भी हठपूर्ण मौन साधे रहती थी । इस वातावरण म थाडे ही समय बाद मैंने देखा कि व कुछ लडको की अतरग हुई जा रही हैं, जो मेरे अनुसार स्त्री जाति के प्रति निकृष्टतम व लालची विचारा स परिपूर्ण थे । लडकियो की दोस्ती चाहते हुए भी मैं उन्ह उन लडको से अपनी ओर आकृष्ट करना नीचतापूर्ण समझता था ।

शायद मेरे थर्ड इयर म आते ही आप भी इस शहर मे आयी थीं । किस तेजी से आप लोकप्रिय हुई थी अपूर्ण जानकारी के बावजूद यह मुझसे ज्यादा किसी ने अनुभव नही किया होगा । मैं आज भी उन सन लोगो की तुलना मे आपको नबर एक द सकता हू जो यहा सन उनसठ के बाद आये । तब तक यह शहर गुमनाम था । भावी चीनी आक्रमण की सभावनाएं शतश पुष्ट हो जाने के बाद जब फौलाद को राष्ट्रीय महत्त्व की आवश्यकताओ म शिरमौर करार दिया गया, तो हमारे यहा के लघु उद्योगो की बन आयी थी । सरकार ने करोडो रुपय का लागत ऋण इन उद्योगपतियो को दिया था और अखबारो म जबरदस्त चर्चा हुई थी इस नगर की आदर्श जलवायु, स्थिति और महत्ता की । राजधानी म गोदामो म रखे बोरो की तरह भरे हुए धनी व सपन्न लाग इधर आने लग थे । वे यहा जमीन देखने आते, लेकिन किराये का मकान लेकर रहने भी लग जाते । वे लोग ज्यादा आधुनिक होते थे, अत यहा के पुराने बाशिन्दो को बहुत पसद आते थे । मकान-मालिक लोग उन्ह खुशी से मकान दे देते, क्योकि उन्ह मुहमागा किराया तो मिलता ही था, साथ ही ऐसे पडोसी व मित्र भी मिलते थ जिनके प्रति उनका आकर्षण अदमनीय था । बस, तभी शुरू हो गया था यह नया गठन । आप लोगो की इस नगर को भेंट थी को आपरेटिव हाउसिंग सोसायटीज की ईजाद । आपके साथ जो चीजें पूरी चौकसी बरतते हुए यहा आयी, व थी सरकार का इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट, मास्टर प्लान और अदभुत लगने वाले चदक व्यापार—जमीन की दलाली मकान की दलाली आदि ।

उन दिनो, जब यह लबा चौडा पोखर मशीनो से भरा जा रहा था, मैं हापुड रोड और महरौली गाव की तरफ जाते हुए जी टी रोड के

मे ज्यादा घूमने लगा था। वहा भी बेशुमार फैक्टरिया बननी शुरू हो गयी थी। मेरे चेहरे की विलक्षणता तब इतनी स्थायी हो चुकी थी कि एक दिन तुराव नगर से खेतो खेत अपने घर लौटते हुए कैथलिक चर्च की कुछ 'नर्स' के गिरोह ने मुझे हाथ जोडकर श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया था और मुझे यहा का कोई मशहूर धर्मप्राण व्यक्ति समझकर बडी विचित्र बातें की थी। बाद मे अपनी नियति का सताया हुआ मैं उनके निमन्त्रण स्वीकार करता रहा था। वहा मुझे कुछ ईसाई व यूरोपीय लडकिया से मिलाया जाता था। अच्छे भोजन के साथ अपनत्व भरा व्यवहार व रुचिकर भविष्य पेश किया जाता था। लेकिन उनमे से कोई भी मुझसे उन विषयो पर बातचीत करने म समर्थ नही था। जिन्हे लेकर मेरे मन मे कई सारी ग्रथिया निर्मित हो चुकी थी। जल्दी ही उस सिल सिल का अत इसलिए हो गया कि उनसे बहस मे मैं हारता कभी नही था, और उन्हे अपने शिकार की निरुपयोगिता का अहसास होने लगा था।

✳

मेरे पिता एक निहायत ईमानदार व सरल, तथा विद्रोही प्रकृति के मेहनती स्वभाव वाले व्यक्ति थे। मुझसे कही ज्यादा विद्रोही, व शानदार आदतो से स्वाभिमानी आदमी थे। लेकिन उनकी पीढी के आदमियो मे अक्सर जो शातिर विनम्रता पायी जाती है वह उनमे नही थी। तिस पर व उन सबकी तरह ही प्रचलित अर्थों मे पढे लिखे बहुत कम थे हालाकि व बडे पुराने मुनीम थे। उनके उन गुणो को, जिनका जिक्र मैंने पहले किया है दरकार व्यापारियो का इस लिए नही थी कि इसका सीधा परिणाम यह होता था कि व राजस्व की चोरी के लिए तैयार की जाने वाली जाली बहियो के निर्माण म सहयोग दने से इनकार कर देते थे। मालिक उन्हे फौरन निकालकर अपना रास्ता निष्कटक कर लेते थे। मुझे ऐसा लगता है श्रीमती वर्मा कि भीतर कहीं वे निहायत टूट-फूटे से थे। आज जिस चीज का अभाव मुझे सता रहा है वैसा ही कुछ कुछ ताजिदगी उन्हे भी सताता रहा था। वे गाधीजी की नकल करते हुए, घर की बेशुमार जमीदारी की उपेक्षा करते हुए वे सीधे छठे दर्जे तक पढते चले गये थे। मर ऐयाश ताऊ ने जब उन्हे सातवें दर्जे म दाखिला लेने की आज्ञा नही दी और ताना दिया दिया कि व दूसरे की कमाई पर मौज उडाने पर तुल हुए हैं तो वे घर से भाग आये थे—मैट्रिक पास करने। तब व तरह साल

के थे। फिर उन्हें मा-बाप, भाई भाभी, बहन व बेशुमार दौलत का सुख कभी नहीं मिल सका। हां, जब मेरे ताऊजी ने शराब और रडियो मे सारा कुछ गवाकर प्राण त्याग दिये और मेरी ताईजी ने कुत्सित प्रगतिवादी रुख अपनाते हुए अनाथ बेटे-बेटियो का छोडकर नया घर बसा लिया, तब पिताजी पर जिम्मेदारिया के रोक आ गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि उनकी अपनी शादी ३२ साल की आयु मे हुई। दुर्भाग्य स व मेरी माताजी से भी प्रेम व सौहार्द-सम्बध बनाये नही रख सके।

लकिन मेरा खयाल है कि जिस वजह से य बुरी तरह परास्त हुए, उसका माताजी के साथ के उत्पातमय सबधो से वास्ता नही है। उनकी कृतघ्न बडी बहन का स्नेहहीन व्यवहार भी नही हो सकता। और मेरा खयाल है कि भारत विभाजन के पश्चात उनके हिस्से का क्लेम कतिपय दुष्ट प्रकृति के रिश्तेदारो द्वारा हडप लेना भी कोई खास वजह नही रही। घोर निधनता के कारण व रिश्तेदारी से उनीच दिये गये थे। मेरा विचार है कि उन्हें दो तरह की घटनाओ ने तोडा, और बाद मे मार डाला। उनकी बीमारी तो एक क्षुद्रतम निमित्त मात्र थी। पहली घटना पाकिस्तान बनने के बाद होने वाले चमत्कारी परिवतनो का वेदनापूर्ण असर थी और दूसरी थी बवासीर तथा अपच की बीमारिया का पक जाना जिसने उनके स्वास्थ्य की गर्वीली स्थिति को नष्ट करके उन्हें छडी लेकर चलने पर मजबूर कर दिया था—और जिसके बाद व उस साघातिक मोटर दुर्घटना के शिकार हुए थ, जिसने उनकी एक टाग और दोनो हाथ तोडकर रख दिये थे।

★

विकराल व स्वस्थ देह वाले मेरे पिता भावक थे। हर अतृप्त आदमी या तो हिंस्र हो उठता है या फिर अतिशय भावुक। मैं समझता हू कि भावुकता की स्थिति मे जीना उसके लिए एक सामान्य अनुभव नही हो सकता। व अक्सर कुछ लोगो के उत्कर्ष से स्तब्ध होकर रह जाते थे और अधस्फुट स्वर मे कहते थे '*यह क्या हो गया? दिल्ली म छोले पूरियां और कुल्फियां बेचने वाले ही* राष्ट्रीय महत्त्व के व्यापारी शासन के अतरग व अतरराष्ट्रीय मैत्री का उपयोग कर पान वाले लोग बन गये है! लकडी और अनाज के आढती किस तरह उद्योगपति हो गये हैं ?"

दिल्ली की 'हटिटयो' वाले लोगो के सस्मरण अकसर उनके दिमाग म खल बली मचाय रहते थे। व याद किया करत थे कि इनम से सभी पाकिस्तान म खोमचे लगाया करते थ, और बहुतेरे तीन चार धेलो की बिक्री के लिए उह रोज दुकान पर आ घेरते थे। अब वही लाग पहचानते तक नही। वे शायद उनके धनी होने से इतना नही कुढते थे, वक्त के उलटा बहन से उनकी सहत भी बिगडन वाली नही थी, मगर बेरुखी स व लगातार बिंधते चले गय थ। मुश्किल तो या हुई कि हम छाडकर हिंदुस्तान के जिस शहर म भी व जाते, एसा सदमा उन्ह लग ही जाता। जाने से पहले जब व उस नगर या आबादी का भूगाल मालूम करते ता वहा बसे, अपने माने जाने वाले लोगा के कारण कुछ आशावादी दिखने लगत थे, मगर कुछ महीना बाद थके हार लौट आते थे। ऐसी वापसियो के समय जो तथ्य उनके मन मानस पर छाया रहता था, उसकी अभिव्यक्ति व एक फुसफुसाहट भरे वाक्य के माध्यम से कई दिनो तक करत रहते थे— 'कितना फक ला देता है पैसा आदमी आदमी मे!'

और मैं दाव स कह सकता हू कि जाली बहियो के बारे म उनकी जिद उनके किसी सनक भरे सैद्धान्तिक निणय की परिणति नही थी। इलाहाबाद म, मन चौबन म एक ऐसे ही सहयोग के कारण उन्ह सात साल की सजा होत होते रह गयी थी। इसके बाद उनका झुकाव गीता, रामचरितमानस व सटटे पर अत्यधिक हो उठा था। गीता और रामचरितमानस ने जहा उनके कवि हृदय को बेलगाम होने स रोका और उनके व्यक्तित्व को एक करुण विघटन से मुक्ति दिलायी, वहीं सटट ने उन्ह घर भर का निंद्य और अपनी गाढी कमाई का हन्ता बना डाला। मेरा विश्वास है कि उन्होने माताजी के साथ भी घोर अन्याय किया। धम और सटटे के चक्कर म पडकर व उनसे भौतिक स्तर पर दूर चले गये। यह तो मेरी माताजी के चिडचिडे और गरजी हो जान का कारण बना ही, मगर उनके इस रीत भर त्याग न उन्ह लगभग उपरामप्रिय बनाकर छोड दिया। इसम मात्र इतना ही लाभ हुआ कि व उनके साथ ही मानसिक व शारीरिक सुन्ताप म प्रवृत्त पर गयी, मेरी ताईजी की तरह उन्होने कोई गुल नहीं खिलाया।

★

इसके बाद हमारे परिवार के विघटन की निर्णायक परिस्थितिया का प्रादुर्भाव

हुआ। मा इक्सठ की सदिया म जब पिता गहर दुघटना की चपेट म आये, तब भया और वहन बड दयर म थे और मैं दसवें म। भैया उनकी नियमित— साल पीछे तीन चार महीने की—बेकारी क कारण दो साल पिछड गय थ। जहा तक दीदी का ताल्लुक है, मट्रिक के बाद उसकी पढाई उसकी शादी के लायक जुगाड न हो पाने का पर्याय अथवा स्थानातरण बन चुकी थी। बुरी बात यह थी कि उस इस तथ्य का बोध हो चुका था। हर साल गरमी की छुट्टिया म उसे लेकर सरगरमिया शुरू होती थी, लेकिन जुलाई के मध्य तक वह धुंध छाया होती थी।

तो उन सदिया म एकाएक सब घट गया। भया बी ए छोड़कर एक ऐसी दूरस्थ कपनी म नौकर हो गय थ जहा उनका भविष्य सुनहला था मगर प्रारभ वायु टाइप। जबकि प्रारभ अच्छा होने की ही जरूरत थी। दीदी ने ताप व व्यथा स भरकर घर बठन का फैसला कर लिया।

मुझ भैया का बडा स्नेह था और उन्होंने मुझे वह सब बना डालन का वादा किया, जो वे स्वय बनते बनते रह गये थ। मैं यह भी महसूस करता था कि मेरी दीदी मुझसे निरपेक्ष हो चली है। माताजी व पिताजी के प्रति भी उसका यही रवैया था। मगर कितनी विचित्र बात है कि पिता को बचाने की सबसे ज्यादा व निष्काम चेष्टा भी उसी ने की। मा की तनहाई म भी वही सबसे ज्यादा शरीक हुई। यहा तक कि भया के सीमित सामर्थ्य का दश भी उसी न सबस ज्यादा भोगा। यह सोचकर मुझे महज आश्चय होता है कि वह किस अदभुत सयम से मेरी देख भाल करती थी और किस तरह मेरे प्रति भर-सक मृदुल बनी रहती थी। मैं इस निणय पर पहुचा हू कि पिताजी के जीवन-सघष के उस अन्तिम दौर क शुरू होते ही उन तीनो प्राणियो क स्वप्न भग हो गये थ और उनक अपने अपने अभियोग स्पष्ट हो चले थ।

और जब दीदी न अपनी मरघट गडबड को अतिम रूप दिया तो उसके महान त्याग व सयम का बिसारकर सभी उसके विरुद्ध हो उठे। भैया ने कई महीनो तक अपनी राई खबर नहीं दी। माताजी ने मुझे दुत्कारा और मैं अपनी अदमनीय उग्रता लिये, नौकरिया क पीछे पीछे दौडता हुआ उन्हें अपने से पीछे छोडकर बहुत आगे निकल गया। बस, चहुओर की विमुखता स भरे अनु-च्छेद म मेरे वतमान जीवन के सूत्र निहित थे। मैं ललकार कर कहता हू

अगर पिताजी तब जिंदा होते, तो वे एक बार उठकर फिर मुनीमी करने लगते। भैया के हिंसक विराग से मैं इतना आहत हुआ कि किसी के सामने दमडी छदाम के लिए कतई निवेदन न करने का मैंने फैसला कर लिया। मुझे 'बचाने' के लिए माताजी ने तब कुछ गुप्त चिट्ठियां लिखी थी। मेरी बुआ तब बिलखती हुई आयीं और उन्होंने प्रस्ताव रखा कि माताजी नानी के पास चली जायें, जो स्वयं अपने भाई पर आश्रित थी, और मैं उनके साथ हो लू। इस पर मैंने अपने फुफेर भाई की ठुकाई कर दी और बुआ को कभी सामने न पडने की चेतावनी दे दी। दीदी के दुख का सम्मान करते हुए, चोरों से जीजा ने हमें बुलाया तो मैंने उन्हें कत्ल कर डालने की बात कह दी। इस बात का इतना असर हुआ कि उन दोनों में छोटा मोटा झगडा हो गया। फिर कम से कम तब तक तो उनकी कोई सूचना मुझे नही मिली जब तक कि मैं वहां रहा। (मैं पहले ही संकेत दे चुका हूं और अब फिर स्पष्ट कर रहा हूं कि जाति व प्रांत के हिसाब से 'पर कोटि' के मेरे जीजा भी जमाने की ज्यादतियों से जले-भुने आदमी थे। उन्होंने बस यही एक सही काम किया था कि समझौतों के मुखौटे ओढकर तथाकथित प्रचलित जिंदगी को बतौर मजाक जीने का फैसला कर लिया था, और ऐसा करके वे अपने प्रपीडकों व विरोधियों को महान कष्ट पहुचाने का अदभुत रसास्वादन कर रहे थे। लेकिन फिर भी वे अपने भीतर कहीं अगाध कोमलता छिपाकर रख पाये थे। यही कारण है कि दीदी ने जितना दुस्साहस तब किया था, उससे कहीं ज्यादा अब सुखी है। (बहुत बाद में जाकर भैया ने भी जीजाजी का ही अनुसरण किया था।)

अब मैं समाप्ति की ओर ही बढ रहा हूं मिसेज वर्मा! दरअसल यह सब बताते हुए मैं अपनी रुलाई अब रोक भी नहीं पा रहा। यकीनन जितने भी अपमान व परिस्थितियों की पटकियां को माताजी ने झेला उन सबका कारण मैं ही था। अगर मैं पतन के गर्त में न कूदता, तो वे शायद अब तक जाने कब की बिना कफन व लकडियों के मर चुकी होतीं। अपनी स्थिति की विषमता को कबूल कर चुका था मैं। सच कहूं तो इस समय तक मैं इतना बार हो चुका था कि आवारा दायित्वहीन जीवन के प्रति मुझमें एक मोह भी पैदा हो चला था। दायित्व सारे संतापों की जड है। मेरे प्रति दायित्व महसूस करना हर व्यक्ति भूला जा रहा था। फिर मैं वह क्या न करता, जो मैंने किया?

आप नहीं समझ सकती कि मुझ पर अपने पिता के सच्चे आचरण का कितना प्रभाव है, और अपने परिवार का निहायत प्रचलित किस्म की जिन्दगी के प्रति भयंकर रूप से आवर्जित दया मे कितना क्षुब्ध था। अब ये सब आप सबकी तरह रहने लग हैं। हो सकता है, मेरी दीदी, भाभी, अथवा उनमे अन्य सम्बंधियों म से कुछेक के चेहरे व विशिष्टताएं दूसरे किशोरों के मन म कुछ-कुछ वैसा ही सम्मोहन जगाती हो, जैसा कि आपका चेहरा मुझमे जगाता था। उनसे घृणा करने की इच्छा भरी शायद न भी होती हो, मगर यह सच है कि उनके स्नेह-बन्धनों म बंधकर भी मैं अब अब संतुष्ट नहीं रह पाऊंगा।

ओफ, म भूल नहीं सकता कि मेरे पिता किस तरह सीधे सादे, फिर भी दबंग, आन बान व अंतरात्मा की आवाज के प्रति सचेत और ईमानदार किस्म के प्राणी थे। दिक्कत सारी यह है कि अपने भयावह अंत, जीवन म मिली घोर व साघातिक उपेक्षा, और मृत्यु के बाद मिली करुणाजनक विस्मृति के बावजूद मैं उनके प्रति संवेदनशील हू, और उनकी जीवन पद्धति का हर कदर कायल हो चुका हू। थोडे-बहुत हेर फेर के साथ मैं उन्ही जैसा ईमानदार बने रहने की कोशिश कर रहा हू। मैं उनकी तरह दायित्व के प्रति सजग नहीं हू तो यह सिर्फ इसलिए कि सबंधों व दायित्वों के अस्तित्व के मिथ्यापन का आभास मुझे हो चुका है, जाकि उन्हे नहीं हो सका था। अगर मुझे थोडे दिन का और वक्त मिलता, तो मैं कोशिश करता कि वे शराबी, धर्मविमुख व हिंस्र बन जाते। उनका यह रूप मेरी मान्यताओं के अधिक करीब होता। उस हालत म वे मेरे आदर्श पुरुष का अद्भुत रूप से प्रतिनिधित्व करने लग जाते।

मैं यदि आज जितना समर्थ होता तो उनमे दो चार संशोधन करने की जबरदस्त कोशिश करता। मैं उनकी धार्मिक प्रवृत्तियों पर आघात करने की कोशिश करता। उन्हें समझाता कि धर्म केवल उन व्यक्तियों के लिए है, जो उसके विपरीत आचरण मे विश्वास करते है। ईमानदार व सरलस्वभाव व्यक्ति को धर्म पंगु कर देता है। मेरा विचार है कि सड़क-दुर्घटना से काफी दिन पहले ही वे पंगु हो चुके थे। उनके गीता-प्रेम की समीक्षा करते हुए मैं उनके दिमाग म यह बात बठा देता कि गीता आचरण इस विषय व तीरो तथ्यों से युक्त संसार को और भी अधिक विषमतापूर्ण व तकलीफदेह रूप म प्रस्तुत करता है, और छोटे बादबान वाली नौका की तरह संसार सागर म व्यक्तीय नै

को डुबो डालता है। जबकि डोंगी के सफरगीरों अथवा स्वार्थबद्धता व क्षुद्र जिजीविषा से उत्प्रेरित जाल फेंकने वाले तमाम लोगों को मतलब की मछली के साथ साथ मजेदार जीवन का उपहार मिल जाता है। मुझे अफसोस है कि भारत विभाजन तथा गीता में वे कोई संबंध स्थापित न कर पाये। वे नहीं समझ पाये कि सम्यक कर्म हमेशा निरपेक्ष होता है और निरपेक्षता से आदमी अलग थलग हो जाता है, स्वार्थ सापेक्ष होता है और बहुत से लोगों को अच्छे बुरे में सहयोग करने पर मजबूर करता है। पिताजी में और मुझमें साम्य कुछ इस तरह में भी है कि हम दोनों ने दो विभिन्न जमाने अपनी संवेदना के चरम काल में देख डाले। हम लोग तब अतिरिक्त रूप से सजग थे। इस सजगता के साथ यदि संवेदना न होती, तो भी शायद कुछ बात बनती। वे हड्डियों के उत्कर्ष को देखकर स्तब्ध रह गये थे, तो मैं अट्ठावन उनसठ में आप लोगों की बाढ़ की तरह इस शहर में घुस आना देखकर हतबुद्ध हो उठा था। अगर आप लोग यहां न आते, तो संभवतः हमारे इस मोहल्ले में, जहां अभी मुश्किल से जमीनें ही बिकी थीं, मेरे जैसे कितने ही लड़के आज ढंग के आदमी होते।

☆

मेरा अनुमान है कि यह बता देने से मेरे इस प्रश्न का उपसंहार जुट जायगा कि अपने परिवार की बरबादी का नाटक खेलने के उपरांत, डेढ़ साल तक 'भागा हुआ' रहने के बाद, जबकि मेरे परिवार का निशान तक यहां से मिट चुका था मैं यहां क्यों लौट आया? इसका ताल्लुक इस आत्मस्वीकृति से है कि मैं भावुकता से अभी तक मुक्ति नहीं पा सका। कुछ भी हो, इसी शहर में रहकर मैं छोटे से बड़ा हुआ हूं। वे सारे मकान मैंने देखे थे, ... वे सारे बगीचे, खेत और ताल जो इसमें साथ लगे हुए थे, मेरे देखते ही देखते कोठियों के दामों छीनकर सामने के निगाह से गिर हैं। मैं आज भी साफ साफ याद कर सकता हूं कि यू गांधी नगर नाम के इस मोहल्ले की जगह यहां इतना बड़ा पोखर था कि अब आपके घर से लेकर मेन रोड तक जो इसका दूसरा किनारा था, जाने के रिक्शा वाला बारह आने लेता है। बरसातों में मछली मारकर हम लोग टहला करते थे। तीन मंजिल सात कोठरियों और भटियारों तक देखते हुए पुरबैली हवा चला करते थे। उनमें नहा करते थे।

मरे दोस्त भैंसें नहलाया करते थे। वसा कुछ भी अब दिखाई नही देता। मुझे बहुत ही भला लगेगा, अगर मेरे पैरो के नीच से ही अभी एक सोता फूट पडे और पोखर की तलहटी तक पहुचकर मैं दम तोड दू। लेकिन यू मेरे मर जाने के बाद कोई हल्ला नहीं मच पायगा। यही मुझे नापसद है। अपने पिता जैसी मौन मैं मरना नही चाहता।

मैं आपको बता रहा था कि यहा लौटकर फिर आया ही क्या ? इतना ही कह सकता हू कि मैं जहा जहा भी गया, मुझे यहा की याद सताती रही। इस लिए मैं लौट आया। एक निर्वासित व्यक्ति की तरह यहा लौट पान को छटपटाया करता था। कितनी अच्छी बात है कि मरे परिवार के दुखी लोग अब यहा नहीं हैं। अकेला मैं हू और मेरे दुख की किसी को जानकारी तक नहीं। इसलिए सब ठीक है। मुझे उम्मीद थी कि यहा मुझे कुछ ऐसे साथी जरूर मिलेंगे, जिनके साथ मेरे अनाधावस्था के दिन कट हैं लेकिन अफसोस है कि ऐसा कुछ जोरो शोरो से हुआ नही। उनम से कुछ के दिन वदल गये और कुछ की व स्मनिया ही धुधला गयी थी। कुछ हैं, जिन्ह मैं अपनी आलोचक व एकाकी वत्ति के दिनो मे कभी नही मिला था। वही मरे दोस्त ह। फक इतना है कि अब मेरे ठिकान और उनके ठिकाना के बीच हर तरफ दा दा चार चार कालोनिया बन गयी है। पहले हम लोग एक दूसरे को बुलाने के लिए किसी ऊचे पेड या छत चौबारे पर चढकर पतग उडा दिया करते थे, और दस मिनट बाद ही घर के बाहर साइकल की घटी सुनायी दती थी। अब वसा नहीं कर पाते।

✢

अभी मैं यह तय नही कर पाया कि एम ए करके काई अच्छी नौकरी करूगा और अपने पिता की तरह सरल व ईमानदार जीवन व्यतीत करूगा—और परिवार वाला को ढूढकर उनमे मिल पान का काशिश करूगा, या कि यू ही निठल्ला रहकर किसी बेहतरीन मजाक का ईजाद करूगा। मेरे एक दोस्त का कहना है कि मुझे पच्चीस का होकर ही अक्ल आयेगी। उस हिसाब से एम ए के बाद भी मुझे डेढ दो साल इतजार करना हागा।

यहीं आपको यह भी बता दू कि आपन कल मेरे साथ जो कुछ भी किया है उस पर आपको अभिमान करने की जरूरत नही, क्याकि अगर मैं चाहता

तो आप वसा कुछ भी न कर पाती—और शायद ऐसा भी कुछ हो जाता कि बाद मे आप मुझसे छिपती फिरतीं।

आटी, अगर मेरी कोई गलती है, और आप मुझे क्षमा करके सामान्य दृष्टि से देखने बोलने की आदत डाल सकें, तो मैं आपका अनुगृहीन होऊगा। आपको यह वहम ही कैसे हो गया कि मैं लडकियो को छेडने वाला लफगा हू? सुनी-सुनायी बातो पर? लेकिन सोचता हू कि मैं इस तरह नरम नरम बातें क्यो कर रहा हू? ऐसा तो मेरा स्वभाव कभी भी नही था। बस, आप इतना कीजिये कि कल वाली घटना पर अभिमान करना और उसका इधर उधर जिक्र करना बद कर दीजिये। हो सकता है, आपके ऐसा न करने पर रवि की तो आफत आये सो आय, आपको भी कुछ तकलीफ पहुच जाय।

ऋतुशेष

—स्टेशन के बाहर स्टंड फैल गया था। तांग, स्कूटर और फोर सीटर भी थे। तब सिर्फ रिक्शे होते थे।

—मॉडल टाउन! सामान डलवाकर उसने स्कूटर वाले से कहा।

—न्यू या ओल्ड?

वह अचकचाया। फिर सामान्य अनुमान लगाकर बोला—ओल्ड!

दिसंबर की ठंडी चमकीली दोपहर से बहुत अरसे बाद मिला था। उसमें सब जाना पहचाना था, पर बदला बदला सा।

जी टी रोड पर आकर स्कूटर दायीं ओर घूम गया। उसने आश्चर्य से ड्राइवर को देखा—क्यों?

—वन वे है जी! ड्राइवर बोला।

उसे फिर आश्चर्य हुआ, कि परिवर्तन इतना अधिक कैसे हो सकता है? और सब जगह कैसे हो सकता है? साइकिलों और रिक्शा पर सवार चेहरे उससे कट कटकर आगे पीछे गायब होते रहे, पदलों की आंखें चीन्हने की कोशिश करती रहीं। उसका अपना परिवर्तन भी इतना ही खटकने वाला और स्तब्धताकारी होगा?

घर के नजदीक पहुंचकर उसने उत्सुकता से ड्राइवर से पूछा—यह कौन सा है?

—वो जी, आगे है। घी मिल के पीछे क्रासिंग के पार! पता नहीं किस शास्त्री पर रख दिया है उसका नाम!

याद आया—आचार्य बृहस्पती स्मारक मार्ग, या नगर। तब उसके बनने की घोषणा भर हुई थी।

पुरानी नागफनी की जगह नयी मेंहदी ले रही थी। गेट हरा रंगा हुआ था। बंगले में स्कूटर दाखिल हुआ तो एक महिला चौककर बरामदे में लपकी और ठिठककर खड़ी हो गयी।

जरूर भाभी हैं! उसने उतरकर प्रणाम किया। आशीष देते-देते ठगी-सी रह गयी।

—मैं गप्पू हूं! कहते कहते वह शरमा गया। टप्पू कहां है?

—आओ! स्वर कांपकर स्निग्ध हो गया। आओ तो!

उनका चेहरा उमड़ा और आंखें स्मितिमय हो उठीं। हथेली से ठुड्डी छूकर प्यार किया। अंगुलियों के पोर ठंडे व सिकुड़े हुए थे, और नाखून गीले व सफेद—कपड़े धोने के निशान।

तब उनके हाथ मेंहदी से रचे हुए थे। चेहरा यादों और आकांक्षाओं से झिलमिल। भाभी को तब पहली बार देखा था। फिर आज।

—भैया! पिंकू दरवाजे पर आकर चिल्लायी और उडकर उससे लिपट गयी।

पीछे से नंगे परों की सरसराहट हुई। मां के हाथ हवा में टोह ले रहे थे। आंखें फटी फटी सी, स्थिर होने की कोशिश कर रही थीं। तो नजर चली गयी! उसके कोर नम हो आये।

—मां! उनके हाथ थामकर उसने सर झुका दिया।

—गप्पू! खुशी से बेहाल होकर वे सुबकने लगीं।

एक अटैची उठाकर अंदर गयी। भाभी ने सवाल किया—बाकी सामान कहां है?

—यही है।

पुराने घर में कुछ पुरानी चीजें थीं। नये करीने में। कुछ बदल गयी थीं। या शायद बड़ी हो गयी थीं। कुछ पिंकू की तरह, कुछ भाभी की तरह। बैठक में पसरकर उसने सोचा, कुछ मां और पिताजी की तरह भी।

हो गयी होगी।

हलकी पत्ती की गाढी चाय के साथ बेसन की बर्फी तिपाई पर रखते हुए भाभी ने बताया—पानी गरम होने को रखा है। ठड से नहाना चाहो तो तौलिया रखा है गुसलखाने मे।

—नहाना नही! उसने सकुचित होकर कहा।

—उन्होने चकित होकर देखा। आखें मुसकरायी—छोटे बच्चो की तरह डरते हो सर्दियो मे नहाने से!

—धूप मे नहाना चाहो तो बालटिया छत पर चढा देगी पिंकू, मा बोली।

पिंकू तिडी हो गयी।—अभी रखकर आती हू!

- मैं नहा चुका हू! उसने अनुनयपूर्वक कहा।

—कब?

—सुबह घर से निकलने से पहले।

—क्या? भाभी स्तब्ध रह गयी।

—कौन-सी सुबह, किस घर से? मा हडबडायी।

—बबई से। उसे घोर झेंप हुई।

भाभी की समझ मे कुछ नही आया। मा ने चपत दिखाते हुए कहा—आते ही झूठ मत बोलने लग! नही नाहाना तो मत नहा।

उसे बहुत शर्म लग रही थी बताने मे। छ बजे सोकर उठा था। नहाया था। दो तीन फोन किये थे। सवा सात की फ्लाइट से नौ पाच पर पालम पहुचा था। नाश्ता जहाज मे नही लिया था, चूकि पौने दस बजे एक ब्रेकफास्ट अपायटमेंट थी—व्यवसायिक। साढे ग्यारह बजे फिर एक अपायटमेंट थी, कनाट प्लेस मे। साढे बारह बजे दिल्ली मेन मे ट्रेन पकडकर यहा चला आया था। ठीक, डेढ बजे पहुच गया था। दो बज रहे थे।

भाभी लगातार व्यस्त थी। पिंकू लगातार खडी थी।

यकायक दो नन्ही, गोरी, मुलायम बाहो ने उसके घुटनो को लपेट लिया। हलकी गुदगुदी से वह घबरा उठा। फर्श से तीनक फीट ऊपर, हवा मे से दो मोटी, चमकीली काली आखों ने झाका, अथाह जिज्ञासा से। माथे पर बेतहाशा आक्रमण करते बाल—गाल, चकित चेहरा। उससे नजर मिलते ही

वह परे भाग गया और पिंकू से जा लिपटा। उसमे अजहद प्यार उमडा। मुसकराकर उसने पास आने का सकेत किया।

आखो ने ऊपर, पिंकू की ओर देखा। पिंकू ने घुटनो से हाथ छुडाकर आगे से हटते हुए जाने को कहा।

उसने फिर मुसकराकर इशारा किया।

इस बार वह भी मुसकरा दिया और चला आया।

उसने बर्फी का एक टुकडा उसकी ओर बढाया।

नन्हे ने इनकार मे सर हिलाया और अपनी अगुली से उसके मुह को इगित किया—मैं नही। तुम खाओ।

उसने उसे पास बठा लिया।

थोडी देर बाद सब धूप मे चले गये।

—टप्पू कहा है? उसने पूछा।

—इस्टीटयूट गया है। सात बजे आयेगा। पिंकू बोली।

—रिकू?

—स्कूल। अभी आयेगी।

—पिताजी?

—बाग मे धूप सेंकते होगे।

—और पप्पू ?

—देखो, मैं तुम्हें भी मना करती हू, भाभी ने टोका और सलज्ज कहा—तुम लोग उन्हे भया कहा करो। इन सबकी आदत मैंने छुडवा दी है।

—मरी भी छुडवा दे तो जानू! मा ने छेडा।

—पिंकू बोली—खाना भी खा आये हो क्या? घर से!

उसे हसी आ गयी। घर के दिसबर म बहुत साल बाद

घडघडाहट हुई। नन्हा बुबकी उठकर बाहर भाग गया। रिंकू अपनी स्कूल की सहेलियों के साथ आयी थी। उसने उन सबकी तरफ देखा। पर उनमे से वह कौन थी पता नही चला। चारपाई पर बस्ता पटककर, एक चप्पल इधर और दूसरी दालान म उधर घुमाकर फेंकते हुए, बुबकी के आग आगे रसोई के दरवाजे पर पहुचकर एक खुशमिजाज लडकी खडी हो

गयी और सीधे बोली—मूख ! वह पहचान गया।

भाभी ने उसे धीरे से कुछ कहा। वह चौंककर पलटी और दौडकर उसके पास आकर बोली—गप्पू भैया !

—रिंकू पागल !

उसके घुटनो पर बैठकर वह रोने लगी। उसने सर पर हाथ रखा तो वह जोर से रो पडी। सहेलिया अवाक थी। फिर गट्ट आनन फानन मे चुप हो गयी। सहेलियो के पास जाकर बुदबुदायी। उन सबकी आश्चर्य भरी आखें उस पर उठी। दो तीन के प्रणाम म हाथ जुडे। उसने भी जोड दिये। किसी को पहचान नही सका।

तभी रिंकू बाहर की ओर भागी। भाभी ने पुकारा—खाती तो जा री !

—अभी आती हू ! हवा मे तैराकी भारती उसकी आवाज आयी और फाइव फिफ्टी बज उठी।

रिंकू चिल्लायी—ए, साइकिल मुझे चाहिये, बाजार जाना है !

घटी फिर बजी—दूर से, शायद वह सडक पर थी।

रिंकू के निकल भागन का परिणाम शीघ्र ही सामने आ गया। बूढी औरतें एक एक करके आने लगी। बिना उसका कुशल मगल पूछे, एक एक आशीर्वाद देती, मा के पास बैठकर बतिआती और कहती—बधाई हो बहन ! परमात्मा न सुमति बरसायी।

फिर वे भाभी व पिंकू से उसके बारे म पूछती। उन दोनो को इसके सिवा कुछ मालूम नही था कि गप्पू हवाई जहाज से आया है। सुनकर वे कुढती, जसे उ ह बहकाया जा रहा हो—क्यो, जहाज से क्यो मगवाया ?

—मगवाया किसने ? अपने आप आया है। मा पजल्ड थी। फिर उनका चेहरा फक हो गया, जिसे देखकर भाभी ने सशोधन किया—मिलने आया है, घर अपन।

न मालूम उसे क्या हसी छूटने लगी।

*

सूर्यास्त के सकेत पाकर उसने बाहर निकालने का इरादा किया। याद आया, दिसबर है। घोर शीत होगी। अटची से एक जर्सी निकालकर पहनी, ऊपर टैरीवूल का सूट पहनना था। पर उतार दी। शेखी बघारना हो

जायेगा।

इच्छा हुई, न हो कुक्की को साथ ले ले।

भाभी के पास जाकर फुसफुसाया—जरा घूमकर आऊगा

बाकी व उसके कहने से पहले ही समझ गयी और लपककर गयीं। कमरे म से परेशान सा आवाज आयी—इधर आ जरा!

वह गया। कितने ही कोट, स्वटर फैलाकर बैठी थी। बोली—सब खुले गले क हैं। मरी मान तो इनम से कुछ पहनकर ऊपर से शाल भी ले ले, या च स्टर ले ले।

—शाल दीजिय।

जर्सी के ऊपर शाल ओढ लिया। ठीक हो गया।

चप्पल म दूसरा पैर फसा रहा था कि भाभी फिर आयी।

—धुले उडद मे चने की दाल डाल द, खा लोगे? साथ म मेथी आलू? पैर ठिठक गया। पुतलिया स्थिर हो गयी और थोडी डबडबाहट सी रेंगती लगी आखा म। तब मा पिताजी स पूछा करनी थी, सुबह दफ्तर जा रहे होन थे तो—शाम के लिए।

—हा, वह बुदबुदाया।

रास्ते पर जाकर उसे रिंकू का ध्यान आया। लौटी नहीं अभी तक। तीन या चार साल की थी जब वह निकल गया था। दो साल बाद लौटा था एक बार। फिर दो साल बाद एक बार और—भैया की शादी पर। अब सात साल हो गय। जितनी वह अब होगी, उतना वह तब था। वह भाग जाता था। उसक मर जाने की अफवाह फल जाती थी। इस समय तक उसक मरन या जीन की खबर मे कोई सनसनी नही रही थी। वह जानता था, पर अब वह सनसनी पदा भी नहीं करना चाहता था। भागे हुआ क हिस्स वह भी नही आता जो बदनसीबा के हिस्से आता है। किंतु उसकी धारणा बन चुकी थी कि बदनसीब हो जाओ, अपना की अपनी, पतृक भूमि पर, मोहल्ल रिश्तेदारी के बीच असमय आकर मत रहा।

मोहल्ले मे उसन दो चक्कर लगाय। काम धाम स कोई नया लौटा था। कोई सैर नही कर रहा था। बगला की भरमार होती था। पर अब दो दो, तीन तीन मजिलें हो गयी थी। बीच बीच म खराब काठी क्वाटान म

आती। वह ठहरकर पुराने लोगो के नाम इत्यादि याद करता। पता नही, उनमे से कौन था, कौन चला गया था। बच्चे खेल कूद रह थे। उनमे से भी उसे कोई नही जानता था।

वह बाजार की तरफ मुड गया। गल्स कालेज के पीछे वाला आमो का बगीचा देखा उसने। वहा पेड नही थे। मकान थे। उसके परे खेत भी नजर नही आये। जजी के विशाल लान के चारो ओर दीवार उठ गयी थी। मेन रोड के नुक्कड पर बच्चो का पाक था—पहले से ज्यादा तराशा हुआ व खूबसूरत। वह अदर हो गया। एक तरफ घास पर बैठ गया।

तभी कुछ आवाजो न झिझोड दिया। दायी तरफ पीछे, उसने देखा, तीन चार लडकिया, बहुए और तीन चार वद्धाए बातचीत मे मशगूल थी।

—लौट आया! एक।

—कब? दो।

—आज। अभी मैं गयी थी।

—अच्छा! तीसरी आवाज—ठीक ठाक है वैसे?

—ठीक क्या, मैंने तो ठीक से देखा ही नही। पर घर से भागने वाले ठीक रह ही कस सकते है?

—और क्या! शक्ल न बिगडी तो अक्ल बिगड गयी।

—कौन आटी? किसकी बात है? कोई लडकी।

—वही प्रभुदयाल का लडका रे! सुभाष के साथ पढता था!

—तीसरा। लडकी को याद दिलान के लिए कोई बोली।

—ओह, हा! था गप्पू! आटी, वो मेरे साथ भी पढा करता था।

—चुप कर। किसी ने डाटा।

—मुआ पढने म तेज था! पता नही कौन।

—इतना भी तेज क्या कि अपनी सुध बुध ही तज दे!

उसकी इच्छा हुई कि जरा उस लडकी को तो देखो जो उसके साथ पढती थी, पर अभी तक ससुराल नही गयी थी।

लेकिन वह उठ गया।

कपनी बाग मे उसने खामखा पिताजी को ढूढा, हालाकि पिंकू ने बताया भी था कि बाग मे धूप सेंकते हैं, और अब धूप नही थी। घरघर

पर अपरिचितों की भरमार और पलग्राउंडोर वाले दो रेस्तरां साफ बता रहे थे कि शहर फैल गया है।

एअरकंडीशनर वाले एक रेस्तरां में घुस गया। एक प्याला कॉफी बड़ी जरूरी थी। मीनू देखकर उसने निष्कर्ष निकाला कि नाम वही हैं जो बंबई में हैं, —दामों में कुछ हेर फेर था। काउंटर पर एक लड़की बैठी थी। फैशन चला आया था।

पनीर के पकौड़े खा रहा था कि दो नौजवान टन-टन करते दाखिल हुए। तीन-चार चीजों का इकट्ठा ऑर्डर दे कर बियर पीने लगे। उसने सरसरी तौर पर उन्हें देखा खूबसूरत थे, खाते पीते मालूम देते थे। जाने क्यों उससे उनकी ओर फिर देखे बिना नहीं रहा गया। लेकिन इस बार उसकी दृष्टि को उनकी आंखों ने पकड़ लिया। दोनों ओछे प्रतीत होते थे— एक कम, एक ज्यादा। दोनों के ट्रिपल फाइव और रॉथमैन्स की डिब्बियां मेज पर रखी हुई थीं।

अचानक उनमें से एक, ज्यादा ओछा उठकर उसके सामने आ बैठा और नुमाइशी डिब्बी उसकी ओर बढ़ता हुआ बोला—माफ कीजियेगा, क्या मैं आपको सिगरेट पेश कर सकता हूं ?

वह एकदम चौकन्ना हो गया। उसने सोचा, बियर से पहले वे शायद व्हिस्की चढ़ा चुके हों।

—जी, जरूर ! उसने कहा—लेकिन मैं पिऊंगा नहीं। शुक्रिया !

—क्यों नहीं पियेंगे ? वह जोर देने पर तुल गया।

पूरा ओछा है। उसने मन ही मन सोचा और भावहीन स्वर में कहा— यह मेरा ब्रांड नहीं है।

—कौन-सा ब्रांड है आपका ? आगंतुक ने आंखें मिचमिचायीं।

—आप तकलीफ न करें। मैं इच्छा होने पर पी सकता हूं।

—या तो यह सिगरेट पीजिए, या अपना ब्रांड दिखाइये !

उसने एक क्षण में तय कर लिया कि गड़बड़ होने पर वह क्या करेगा। चॉल भरवा दिया। आराम से पकौड़ा चबाते हुए बोला—मेरे ख्याल से आपको बियर का लुत्फ उठाना चाहिये और मेरे ब्रांड की चिंता नहीं करनी चाहिये। मेरा ब्रांड आपको हर हालत में महंगा पड़ेगा।

आगंतुक की निगाह उसकी वर्दी पर अटककर रह गयी। वह जानता

था ऐसा होगा । यकायक वह उठा और बोला—उल्लू के पट्ठे ! साले
और वह दबोचने की मुद्रा मे उसे घूरता हुआ ठहरा रहा । वह एकदम तयार
था । एक इच कमबरत झुका नही कि टेबल के नीचे से उसके पेडू पर लात
पडी नही ।

—हरामी वह फिर बका ।

उसे कोई उत्तेजना नही हुई । उसकी लात तयार थी ।

—साले, गप्पू ! वह एकदम मुसकरा पडा ।

उसने लात गिरा दी और आश्चयचकित रह गया ।

—बाली उसने अविश्वास से कहा ।

—तेरा बाप बाली आ जा ! उसकी बाहें फैली हुई थी ।

वह उठा और उसके गले लग गया ।

—कहा से पैदा हुआ ? बाली ने उसे अपनी टेबल की ओर घसीटते
हुए पूछा ।

—सिगरेट ला ?

—तू ब्राड बता !

तीसरे गिलास मे बियर उडेली जाने से उसने रोक दिया । ग्यारह बारह
साल का अतराल ज्यादा बेतकल्लुफी की सहूलियत देता भी नही

—कब आया ? निगाह फिर जर्सी पर जम गयी ।

—आज ।

—कौन सी गाडी से ?

फिर न चाहते हुए बताना पडा उसे—मार्निग फ्लाइट से ।

—अच्छा ! बाली की निगाहे जर्सी से एकदम हट गयी और उनमे
सतुष्टि का भाव आ गया (जर्सी फ्राड नही !)—कहा से ?

—बबई से ।

—क्या करता है वहा ?

—छोटा मोटा काम है । दाल रोटी के लिए काफी ।

बाली के चेहरे स ओछापन गायब हो गया और वह साहसा एक तीक्ष्ण
बुद्धि, विनम्र व्यक्ति नजर आने लगा ।

—तू सुना !

पर अपरिचितों की भरमार और फ्लशडोर वाले दो रेस्तरां साफ बता रहे थे कि शहर फल गया है।

फ्लशडोर वाले एक रेस्तरां में घुस गया। एक प्याला काफी बड़ी जरूरी थी। मीनू देखकर उसने निष्कर्ष निकाला कि नाम वही हैं जो बबई में हैं, —दामों में कुछ हेर फेर था। काउंटर पर एक लड़की बैठी थी। फैशन चला आया था।

पनीर के पकौड़े खा रहा था कि दो नौजवान टम-टम करते दाखिल हुए। तीन चार चीजों का इकट्ठा आँडर दे कर बियर पीने लगे। उसने सरसरी तौर पर उन्हें देखा खूबसूरत थे, खाते पीते मालूम देते थे। जाने क्या उससे उनकी ओर फिर देखे बिना नहीं रहा गया। लेकिन इस बार उसकी दृष्टि को उनकी आंखों ने पकड़ लिया। दोनों ओछे प्रतीत होते थे—एक कम, एक काफी। दोनों ने थ्री फाइव और रॉटमैंस की डिब्बियां मेज पर रखी हुई थीं।

अचानक उनमें से एक, काफी ओछा, उठकर उसके सामने आ बैठा और नुमाइशी डिब्बी उसकी ओर बढ़ाता हुआ बोला—माफ कीजियेगा, क्या मैं आपको सिगरेट पेश कर सकता हूं ?

वह एकदम चौकन्ना हो गया। उसने सोचा, बियर से पहले वे शायद ह्विस्की चढ़ा चुका हों।

—जी, जरूर ! उसने कहा—लेकिन मैं पिऊंगा नहीं। शुक्रिया !

—क्यों नहीं पियेंगे ? वह जोर देने पर तुल गया।

पूरा ओछा है। उसने मन ही मन सोचा और भावहीन स्वर में कहा—यह मेरा ब्रांड नहीं है।

—कौन सा ब्रांड है आपका ? आगंतुक ने आंखें मिचमिचायीं।

—आप तकलीफ न करें। मैं इच्छा होने पर पी सकता हूं।

—या तो यह सिगरेट पीजिये, या अपना ब्रांड दिखाइये !

उसने एक क्षण में तय कर लिया कि गड़बड़ होगी पर वह क्या करेगा। टॉल मरवा दिया। आराम से पकौड़ा चबाते हुए बोला—मेरे ख्याल से आपको बियर का लुत्फ उठाना चाहिये और मेरे ब्रांड की चिंता नहीं करनी चाहिये। मेरा ब्रांड आपको हर हालत में महंगा पड़ेगा।

आगंतुक की निगाह उसकी जर्सी पर अटककर रह गयी। वह जानता

था ऐसा होगा। यकायक वह उठा और बोला—उल्लू के पट्ठे ! साले और वह दबोचने की मुद्रा मे उसे घूरता हुआ ठहरा रहा। वह एकदम तैयार था। एक इंच कमबख्त भुका नही कि टेबल के नीचे से उसके पेड़ू पर लात पडी नही।

—हरामी वह फिर बका।

उसे कोई उत्तेजना नही हुई। उसकी लात तैयार थी।

—साले, गप्पू ! वह एकदम मुसकरा पडा।

उसने लात गिरा दी और आश्चयचकित रह गया।

—बाली उसने अविश्वास से कहा।

—तेरा बाप बाली आ जा ! उसकी बाहें फैली हुई थी।

वह उठा और उसके गले लग गया।

—कहा से पैदा हुआ ? बाली ने उसे अपनी टेबल की ओर घसीटते हुए पूछा।

—सिगरेट ला ?

—तू आड बता !

तीसरे गिलास मे बियर उडेली जाने से उसने रोक दिया। ग्यारह बारह साल का अतराल ज्यादा बेतकल्लुफी की सहूलियत देता भी नही

—कब आया ? निगाह फिर जर्सी पर जम गयी।

—आज।

—कौन सी गाडी से ?

फिर न चाहते हुए बताना पडा उसे—मॉनिंग फ्लाइट से।

—अच्छा ! बाली की निगाह जर्सी से एकदम हट गयी और उनमे सतुष्टि का भाव आ गया (जर्सी फाड नही !)—कहा से ?

—बबई से।

—क्या करता है वहा ?

—छोटा मोटा काम है। दाल-रोटी के लिए काफी।

बाली के चेहरे स ओछापन गायब हो गया और वह साहसा एक तीक्ष्ण बुद्धि, विनम्र व्यक्ति नजर आने लगा।

—तू सुना !

पर अपरिचितों की भरमार और फ्लशडोर वाले दो रेस्तराँ साफ बता रहे थे कि शहर फैल गया है।

फ्लशडोर वाले एक रेस्तराँ में घुस गया। एक प्याला काफी बड़ी जरूरी थी। मीनू देखकर उसने निष्कर्ष निकाला कि नाम वही हैं जो बम्बई में हैं —दामों में कुछ हेर फेर था। काउंटर पर एक लड़की बैठी थी। फैशन चला आया था।

पनीर के पकौड़े खा रहा था कि दो नौजवान टप-टप करते दाखिल हुए। तीन चार चीजों का इकट्ठा आर्डर दे कर बियर पीने लगे। उसने सरसरी तौर पर उन्हें देखा। खूबसूरत थे, खाते पीते मालूम देते थे। जाने क्या उससे उनकी ओर फिर देखे बिना नहीं रहा गया। लेकिन इस बार उसकी दृष्टि को उनकी आंखों ने पकड़ लिया। दोनों गोरे प्रतीत होते थे—एक कम, एक काफी। दोनों ने अपने पाइप और रॉटमन्स की डिब्बियाँ मेज पर रखी हुई थीं।

अचानक उनमें से एक, काफी गोरा, उठकर उसके सामने आ बैठा और नुमाइन्दी डिब्बी उसकी ओर बढ़ाता हुआ बोला—माफ कीजियेगा, क्या मैं आपको सिगरेट पेश कर सकता हूँ?

वह एकदम चौकन्ना हो गया। उसने सोचा, बियर से पहले ये शायद व्हिस्की चला चुके हों।

—जी जरूर! उसने कहा—लेकिन मैं पिऊंगा नहीं। शुक्रिया!

—क्यों नहीं पियेंगे? वह जोर देने पर तुल गया।

पूरा गोरा है। उसने मन ही मन माना और आत्मीय स्वर में कहा—यह मेरा ब्रांड नहीं है।

—कौन-सा ब्रांड है आपका? आगन्तुक ने आँखें मिचमिचायीं।

—आप तकलीफ न करें। मैं इच्छा होने पर पी सकता हूँ।

—या तो यह सिगरेट कबूल कीजिए, या अपना ब्रांड मंगाइए!

उसने मन-ही-मन में तय कर लिया कि मजबूर होने पर वह क्या करेगा। होंठ [illegible] लिया। आराम से पकौड़ा चबाते हुए बोला—[illegible] में आपका। बियर का लुत्फ उठाइए साहिबे और मेरे ब्रांड की [illegible] करना चाहिए। मेरा ब्रांड आपको हर हालत में महंगा पड़ेगा।

आगन्तुक की निगाह उसकी उंगली पर अटककर रह गयी। वह जानता

था ऐसा होगा। यकायक वह उठा और बोला—उल्लू के पटठे ! साले और वह दबोचने की मुद्रा मे उसे घूरता हुआ ठहरा रहा। वह एकदम तैयार था। एक इच कमबख्त झुका नही कि टेबल के नीचे से उसके पेडू पर लात पडी नही।

—हरामी वह फिर बका।

उसे काई उत्तेजना नही हुई। उसकी लात तयार थी।

—साले, गप्पू ! वह एकदम मुसकरा पडा।

उसने लात गिरा दी और आश्चयचकित रह गया।

—बाली उसने अविश्वास से कहा।

—तेरा बाप बाली आ जा ! उसकी बाहें फैली हुई थी।

वह उठा और उसके गले लग गया।

—कहा से पैदा हुआ ? बाली ने उसे अपनी टेबल की ओर घसीटते हुए पूछा।

—सिगरेट ला ?

—तू ब्राड बता !

तीसरे गिलास में बियर उडेली जाने से उसने रोक दिया। ग्यारह बारह साल का अतराल ज्यादा बेतकल्लुफी की सहूलियत देता भी नही

—कब आया ? निगाह फिर जर्सी पर जम गयी।

—आज।

—कौन सी गाडी से ?

फिर न चाहते हुए बताना पडा उसे—मॉर्निग फ्लाइट से ।

—अच्छा ! बाली की निगाह जर्सी से एकदम हट गयी और उनमे सतुष्टि का भाव आ गया (जर्सी फाड नहीं !)—कहा से ?

—बबई से।

—क्या करता है वहा ?

—छाटा मोटा काम है। दाल-रोटी क लिए काफी।

बाली के चेहरे स ओछापन गायब हो गया और वह सहसा एक तीक्ष्ण बुद्धि, विनम्र व्यक्ति नजर आन लगा।

—तू सुना !

पर अपरिचितों की भरमार और फ्लशडोर वाले दो रेस्तरां साफ बता रहे थे कि शहर फल गया है।

फ्लशडोर वाले एक रेस्तरां में घुस गया। एक प्याला काफी बड़ी जरूरी थी। मीनू देखकर उसने निष्कर्ष निकाला कि नाम वही है जो बबई में हैं, —दामों में कुछ हेर फेर था। काउंटर पर एक लड़की बैठी थी। फैशन चला आया था।

पनीर के पकौड़े खा रहा था कि दो नौजवान टशटन करते दाखिल हुए। तीन चार चीजों का इकट्ठा आँडर दे कर बियर पीने लगे। उसने सरसरी तौर पर उन्हें देखा खूबसूरत थे, खाते पीते मालूम देते थे। जाने क्या उससे उनकी ओर फिर देखे बिना नहीं रहा गया। लेकिन इस बार उसकी दृष्टि को उनकी आंखों ने पकड़ लिया। दोनों ओछे प्रतीत होते थे—एक कम एक काफी। दोनों ने थ्री फाइव और रॉथमैंस की डिब्बियां मेज पर रखी हुई थीं।

अचानक उनमें से एक, काफी ओछा, उठकर उसके सामने आ बैठा और नुमाइशी डिब्बी उसकी ओर बढ़ता हुआ बोला—माफ कीजियेगा, क्या मैं आपको सिगरेट पेश कर सकता हूं?

वह एकदम चौकन्ना हो गया। उसने सोचा, बियर से पहले वे शायद व्हिस्की चढ़ा चुका हों।

—जी, जरूर! उसने कहा—लेकिन मैं पिऊंगा नहीं। शुक्रिया!

—क्यों नहीं पियेंगे? वह जोर देने पर तुल गया।

पूरा ओछा है। उसने मन ही मन सोचा और भावहीन स्वर में कहा—यह मेरा ब्रांड नहीं है।

—कौन सा ब्रांड है आपका? आगंतुक ने आंखें मिचमिचायीं।

—आप तकलीफ न करें। मैं इच्छा होने पर पी सकता हूं।

—या तो यह सिगरेट पीजिये, या अपना ब्रांड दिखाइये!

उसने एक क्षण में तय कर लिया कि गड़बड़ होने पर वह क्या करेगा। शाल सरका दिया। आराम से पकौड़ा चबाते हुए बोला—मेरे खयाल से आपको बियर का लुत्फ उठाना चाहिये और मेरे ब्रांड की चिंता नहीं करना चाहिये। मेरा ब्रांड आपको हर हालत में महंगा पड़ेगा।

आगंतुक की निगाह उसकी जर्सी पर अटककर रह गयी। वह जानता

था ऐसा होगा। यकायक वह उठा और बोला—उल्लू के पट्ठे ! साले और वह दबोचने की मुद्रा मे उसे घूरता हुआ ठहरा रहा। वह एकदम तैयार था। एक इच कमबख्त झुका नही कि टेबल के नीचे से उसके पेडू पर लात पडी नही।

—हरामी वह फिर बका।

उसे कोई उत्तेजना नही हुई। उसकी लात तयार थी।

—साले, गप्पू ! वह एकदम मुसकरा पडा।

उसने लात गिरा दी और आश्चयचकित रह गया।

—बाली उसने अविश्वास से कहा।

—तेरा बाप बाली आ जा ! उसकी बाहें फली हुई थीं।

वह उठा और उसके गले लग गया।

—कहा से पैदा हुआ ? बाली न उसे अपनी टेबल की ओर घसीटते हुए पूछा।

—सिगरेट ला ?

—तू ब्राड बता !

तीसर गिलास मे बियर उडेली जान से उसने रोक दिया। ग्यारह बारह साल का अतराल ज्यादा बेतकल्लुफी की सहूलियत देता भी नही

—कब आया ? निगाह फिर जर्सी पर जम गयी।

—आज।

—कौन सी गाडी से ?

फिर न चाहते हुए बताना पडा उसे—मॉनिंग फ्लाइट से।

—अच्छा ! बाली की निगाह जर्सी से एकदम हट गयी और उनमें सतुष्टि का भाव आ गया (जर्सी फ्राड नही !)—कहा से ?

—बबई स।

—क्या करता है वहा ?

—छोटा मोटा काम है। दाल रोटी क लिए काफी।

बाली के चेहर स ओछापन गायब हो गया और वह साहसा एक तीक्ष्ण बुद्धि, विनम्र व्यक्ति नजर आने लगा।

—तू सुना !

—बस ठीक है। दाल रोटी इज्जत से मिलती है। तेरी तरह।

—सिलसिला !

—कुछ पियें, बैठें, तभी तो बताऊ !

—तो आज नही, फिर कभी।

—तेरी मर्जी ! यही पर फोन कर देना, २६८२ पर।

—यहीं रहता है ?

—तेरे लिए रह लूगा।

काउटर पर लडकी मुसकराती रही। दम का नोट जस उसे दिखाई ही न दे रहा हो।

★

अभी आधे ही रास्ते पहुचा था कि सामने से रिंकू, टप्पू और पिताजी आते मिले।

—गप्पू भैया। रिंकू रुक गयी। सब ठिठक गये ।

—सूअर का बच्चा ! पर छूने को झुकते हुए उसके हाथो को मजबूती से पकडकर पिताजी उसे छाती से लगाने की कोशिश करने लगे—आकर फिर कहा चाला गला था। ढूढने निकला हू !

उनकी आवाज रुधी हुई थी। उनकी आखें नम।

उसकी दारुण इच्छा हो रही थी कि वे दो तीन वार और 'सूअर' कहे, सूअर का बच्चा नही।

टप्पू को उसने बाहो मे लिया तो वह सिकुडता ही चला गया।

—भैया आये घर की ओर चलते चलते उसने पूछा।

—आ गये। तुम्हारी राह देखते हैं, टप्पू बोला। उसकी आवाज उसे अटपटी लगी। उसने गौर मे देखा। हट्टा कट्टा छह फिटा गबरू हो गया था वह। नाक और कपोल लाल मुख हो गये थे सास से भाप उगल रहा था। दिसम्बर की वजह से। तब वह गिट्टा, एक पमली का और जनाने व मर्दाने के बीच के स्वर मे बातें करने वाला लडका लपाडी था, जिसे पतलूनें इसलिए नही सिलाकर दी जाती थी कि पता नही कब लबाई कम पड जाये, कब कमर छोटी हो जाये।

पिताजी उन तीनो के पीछे पीछे थे। उसे लगा वे जान बूझकर पीछे चल रहे हैं। उसने घूमकर देखा, उनकी गरदन उठी हुई थी। गरदन उठाये-

उठाये ठठाकर हस पडे । वह घवराया ।

—क्या हुआ ?

—वेवकूफ, तुझे देख रहा था, वे बोले ।

उसे पहले तो हैरत हुई । फिर वह समझ गया और करुण हो उठा । व भाई वहन जब उनके आगे पीछे चलते थे तो उनकी गरदन लगातार झुकी रहती थी । कोई उनके घुटना तक आता था, कोई कमर तक । ग्यारह बारह साल से वह उनसे दूर था । जहा दिसबर आते तो थे, मगर किसी और ही मूड मे । रिंकू, पिंकू टिंकू, टप्पू पप्पू—किसी के भी साथ नही । अकेले आते थे, पडे रहते थे । फिर चले जाते थे,

उस आखिरी दिसबर की याद है । फस्ट इयर मे था वह । भैया (पप्पू) नौकरियो के फेर मे थे । लगती थी, टूटती थी घर मे हर कोई दुआ करता था कि वे सरकारी नौकरी म आ जायें । टिंकू परेशान व उदास रहती थी । पता नही न पढने का फैसला उसने खुद कर लिया था, या कालेज छुडवा लिया गया था उससे । मा हमेशा पीछे पडी रहती थी—यह कर, वह न कर ! वह वडी अच्छी और शानदार लगती थी । लेकिन यही मुसीबत थी । यह सौदय और शान उसके पति और ससुराल की अमानत थे । और उनका कही पता नही था । वदकिस्मती से वे अमीरो के मोहल्ले म रहते थे—पुराने किराये पर । इसलिए दिखावा भी पूरा नही तो कामचलाऊ तो होना ही चाहिये था । तिस पर हरेक की वी ए, एम ए करने की ललक । हद हो गयी ! पप्पू को दसवें के वाद टाइप शार्टहैंड सिखाने की कसे रहते थे पिताजी, और वह कभी सीखकर नही देता था । रट लगाये रहता था—वी ए करा दीजिये । वी ए करा दिया । तब सबने गलती महसूस की—वी एस सी करानी चाहिये थी ।

★

उस दिसबर म सब चीजें उलट पुलट थी । पप्पू और टिंकू निराशाओ के गर्तों मे थे । पिताजी बीमार और टूटे हुए थे । मकान मालिक मुकद्दमा जीत गया था—दो साल का वकाया किराया चुकाना था । आग के लिए रुपये बढ गये । माताजी म नाती थी (साढे चार सौ मैं से सत्तर दे देते है । और क्या दें ? ले मर सौ ने! ठडा हो जा ! करमजला!) आखिरी हफ्ते मे दो हुए । टिंकू की सगाई और पिताजी द्वारा प्राविडेंट फड से उधार । ,

तय हुआ कि टिकू पढाई जारी रखेगी, क्योंकि लडका चाहता था कि वह बी ए पास हो।

उसे बुलाकर पिता ने कहा—देख लडके, यह सब पढाई फालतू है, और टैक्निकल एजुकेशन दिलाने का अकेला मेरा दम नही। तू टाइप शार्ट-हैंड पर जुट जा! वह भी पढाई ही होती है। पाच छः महीने मे डेढ पौने दो सौ का आदमी हो जायेगा।

उसी दिसबर मे उसने टाइप शार्टहैंड शुरू किया था। दो महीने से ज्यादा सीखना बेकार था। तीसरे महीने कालेज और कार्मार्शियल स्कूल की फीस जेब मे डालकर वह गया तो आधी रात को ही जाकर पता चला कि वह शहर मे नही है।

डेढ साल बाद एक चिट्ठी आयी और घर मे हाहाकार मच गया। जिस बेटे को मार चुके थे वह जी पडा था। लिखा था—मैं हू सुखपूर्वक हू। मेरी छोटी सी सेवा को स्वीकार करके मुझे पुण्य प्रदान करें। सबको यथा-योग्य साथ मे बबई से बना तीन सौ रुपये का एक ड्राफ्ट था। लेकिन वापसी का पता नही था। लिफाफे पर बडौदा की मुहर थी। तहकीकात हुई। दो महीने बाद प्रभुदयाल बबई पहुचे। वह पूना मे बरामद हुआ।

अक्तूबर के मध्य मे वह लौटा। टिकू ससुराल मे थी। पप्पू को काम मिल गया था—वही मिनिस्ट्री की क्लर्की। उसने पाया कि सब कुछ व्यवस्थित है, वही उखडा हुआ है। पिताजी ने कहा था, काम करना है तो काम करो। पढना है तो पढो, जी मे आये तो निठल्ले बैठो। पर यहा से मत जाओ। पप्पू चिडचिडाता था। दिन को नौकरी और रात को पढाई—तरक्की का यही रास्ता था उसके पास। नवबर मे एक दिन फिर निकल गया वह—दिसबर से कुछ ही दिन पहले। इस बार पप्पू ने फोटो सहित अखबारों मे इश्तहार छपवा दिया। उसने पडाव से एक गुमपता चिट्ठी लिखी—जहा भी हू, अपनी इच्छा से हू। कामकाज के फेर मे हू। आप फालतू चिंता न करें।

दो साल बाद उसने और एक चिट्ठी दी—बबई से। पिताजी ने दुहाई देकर लिखा—फौरन मिल जाओ। फरवरी मे पप्पू की शादी तय हुई है। तुम भाई हो या जानवर? बहन की शादी मे भी नही थे

वह फौरन नही आया। शादी स दो दिन पहले आया। लेकिन यह भी ज्यादा साबित हुआ। वह पीला, अतिशय दुबल और पिंजर मात्र नजर आता था। जिसन भी देखा, भत्सना की दृष्टि से देखा घर से भागकर जिंदगी बनान चले हैं। पप्पू बौखला उठा। बोला—जो भी रास्ता ढूढना है, यही रह के ढूढ !

उसने सुना और चुप हो गया। उसे दद था तो इतना ही कि अब वह घर के ढाचे मे फिट नही बैठता था। शादी वाले घर मे मरीज सा पडा था। खेलते कूदते, फलते फूलते घर की इमेज को स्क्रच करता सा। बारात मे वह *नही गया। बीमारी का बहाना कर दिया। भाभी आयी तो वह गुमसुम* स्टोर मे पडा था। पिंकू न कहा—भाभी को देख आओ, रस्म होती है !

—जाऊगा। जब भीड कुछ कम हो जाये, तो बता जाना।

सब खाना खा रहे थे। वह गया। दूर से देखा। लौटना चाहा कि मा ने पुकार लिया। उसने जाकर भाभी को प्रणाम किया।

उन्होन भीगी आखो के बावजूद मुसकराकर प्रत्यभिवादन किया और कलाई पकडकर बैठा लिया। टप्पू जो तब नेकर पहनता था, शुरू से उनक पास ही बैठा था, बोला—यह गप्पू है।

दो मिनट बाद वह खडा हुआ। सुबह पौ फटनी थी कि वह चल पडा। सिफ पिंकू जागी थी। और 'रास्ते के लिए!' कहकर एक पकेट देते हुए *वह उसके कधे पर गिर पडी थी।*

तब वह थोडे पैर फसा चुका था और तय कर चुका था कि मिटना है या मरना है। लेकिन प्राण जजर हो गये थे।

पाचवे बरस के पहले महीने मे उसने चिटठी लिखी। हमेशा की तरह—एक ड्राफ्ट के साथ।

जवाब मे चार चिटठया पहुची। मा, पिंकू पप्पू और पिताजी की। पिताजी ने कलपत हुए अपने को हजार जन्म का पापी घोषित किया था।

कोई खबर न मिलने पर तेरी मा ने एक ज्योतिषी को तेरी कुडली *दिखाई थी। उसने कहा था कि उन्ही दिनो तुम्हारी कही मृत्यु हो जाने की* सभावना थी, यान्त्रिक रूप मे मैंन उस पाखडी को कभी घर मे नही घुसने दिया। विश्वास तेरी मा को भी नही हुआ, किंतु उसी दिन से तेरे लिए

रोजाना एक खुराक निकालकर ब्राह्मण को देती रही है, तेरी चिट्ठी ग्राने पर बद किया है। तभी से फिर बेहाल है !

तब से वह जीवित था।

इधर से कहा जाता—रुपय मत भेजो, खुद ग्रा जाम्रो।

ग्रत मे उसका जिक्र होना फिर से समाप्त हो गया। वह जो भेजता, रख लिया जाता। वैसे भी तब किसी चीज की कमी नही थी। पप्पू सुपरिंटेंडेंट हो गया था। पिताजी रिटायर हो गये थे ग्रौर इकट्ठा पैसा मिल गया था।

प्रभुदयाल की जो तीसरी सतान है, वह हुई, न हुई बराबर है—छोटे शहर म यह बात ग्रचचनीय सीमा तक जानी जाती थी।

पिछले कई महीनो से वह लबे ग्रवकाश पर जाना चाहता था। साढे छ वरस के, रात दिन के विचार से शून्य परिश्रम के बाद यह कुछ ग्रस्वाभाविक नही था। पिछले दो साल मे से एक साल बराबर उसका वक्त मोटर, ट्रेन ग्रौर वायुयान से यात्राग्रो मे बीता था।

दिसवर ग्राते ही वह बेकरार हो उठा। छुट्टी का कायक्रम बनाया। मार्केटिंग मनेजर का दिल्ली का टूर रद्द करके स्वय जहाज पर सवार हो गया। उसे दक्षिण भेज दिया।

★

कुक्की से छोटी उसे ग्रब दिखाई पडी थी। दोपहर भर वह सोती रही थी। ग्रब खूब हुडदग कर रही थी। ग्राली !

खाने के बाद सब ग्रपन ग्रपन कमरा म सोने चले जाते थे। ग्राज कोई नही गया। सिवा मा के। सोन से पहले उन्ह पाठ करना था। माला जपनी थी। टप्पू ने बताया कि सोते सोते जग जाती है तो फिर शुरू कर देती हैं तब रात एक बजे तक वे चौके म रहती थीं।

सब बतियाना चाहते थे। सबके बिस्तर भाभी ने ग्रपन कमरे म लगवा दिये। कुक्की सो गया था। ग्राली को वे थपकिया दे रही थी।

—टिंकू कहा है ? उसने पप्पू स पूछा।

—दिल्ली। शायद कल ग्रा जाये। सुबह फोन कर दूगा।

—ग्रब ग्रच्छी है ?

—खूब। बीच म उन लोगो की बदली मद्रास हो गयी थी।

इससे ज्यादा जिज्ञास करना उसे अच्छा न लगा। वैसे वह जानना चाहता था कि जीजाजी कौन हैं, क्या काम धधा करते हैं। उसे उनका नाम भी बिसर गया था।

आली सो गयी। भाभी कुछ बुनती रही। पिंकू और टप्पू चुप सुन रहे थे। रिंकू भाभी के परो मे घुसी हुई थी।

—चाच्चा, चाच्चा। तु काशें आये? अचानक सोते सोते कुक्की बड-बलाया—चाचा चाचा! तुम कहा से आये?

भाभी के ओठो पर गहरी मुसकराहट नाच गयी। सो ही सबके। उसका हाथ छाती से हटाती हुई बोली—सारा दिन मुझसे पूछता रहा कि चाचा कहा से आये। मैंने कहा हवाई जहाज स। फिर कहा बबई से। दोनो म गडबड कर गया। तुमसे पूछने की घात मे था।

वह मुसकराकर रह गया।

—कुछ बताओ गप्पू! पप्पू ने कहा।

—क्या?

—बबई मे हो?

—हा।

—शुरू से?

—करीब करीब।

—अपना काम करते हो?

—हा।

—कब से?

—साढे पाच छ साल हो गये।

—काहे का बिजनेस है?

भाभी ने टोक दिया—जाने भी दो न! कुछ कल पूछ लेना। इतवार है।

—अच्छा, तो कहकर उन्होने करवट बदल ली। लेकिन फिर पलट गय। पर आखें मूदे रहे।

उसने टप्पू से पूछा—तू क्या कर रहा है?

—बी टक।

—काहे से ?
—इलेक्ट्रिकल इजीनियरिंग से।
—दिल्ली से ?
—हा। आई आई टी से।
—बडा आदमी हो जायेगा तो!
टप्पू चुप रहा।
—और त पिंकू ?
—जी, भया ? वह जैसे तद्रा से जागी।
—क्या करती है ?
—कुछ नहीं, कालेज जाकर पढ़ा आती हू।
—तो ?
—क्या करू, समझ मे नही आता। तुम बताओ !
शादी ! उसका मन हुआ उसे छेडने को। पर बोला—बताऊगा।
धीरे-धीरे सब सो गये। भाभी बुनती रहीं।

उसे शारीरिक बेचैनी होने लगी। बरसो की आदत थी ग्यारह बारह बजे खाने की। आज दस बजे बिस्तर मे था। चाय की बेवजह हुडक उठने लगी। वहा होता तो उठकर खुद बना लेता।

—भाभीजी ! आखिर उससे नही रहा गया।

—हा जी ! हस्व मामूल व आखो से मुसकरायी—जसे उ ह मालूम हो कि वह बुलायेगा ही।

—एक बात कहू ? वह सकोच से बोला।
—बोलो ! उन्होने सलाइया रोक दी।
—कितने बजे सोती है आप ? उसका विचार बदलने लगा।
—सबके सोने के बाद।
—सब सो गये।
—तुम नही।
—मुझे तो नीद नही आ रही।
—क्यो ?
—आदत नही।

—बत्ती बुझा दूं ?
—सो भी नही मुझे रोशनी म ही नीद आनी है।
—इसका मतलब तुम अभी बडे नही हुए।
—सच होगा।
—लोरी सुनने की भी आदत होगी तो ?
—बिलकुल नही। रेडियो हर आ।जाये तो आफ करने को मन होता है।
—कैसे लडके हो ? रोशनी की आदत है, लोरी की नही।
—बिगडा हुआ। वह हसकर बोला।
भाभी की मुद्रा मदुल हो उठी। आखें स्निग्ध।
—वह बात क्या थी ? अचानक उन्हे याद आया।
—पहले सोचा था नही कहूगा।
—क्यो ? अब ?
—कहूगा एक शत पर।
—क्या ?
—बत्ती नही बुझायेंगी तो।
—अच्छा ! बता।
—मुझे जल्दी सोने की आदत नही। वह फिर झिझका।
—यही ?
—नही। बिना चाय के उससे रहा भी नही जा रहा था।
—फिर ?
—दरअसल वह कहनी नही, पूछनी थी। अब उसे डर लगने लगा।
—जल्दी करो। वे परेशान हो उठी।
—थोडी चाय पिलायेंगी ? कहकर वह थोडा हाफ गया।
सलाइया गोले म कोचकर वे फौरन उठ खडी हुइ।
—एसा कीजियगा बात पूरी न करके वह सर खुजाने लगा।
—बोलो भी !
—मैं आपके साथ आ जाऊ ?
—आ जाओ !

रसोई मे जाकर उन्हे पता चला कि वह क्यो आया था साथ मे नखरे करने के लिए। पूछने कि कौन-सी चाय है? लिप्टन या ब्रुक ब्राड? डस्ट या लीफ? येलो लेबल या ग्रीन? माथापच्ची। साथ मे विधि बताता गया तीन कप पानी उबालिये। दो कांच के गिलास—इसमे एक चम्मच चीनी, उसमे डेढ़! एक कप दूध, बिना मलाई का। चलनी मे दो चम्मच पत्ती डालकर इस गिलास के ऊपर रख दीजिये! ऊपर से उबला हुआ पानी डालिये डेढ़ कप। अब चलनी मे एक चम्मच और पत्ती। दूसरा गिलास। ऊपर से पानी। दोनो मे दो दो कप मीडियम, थिन चाय। पीजिये—दिन भर खुशिया

—नुक्ताचीन! भाभी ने कहा। माजी मुझे मारें अगर ऐसी चाय देती देख लें तो!

—उसने नही कहूगा।

—शैतान।

दोनो गिलास उठा कर वह कमरे मे आया।

—लीजिये! एक गिलास उन्हें देता हुआ बोला।

—मैं क्यो?

—मेरे लिए।

—पर क्यो?

—अकेले पी नही जाती, आदत है।

उन्होने गिलास थाम लिया। ऐसा लगा जैसे उन्होने स्नान किया है। लेकिन वे महज मुसकरा रही थी। वे समूची मुसकराती थी। सहज ओठो से नही।

—कितनी बार चाय पीते हो?

—हिसाब नही।

—तो बहिसाब तुम्हें मिल जाती है वहा, साथ देने के लिए?

—तसव्वुर!

—बेशर्म!

वह ललका, कि दोबारा कहे वह। पिताजी ने भी बाद मे 'सूअर' नही कहा था।

—कब तक तसव्वुर करोगे ?
—जब तक सुधर नही जाता।
—सर्टिफिकेट दिला दू ?
—ग्राप दे दीजिये।
—देती हू। ग्रौर कितने चाहिए ?
वह निर्वाक रह गया। ग्राखें उन पर टिकी टिक शून्य मे उतर गयी।
—भाभी जी ! इतने दिन ग्राप लागा के न होने पर मैंने बड़े कष्ट पाये। उनकी याद थोडी कम हो जाये तो ग्राप जैसा कहेगी, वसा कर लूगा।
—तो तुम यही रह जाग्रो।
—यह तो न हो सकेगा। ग्राप सब चले ग्राइये वहा।
—घर है ?
—है।
—कितन कमरे हैं ?
—तीन।
—सुना है बबई म तीन कमरो का मकान बहुत महगा मिलता है !
—महगाई जरूरत से बडी नहीं होती।
थोडी देर वे चुप रही। फिर बोली—यह सब तुम पिताजी को बता दो तो उन्ह तसल्ली होगी।
चुप्पी।
—ग्रच्छा। ग्रब तू बता, इतने दिनो तक तुझे भाई बहनो की, माता-पिता की याद नही ग्रायी ?
—जब से कुछ ठीक हुग्रा है, तब से ग्राती है।
—उससे पहले ?
—ग्रपना भी कुछ पता नहीं था।
—बहुत दुख झेला ?
—वक्त था, गुजर गया !
दो क्षण बाद बोला—भैया के बारे म कुछ बताइये !
—सुबह बताऊगी। सो जाग्रो ग्रब।
—मुझे सुबह बिस्तर मे चाय की ग्रादत है !

—अच्छा।

—पिताजी को मत बताइयेगा।

वे सलाई को सलाई से जोडते हुए मुसकरायीं। वह रजाई में दुबक गया।

★

—गुदगुदी धूप थी। थोडी लाल लाल। एकदम दिसंबर में तब भी ऐसी ही होती थी। चारों जनें सरसों के तेल की मालिश कर रहे थे। वह, पिताजी, पप्पू और टप्पू। पिताजी ने सब उगलवा लिया।

एयरकंडीशनिंग और रेफ्रीजिरेशन का बिजनेस है। सेल्स एंड इंस्टालेशन। गैरेज है, ऑफिस है। ३०-३२ कर्मचारियों का अमला है। दो हजार तनख्वाह लेने वाले भी हैं उनमें। यह सुनकर उनका गर्व बहुगुणित हो गया जब उसने बताया कि प्रारंभ उसने मामूली मकेनिक से किया था।

—सुन, एक काम जिम्मे ले। जरा फुरसत निकालकर मेरठ तक हो आ। पता बता ले जाना। एक लडका है निगाहों में, पिंकू के लिए। परख कर राय देना अपनी।

—अच्छा। इस संबंध में वह कई एक सवाल करना चाहता था। उनसे, पिंकू से, पर बाद के लिए टाल गया।

—यार दोस्त की तरह बात करना, रिश्तेदारी का भरम पाल के कुछ नहीं पता चलेगा।

पप्पू ने एतराज किया—दुनिया भर की ऊंच नीच से वाकिफ आदमी है, पिताजी। ये क्या समझाने की बातें हैं?

—इसीलिए तो भेज रहा हूं।

पुट्ठों पर जोर आजमाइश चल निकली।

धूप चुभी तो वे बरसाती में हो गये।

—एक बात पूछनी थी आपसे, पिताजी। टप्पू तू भी सुन। मौका चुनकर कहा उसने।

—बोलो।

—टप्पू, पहले तू बोल। इस साल तेरी बी. टेक. खत्म हो जायेगी न।

फिर क्या इरादा है ?

—नौकरी करूंगा, टप्पू ने कहा।

—आगे नही पढ़ेगा ?

—जैसा भी होगा, कर लूंगा।

—पागल जैसी बात करता है। पक्का जवाब होना चाहिये।

—मेरा खयाल है, टप्पू झेंपता हुआ बोला, आगे पढ़ने से कोई फायदा नही है।

—यह बात समझ म आयी, उसने नुक्ता लेकर आगे बढ़ते हुए कहा—पिताजी, मैं सोचता हू, इसे बजाय नौकरी के अपने काम मे डाल लू। आप क्या कहते हैं ?

—जरूर ! पर कैसे ?

—मुझे एक दफ्तर और गैरेज दिल्ली मे खोलना ही पड़ेगा। साल भर बाद वह जरूरी हो जायेगा। जून यह म यह इम्तहान वगैरह दे लेगा तो इसे अपने पास बुला लूगा। पाच छ महीने म मोटी मोटा बातें भी सीख जायेगा और बाद म यहा आकर सभाल लेगा।

—क्या ख्याल है टप्पू ? पिताजी ने पूछा। टप्पू चुप रहा।

—इससे, टप्पू, होगा यह कि तू जिंदगी के ढर्रे से बचकर नही रहेगा। नौकरी म यही होता है। और ढर्रा, मैं बताऊं, दो हजार रुपये से शुरू होकर भी उतना ही बुरा है जितना पचासी रुपये से शुरू होकर। अपने काम मे आदमी जिम्मेदारी सही तौर पर उठाता और निभाता है। तेरी काबलियत भी बनी रहेगी, कारीगरी भी और ऐक्टिविटी भी। इनके रहते आदमी कभी भी धोखा नही खाता। माल बनता ही रहता है। जमती है बात ?

—हा !

—खाली हा नही, ठीक से बता !

—सुनो, पप्पू न कहा, तुम्हारी बात मुझे एकदम जमती है इसके बारे मे, लेकिन फिर भी इसे सोचने का मौका दो।

—मजूर है। पर याद रख, यह सोचकर पढ़ाई से दिल मत खसका लेना कि अब तो अपना राज होने वाला है। अगर डिग्री कम या गलत हुई

तो घास नही डालूगा ! इतना कहकर उसके कान मे फुसफुसाया—तुझे मैं इसलिए पटा रहा हू कि तू एक्सपर्ट किस्म का आदमी होगा, जबकि मैं जाहिल हू। मैं टेक्नोलाजी के बारे मे क्या जानता हू ? कुछ नही, एक टैक्नीकल आदमी के टैक्नीकल बिजनेस करने म जो शान है, वह मेरे जसे के करने मे नही हो सकता। फिर यह भी जरूरी नही कि सारी उम्र तू ठडक पैदा करने के चक्कर मे ही पडा रहे। तू कारोबार बढा सकेगा, क्योंकि तेरी जानकारी बहुत ज्यादा होगी। समझा न ?

—समझा।

★

नहा धोकर उसने कुक्की को उगली से लगाया और चप्पलें पहन ली—मैं जरा मोहल्ले की शक्ल देख आऊ।

—अपनी भी दिखा आना किसी को। मा न कहा।

मिशन कालेज के मोड पर, उन्हीं पुराने दो नाश्ताघरो के बाहर कुछ लेक्चरार और टीचर किस्म की महिलाए खडी थी, मीठे पान बनवाती हुई। वह सिगरेट लेने बढा। दो की नजर उस पर पडी और वे ठिठक गयीं। उसने उन्हे ध्यान से देखा। एक ने चोरी से हाथ बढाकर एक और का ध्यान दिलाया। वह भी चिहुकी। वह तीनो को पहचान गया। सबसे ज्यादा स्थिर होकर देखने वाली रजना थी—के जी से छठे तक उसके साथ पढी थी। उसी ने उसे सबसे पहले देखा था। यकीनन ब्याही जा चुकी थी। वह गुजरते गुजरते रुक गया और मुसकरा उठा। रजना ने उस पर से दृष्टि हटाकर पुन जारी बातचीत का सूत्र पकडकर अतिम वाक्य बोल दिया। एक जारदार ठहाका लगा। ठहाके मे वह उड गया। ठहाके का दम टूटने पर उसकी नजर फिर उस पर पडी। पहली हसी के शेष चिह्न झटककर उसने एक कृत्रिम विवश मुसकान ओढी और कहा—क्या हाल है?

और मुसकान लुप्त। दृष्टि सखियो पर।

वह कानो तक लाल हो गया। सिगरेट लेकर वापसी पर कई कदमो पर्यंत लडखडाया सा रहा।

पूरी सिगरेट फूककर मिगलानी साहब के घर की ओर बढा उनके बेटे बेदिया भी उसके हमजोली थे।

—नमस्ते, मौसीजी !

—नमस्ते बेटा, कब ग्राया ?

—कल ग्रोम है ?

—हा, है ! ग्रोम ?

—जी मम्मी ! ग्रदर से ग्रोम बोला ।

—देख गुलशन ग्राया है !

—ग्रा भाई खालसे ! निकल ग्रा ग्रदर को । दाढी कर रहा हू ।

—ग्ररे खालसा नही, दूसरा ! गप्पू ! मौसी ने गलती सुधारी ।

—ग्रोह ! गप्पू ? कहा से भाई बैठ ग्राता हू । या इधर ही ग्रा जा !
ग्रदर गया । वह सचमुच दाढी बना रहा था ।

वही कमरा था, जो तब होता था । तीन दरवाजे—एक पीछे ग्रागन मे खुलता था, दूसरा गलियारे मे ग्रौर तीसरा ग्रागे । पर, उसे लगा, उसमे कुछ ऐसा था जो पहले नही होता था ।

—बोल भाई !

—तू बोल ।

—मैं क्या बोलू ! ग्राया तू है इत्ते बरस के बाद, ग्रौर बोलू मैं !

उसी क्षण खनखनाहट हुई । एक जनाने हाथ ने गलियारे वाले दरवाज का परदा, जो पहले ग्राधा था, पूरा खीच दिया ।

ग्रोह ! उसे याद ग्राया । तब ये परदे ही नही थे दरवाजा पर ।

—मैं तो वैसा ही हू । उसने मुसकराने की कोशिश की ।

—ठीक है । तू तो वसा ही रहेगा भी । बाकी कैसा है ?

—बाकी म तेरा भी ग्राता है ।

—तो मेरा पूछे !

—तेरी सेहत तो बताती है कि शादी वगैरह कर ली है !

—जरूर कर ली है । बिना किये रबजी का काम काज मदा पड रहा था । कुछ बच्चा की रूहें वकट थी ।

—कितन बच्चे हैं ?

—बनान से कोई फायदा नही । बुढापे म पता चलेगा कितने काबू मे है, कितन बेकाब । बकाबूग्रो को नही गिनूगा ।

दालान वाले परदे मे से एक महिला ने आधा झाका और निर्विलब कहना शुरू कर दिया—क्या करते हैं आप भी। बैठे हैं तो बैठे हैं और अगर पानी फिर ठडा हो गया तो मुसीबत फिर मेरी। क्यो नही नहा लेते!

—आ रहा हू न मैडम! तुम्हारे और तुम्हारे बच्चो के ही गुण गा रहा था लो जी मिलो, यही हैं!

महिला ने उसकी तरफ बिना देखे अपने दोना हाथ माथे तक ले जाकर गिरा दिये और पति से कहा—बाकी मन म गा लीजियेगा! और परदा गिरा दिया।

—मैं चला भाई! वह बोला।

—बैठ न, मैं जरा ताजा हो लू!

—नही, चलूगा।

—फिर आयेगा?

—आऊगा।

निकलती बार फिर मौसी मिली। उनके मुह से कुछ निकलते निकलते रह गया, बीच मे बाधा हुई। कोई चिल्लाया (मानोकामना या तिलोत्तमा मे से)—मम्मी छुरी नही मिलती!

इस पर मौसी तुरत व्यस्त हो गयी। बोली—अच्छा बेटा, आना फिर आना, अगर रहे तो। मैं रसोई मे भागू, तेरी बहनें बैठी हैं!

कुक्की के साथ चलते चलते उसे कै-सी आने को हुई, लेकिन सभला रहा वह। सिगरेट और सुलगा ली।

एक अजहद खूबसूरत व विराट, तिमजले मकान के आगे वह बेसाख्ता रुककर कुछ ढूढने लगा। लगा, वहा एक बगला था।

निचली मजिल की खिडकी मे से किसी ने पूछा—कौन चाहिये?

वह क्षमा मागकर निकल जाना चाहता था, मगर देर हो चुकी थी। खिडकी मे से झाकने वाला सामने आ चुका था।

—एक टाग होती थी यहा। आप बता सकते हैं कहा है?

—कौन सी टाग?

—सूअर की सूअर का नाम था इद्रराज नागपाल।

सामने वाला सामान्य होकर बोला—ठीक है न यार! ढूढ ले ऊपर

आकर, सरेआम असलियत को क्यो बयान कर रहा है ? वह बठा न बठने के लिए।

—कहा की धूल छानकर आ रहा है ? छुट्टे साड की तरह ?

—दुनिया जहान की।

—तभी थोबडे से दस बारह बरस से याद नही पुछी।

एक क्षण को उसे लगा, यह बात एकदम सच है—इन बरसो के निशान जरूर होगे थोबडे पर। बोला—क्या धधा कर रहा है यह बता।

—मैं नही करता अपने आप होता है।

—कैसे ?

—सरकार के क्लर्कों की तनख्वाह जब तक कम है, तब तक मेरे जैसो के धधे दूसरे ही करेंगे। मैं बैठा रहूगा और इस बिल्डिग के ऊपर हर साल मजिल चढती जायेगी।

—गुड।

—मेरी राय माने तो दूध पीते बच्चो की तरह असलियत बकना छोड दे। सोमरस पिया कर। जानता है एक टन दूध की एक बोतल व्हिस्की के आगे कोई अहमियत नही है।

—अच्छा।

—घर जाकर धूल पोछियो पहले थोबडे से।

—अच्छा।

—और फिर आ जइयो ठेकेदारी मे।

—बाल बच्चे कैसे हैं ? उसने उकताकर पूछा।

—बाल बच्चे हिप्पोक्राइटस के होते है।

—फिलास्फर हो गया है।

—फिलास्फर का अडा। मलीद वो हैं। नागपाल ने मिगलानी के घर की ओर हाथ उठा दिया—तेरे दोस्त।

—व्हाट ?

—अबे हा मा की उनकी मा आर्य समाज के लिए चदे उगाहती फिरती है। गावो मे जाकर प्रचार करती है, और अपने बेटे, साले से लखपतियो की मासूम लडकी फसवाती है। अपनी बटियों का।

मे डालकर घूमती है। शाम को गुजर जाने देती है और खाम के सामने लहगा उठा देती है। ये स्साले ।

—चुप यार।

—अच्छा चुप।

—चलता हू।

—मिलना फिर ।

—जरूर।

चौराहे पर पहुचा तो सामने वाली सडक से वही दोनो लडकिया आती दिखायी दी जो मिशन कॉलेज के पास रजना के साथ खडी थी। उसे देखकर दोनो ने अपनी चाल धीमी कर दी। उसकी चाल, यानी बुक्की की चाल। उसे बडी हैरत हुई उनके पीछे होकर चलने पर। उसने घूमकर देखा, उनके चेहरे पर घृणा, भय तथा वीभत्स लज्जा थी। जैसे वह पुराना दुराचारी हो और उन्हे उसी क्षण उससे अपने शीलभग का खतरा हो। वह जल उठा।

वह रुक गया कि वे आगे निकल जायें।

पर वह दग रह गया। वे भी रुक गयी थी। और भाव ऐसा जसे कह रही हो प्लीज नो!

हाथ से उसने इशारा किया—निकल जाइये! वे हिली तक नही।

जाओ! वह चिल्लाया—आगे निकल जाओ!

और वे दोनो उसके सामने से यू निकली कि उसका मन उन्हे जिन्दा सूली पर लटका देने को हुआ—पलट कर मत देखना! वह गुर्रा पडा।

घर पहुचा तो टिकू दीदी आ चुकी थी।

उनके सामने उसे जाने क्यो बडे जोर की रुलाई आ गयी।

★

टिकू के दोनो बच्चे, बुक्की और रिकू कुछ पडोसी बच्चो के साथ ऊधम मचा मचाकर खेल रहे थे। वह नाहक बहलने की कोशिश कर रहा था। टिकू से ढेर सारी बातें करके भी वह अपनी जगह पर ही था। प्यार करने की बहुत क्षमता हो आयी थी शायद उसमे। पर वे सब जानते थे कि दूसरे से पाया हुआ प्यार अपनेपन की गुत्थियो का उपचार नही हो सकता। वे सब

एक दूसरे को चाहते थे अब, लेकिन हरेक के पास वैसा कुछ बना ही रह गया था, जो तंग करता था, या तनहा कर डालता था। तब लड झगडकर भी विपत्तियां खत्म करती जाती थी।

टिंकू से उसने पढने को कोई किताब मागी। उसने कई दी पर, किसी को भी वह शुरू नही कर सका। दस बारह साल बाद कोई किताब नहीं पढी जा सकती। दिसबर भी इस मामले मे कोई सहायता नही कर सकता।

सिगरेट पीना चाहता था। पर उसके लिए बाहर जाना पडता। (दस बारह साल बाद जिंदगी में सिगरेट भी आ चुकी होती है।)

पिंकू ने आकर कहा—अनुराधा आयी हैं। तुम्हे बुलाती हैं।

उसने चकित होकर उसकी तरफ देखा।

—तुम्हारी उनसे कितनी जान पहचान होती थी! याद नहीं?

—है न बाबा! तब बहुत सी पहचानें थीं। पर अब? क्या कहती हैं?

—बुलाती हैं! अब पिंकू चकित हो रही थी।

—उनसे कहो न यहीं आ जायें। उसने विनती की।

पिंकू चकरायी सी चली गयी।

—नवाब साहब, बाहर तक नही आ सकते! अनुराधा ने प्रवेश करते हुए कहा—मैं सोचती थी एक बार, आये हो तो, मेरे यहा भी हो आओगे! पर देखती हू गलत सोचने की मेरी आदत अभी तक बनी हुई है।

—गलत सही की न छेडो अन्नू। मैं बहुत अनमना-सा बैठा था। लगता है तुम्हे देखने की खुशी भी अब बेहतरी नहीं ला सकती। कहो, हो कैसी तुम? क्या क्या गुजर गया इस बीच?

—देखू, मुझे देखकर कितना जान पाते हो!

—पिंकू! उसने बाहर आवाज लगायी, पिंकू आयी तो बोला—चाय पिला सकती हो? फिर अन्नू की ओर देखते हुए बोला, कुछ तो बोलो, बताओ!

—सुना है तुम इन दिनो बहुत सफल पुरुष हो गये हो!

—हा, याद आया! तुम अभी तक यहीं हो?

—कहा जाना था मुझे? अन्नू ने आखें फैलाकर पूछा।

—बुद्धू, मैं समझता था और बहुत से लोगो की तरह तुम भी बुद्धिमान

हो गई होगी जरा बहुत ।
—तुम्ही बताओ तो ।
—ससुराल वगरह नही गयी तू अभी तक ?
थोडा हिलकर अन्नू जड हो गयी। आखें आर्द्र हो उठी । बोली—मुझे याद नहीं था तुम तो एक उम्र बाद आये हो न !
—फर्क क्या पडता है ?
—होने तो शायद पड जाता !
—क्या बात है, अन्नू ? वह उसके वाक्य की गहराई तक उतरता बोला—ससुराल की कहो न !
—गयी थी। वापस आ गयी।
बातें सब बिखर गयी। रुक रुककर, अटक अटककर निकलती।
—कब गयी थी ?
—साढे पाच साल हो गये।
—लौटना कब हुआ ?
—असल मे हफ्ते दस दिन मे ही सब तैयार हो चुके थे। पर पाच छ महीने मुझे खीचन ही थे। सो भी चार ही खिचे। जबानी तौर पर सब तभी हो गया था। छह महीने और समझ लो—गुड्डी के होन तक। पिछले साल कानूनन हो गया—तलाक !
—कौन कौन है अब घर में ?
उसके नेत्र फिर झलमलाये।
—गप्पू, मैं बार बार भूल जाती हू कि तुम्हें गये बहुत साल हो गये। कम से कम कितन ? दस-बारह !
—यही कुछ !
—तभी !
चुप्पी। वह इतजार करता रहा।
—पहली बार जब तुम आये थे न, टिकू दीदी के ब्याह के बाद, तो डैडी गुजर चुके थे। मम्मी अब कभी भी चली जायेंगी। टागें उनकी चली गयी हैं। बाकी सब हैं।
—भाई साहब, दोनो छोटे, और ?

—मोहिनी।

—कित्ते-कित्ते हो गये?

—जगहे ढूढने लायक हैं सब!

—कोई परेशानी हो तो मुझे खबर कर देखना।

—अच्छा।

चुप्पी

—और कुछ नही बोलोगे?

—तुम्ही कोई बात करो!

—मैं क्या कर सकूगी?

—सो क्यो?

—बातें भी वे कर सकते हैं जिनके पास गिले शिक्वे, चिंता, सुख-दुख, कुछ हो

—बस जाने दो! उसने रोक दिया।

वह जाने लगी तो पूछा—कब तक हो?

—अभी तो हू। आओगी न बीच म, जब भी टाइम मिले?

—और तुम?

—जैसा तुम कहोगी और कभी छोटो को किसी बहान इधर भेज सको तो मैं मिल लूगा। रिंकू लिवा लायेगी।

—ठीक है।

—लेकिन तुम मत चूकना!

हसी की एक लकीर ने अनू का मुख धो दिया। मन आलोडित होन लगा। दस बारह साल बाद दोबारा कहने या अनुरोध करने जैसी चीजें अकसर छोड निकलती हैं। रिश्तो और लोगों के बीच जो होता है, वह इधर-उधर हो जाता है, उजड जाता है या स्थानातरित हो जाता है।

सोच रहा था कि बाहर निकलकर थोडा सिगरेट पानी पी आये, घूम-फिर आये, कि बारीक शोर का बडा ही अव्यवस्थित सा स्वर आया। छोटे-छोटे बच्चो की आवाजें। गेट हिल रहा था। किसी कार का इजन घर-घराया। बच्चे रिंकू को आवाजें लगा रहे थे।

—दर नबर की कोठी यही है?

—हां जी ! पिताजी की आवाज आयी, छत से। वैसे भी वे जोर हसे बोलते थे।

फिर सब अस्वाभाविक रूप से शांत हो गये।

—एम आई इन एटी टू माडल टाऊन ?

—येस्सर ! टप्पू और रिंकू की आवाज। वह हैरान हुआ। यहां के लोग ऐसी अंगरेजी क्या बोलने लग गये भला !

—मिस्टर डावर इज हियर ?

—येस्सर ! आई एम डावर !—पिताजी थे।

वह स्वयं बाहर निकलने को हुआ, पर रुक गया।

—ओह नो ! ए यंग डावर, फ्राम बाबे !

वह तैयार होने लगा।

—येससर ! बी सीटेड प्लीज ! टप्पू ने कहा। रिंकू दरवाजे पर खड़ी दिखाई दी, संदेशा लिये। चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थी—भैया वो मिलने आये हैं।

क्यो हकला रही है लड़की ?

और बरामदे में पहुंचते ही वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठा—निपन बाबू? आपनी !

—हाऽय ! ओफ ! आगंतुक ने उठकर उसे बांहों में भर लिया—व्हाट ए हेल ऑफ एनानिमिटी यू आर लिविंग इन ! एंड दैट टू एट माई नैक्स्ट डोर !

—नोमश्कार बोऊदी, निपेन बाबू की पत्नी को उसने श्रद्धापूर्वक अभिवादन किया। उनके बच्चे भी साथ थे।

—खोबर कनो दिले न आमाकेर ! बोऊदी ने अपनी शिकायत की। वह गौर कर रहा था कि कुछ बुड्ढे बुढ़िया और बच्चे निहायत अशोभन ढंग से गेट से गुजरते या खड़े उसके अतिथियों को ताक रहे थे। लेकिन घर के लोग सब अवाक क्यों हुए पड़े हैं ?

—आर की ? एशे तुमि कोखन रे !

और अतिथि के साथ वह बंगला में चटर पटर करने में लग गया।

उन दोनों के व्यस्त होते ही निपेन बाबू की पत्नी और मां, बच्चे, भाभी,

टिकू, रिंकू और पिताजी व मां से घुल मिल गये।

निपेन बाबू ने बड़ी मेहरबानी की थी आकर, जबकि यह वाकई धृष्ठता थी कि उसे पता नहीं था कि वे इसी शहर में हैं। बबई से आदी पावरी ने कोई चारा न पाकर उन्हें ट्रंक कॉल की थी। वह बिल्डर था और उसी की भांति निपेन बाबू का घनिष्ठ मित्र। कई प्रोजक्टों पर, जहां पावरी का कंस्ट्रक्शन था, उसकी कंपनी एयरकंडीशनिंग कर रही थी। कोई घपला हो गया था और उसे, यहां या कहीं भी होने पर, सूचना देना आवश्यक हो गया था। खोज खाजकर निपेन बाबू को उसने फोन कर दिया—अभी घंटे भर पहले। वह बहुत (सचमुच) शर्मिंदा था कि चलने से पहले वह उनके यहां होने की जानकारी नहीं एकत्र कर पाया था। निपेन बाबू उसे 'श्रोका' कहते रहे। बंबई के बुरे दिनों में भी वह उनके परिवार का दुलारा मित्र था। वे कई बरस वहां रहे थे—प्रशासनिक सेवा में—और उनका छोटा भाई उपेन, जिसका वहीं पेस्ट कंट्रोल का व्यापार था, उसका लंगोटिया था।

उसने हैरानी जाहिर की कि वे यहां कैसे पोस्ट हो गये। वे बोले कि यहां के मिल मालिकों ने कई तरह की अनियमितताएं कर करके शहर और आस पास की जमीनों पर एकाधिकार करने का कुचक्र रच डाला था, और कुछ कानूनी व प्रशासनिक असमंजस पैदा कर दिये थे। तब उन्हें नगर प्रशासक का विशेष पद देकर यहां भेज दिया गया।—क्या करें, नौकरी है।

चाय वाय के बाद, खूब मिल जुलकर जाते समय निपेन बाबू कहते गये कि उनके फोन पर कोई भी अवसर उठे, तो वह निर्भर कर सकता है। मंगल की रात को सपरिवार डिनर पर आमंत्रित कर गये। बता गये कि माडल टाउन से जुड़ी हुई हो जो नयी सी कॉलोनी है, उसी में उनका सरकारी आवास है। वहां पहुंचकर एडमिनिस्ट्रेटर की कोठी कोई भी बता देगा।

वह कालोनी दूर से उसने देखी थी। अजीब निगाहों से, क्योंकि तब वह नहीं होती थी।

बंबई के एक पुराने, सहृदय बंधु से मिलकर वह बड़ी स्फूर्ति अनुभव कर रहा था।

सोते समय भाभी बोलीं—परसों उनके यहां खाने पर जाना है।

—किनके ? अनजान बनते हुए उसने कहा।

—तुम्हारे दोस्तों के।

—मुझे भी ले जाना।

—तेरी उनसे बहुत जान पहचान है क्या ? पप्पू ने पूछा।

—बहुत दिनों से है।

—वह यहां के सबसे बड़े अफसर हैं। सब उनसे कांपते हैं। सेठों की तो छुट्टी हो रही है।

—तुम उनका नाम क्या ले रहे थे ? टप्पू ने पूछा।

—क्यों ?

—उनका नाम क्या है ?

—नपेंद्रनाथ राय

—ठीक है, वह बोल पड़ा—एन एन रायचौधरी।

थोड़ी देर बाद भाभी ने पूछा—बोऊदी भाभी को कहते हैं ?

—हां, कैसे मालूम ?

—मिसेज चौधरी ने बताया था।

—आपको अच्छी लगी वो ?

—हां, बहुत अच्छी। हम जायेंगे तो फिर वे भी आयेंगी। मैं समझती थी बड़े घरों की औरतें घमंडी ही हो सकती हैं।

—मिलें जुलें तो पता चलता है।

—कैसे मिलें ?

—घर से निकलें तो।

—तेरी तरह ?

—नहीं, उनकी तरह। वह हंसा।

—क्यों गप्पू, देर से चुप बैठी टिंकू ने पूछा—तूने बंगला कहां से सीखी ?

★

फिर वह उसी से बातें करता रहा।

सुबह वह आठ बजे से पहले ही घर से तैयार होकर निकल गया।

—चार-पांच बजे तक आ जाऊंगा। जाते जाते वह कह गया।

पोस्ट-आफिस जाकर उसने कुछ तारें कीं। कुछ फोन। और दिल्ली चला गया।

दोपहर ढली तो निपन बाबू की पत्नी के आगमन से सब विस्मित हो उठे। पप्पू के बच्चों से खेलते खेलते उन्होंने संदेश दिया—डावर का फोन आया था; दिल्ली से। कोई जरूरी काम आ पड़ने से वे दोपहर को कलकत्ता चले गये हैं। इसलिए रात को नहीं, सुबह आयेंगे। किसी की समझ में नहीं आया कि बिना सोचे-समझे और साथ में कुछ लिये कोई कलकत्ता क्यों जा सकता है?

—एक प्याला कॉफी पीकर और कल लाने की दोबारा याद दिलाकर 'बोऊदी' चली गयी।

मां ने टिप्पणी की—उसका दिल नहीं लग रहा यहां पर।

सुबह ग्यारह बजे वह लौटा तो पप्पू भी जा चुका था, पिंकू भी और रिंकू भी। टिंकू बोली—मेरे साथ चलोगे?

—नहीं। उसका स्वर निर्विकार था। चेहरा फूला हुआ था और आंखें लाल। कलकत्ते में वह काम निपटाकर पीने बैठ गया था। और सुबह तक बेसुमार पी गया था। नहाकर वायुयान में बैठा तो ऊंघ रहा था। अब वह थकान व चिड़चिड़ाहट से भरा हुआ था। फिर भी उसे लगा कि टिंकू को नहीं जाने देना चाहिये। नहीं ही। उसके साथ उसने अन्याय किया है।

—आज न जाओ तो हर्ज होगा? उसने पूछा।

—क्यों?

—तुमसे कुछ बातें करने की इच्छा थी।

—क्या बातें?

—ठीक नहीं मालूम, लेकिन करनी हैं। तुम रहोगी तो याद आ जायेंगी। वह उसकी ओर देखती रही। जाना कल पर टाल दिया—खाना वाना खा लो पहले।

लेकिन खाने का वह पांच मिनट भी इंतजार न कर पाया। थककर सो गया। भाभी खाना लेकर आयी, तो अचंभित रह गयी। दिनभर में दिन में नहीं ये सोते।

धूप ढली तो घर मे चहमह थी । सब ग्रा गये थे—पिताजी ग्रौर पप्पू के ग्रलावा । ग्राख खुलने पर हलका महसूस हो रहा था । मुह हाथ धो कर लौटा तो तिपाई पर खाना रखा था । भाभी खडी थी ग्रौर टिकू बैठी थी । मिनटो में वह थाली चाट गया ।

ग्रब फिर करने को कुछ नही था ।

वह बाहर निकल गया ! सिगरेट पीता कॉलिज रोड पर टहल रहा था ग्रौर जाने किन किन के ग्रभिवादन स्वीकार करता परेशान हो रहा था । सब ग्रजीब था । एक बुड्ढा बोला—एडमिनिस्ट्रेटर साहब ग्रापका घर पूछ रहे थे, मिले ग्रापको ?

—हा जी । ग्रौर ग्रभिवादना की छूत का कारण उसकी समझ मे एक-दम ग्रा गया ।

बूढा ग्रादमी खीसे निपोरकर बोला मैं ग्रापके पडोस मे रहता हू । सेवेंटी थ्री प्लाट मे कोठी है मेरी

उसने वादा किया कि वह उसके यहा जरूर ग्रायगा । उसे इस शहर के लोगो से ऐसी बातें सुनने करन की ग्रादत नही थी ।

ग्राधे पौने घटे बाद लौटा ।

—चाय पियोगे ? टिकू ने पूछा ।

—चाय तिपाई पर रखकर टिकू खुद ही पास बैठ गयी ।

वह जानता था, उसे उसने रोका था ।

—तुम्हे जाने देने को मन नही होता ।

वह मुसकरायी । कधो को दुलारा ग्रौर गाल चूमा ।

—क्यो ? ग्रब मैं इसका क्या करू कि तुमसे कुछ कहने की हुडक-सी उठती है, पर जबान पर कुछ नही ग्राता ।

वह चुप रही ।

—तू वैसे ग्रच्छी रही इन सब दिनो ? खूब ?

—हा, खूब ।

—जीजाजी ग्रच्छे हैं ? तुझ तकलीफ नहीं देते ?

—न ।

—लेकिन, यह वह सब नही है, जो मैं तुमसे कहना चाहता था ।

इस बार वह हठात हस पडी—याद कर लोगे धीरे धीरे।

—शायद अच्छा टिकू तुझे मुझसे कुछ नही कहना ?

हसता हुई टिकू की दृष्टि यकायक ठिठक गयी, एक बार उस पर उठी, और गिरी तो कपोलो पर अश्रुओ की दो रेखाए बह रही थी,

फिर कोई बात नही हुई।

रात को निपेन बाबू के यहा डिनर था।

★

वह घास पर टहलकर लौटा था। अखबार पढ रहा था।

घर पहुचा तो ओम मिला। उसे शॉक लगा। इधर उधर की बेमतलब चलने लगी।

—कहा हो आजकल ?

—बबई म।

—गुड। म भी आऊगा शायद।

— ठीक है, आओ तो फोन कर दना और मिलना।

—कोई अता पता दे दो।

—बोलने के जजाल से बचने के लिए वह भीतर गया और एक विजिटिग काड ले आया।

—यह मानव मदिर रोड कहा हुआ ? बबई नबर ६ ?

—मालाबार हिल म। वह बोलने म क्रमश असमथ होता जा रहा था।

—जहा फिल्म स्टार वगैरह रहत है ?

—नही। घर आकर अपमानित करने वाले इस जीव के विषय मे वह कुछ भी नही सोच पा रहा था। बोला—जहा मिनिस्टर रहते है।

—ओह! ओम ने जसे पूरी गुत्थी सुलझा ली—तभी तुम एडमिनिस्ट्रेटर साहब को जानते हो!

वह पानी पानी हो उठा, कुछ बोल नही सका।

ओम बठा रहा, बैठा रहा। फिर पूछ बैठा—मेरा एक और दोस्त बबई नबर ६ मे रहता है। ६ नबर कितनी दूर है ?

वह लज्जित सा बैठा था। समझ गया कि वह एक 'इटरव्यू का शिकार हो गया ह। वह छटपटाने लगा। क्या नही कोई अदर से आवाज देकर उसे

बुला लेता। अंत में वही चिल्लाया—टिकू, तौलिया रखो गुसलखान में।

खाने समय, बाग को जाने से पहले, पिताजी बोले—जरा वक्त निकाल कर मेरठ हो आ।

—कल चला जाऊंगा।

भाभी कपड़े धो रही थी। मां सुखाने को सब्जियां काट रही थी। टिकू आकर बोली—मैं जाऊंगी अब।

—जाओगी ही? वह याचना भरी मुद्रा में देखने लगा।

—दो चार दिन में फिर हो जाऊंगी। इस बीच तुम भी चले आना एक बार।

—और नहीं रुक सकती?

—तुम समझते नहीं, घर से इतने दिन इधर उधर नहीं हुआ जा सकता।

उसका चेहरा पीला पड़ गया। टिकू को आना है, यही मालूम था उसे। उसे 'अपने' घर जाना है, यह बात उसके ख्याल के आसपास भी नहीं थी।

तब, दस बारह बरस पहले, ऐसा नहीं था।

किसी तरह वह थोड़ा हंसा और बोला—तुम्हारा जो घर है, वह मेरा नहीं हो सकता?

टिकू ने मुंह फेर लिया। बोल नहीं सकी।

बच्चे आये।

—मामाजी हम जाते हैं।

—कहां? उसने जान बूझकर पूछा। या शायद बेसाख्ता।

—घर। वे सहज में बोले—हमें प्यार कर लो?

बरामदे में सब तैयार खड़े थे। जाने वाले उस तरफ, बाकी इस तरफ। सबके देखते देखते उसने टिकू के पैर छू लिये, और चार दिनों की रुकी हुई टिकू फफक उठी और हिचकियों में बंध गयी। तब कभी उसके पैर नहीं छुए थे उसने। उसकी बांहों में होने और माथे पर प्यार लेने के लिए उसे झुकना पड़ा। तब ऐसा भी नहीं था।

इससे पहले उसने टिकू को कोई विदा नहीं दी थी। जब उसे उसके घर भेजा जा रहा था, तब वह जाने कहां था।

★

कपडे धोकर भाभी आगन मे बैठी थी । हाथो पर वस्लिन मल ही थी । सामने कघी शीशा रखा था ।

वह जहा था, वही से चिल्लाया—भाभी चाय पानी है !

सब वही छोडकर वे उठ गयी । पीछे पीछे वह रसोई के द्वार पर पहुच गया—अपने लिए भी बना लेंगी ?

वे आदतन, मुसकरा पडी । थोडा रहस्य से ।

गिलास उसे देते हुए बोली—तुम्हारा मन क्या नही लगता ?

—कैसे जाना ?

—बार बार सिगरेट पीने जाते हो, चाय पीते हो । और भी कुछ पीते होगे ।

वह स्तब्ध रह गया ।

—आपको कस मालूम कि सिगरट पीता हू ?

—मालूम हो जाता है ।

—कुक्की न तो नही बताया ?

—नही । लेकिन छिपाते हो तो उसके सामने भी मत पीना ।

—अब नही पिऊगा ।

—मरे सामने पी लेना ।

दोनो धूप मे बठे रहे ।

—मैं 'वह' भी पीता हू । अचानक वह कह उठा ।

— हो सके तो मत पिया करो । वे निर्विकार रही ।

—आपको गुस्सा नही आया ?

—नही ।

—भया ने भी पी है कभी ?

—नही ।

—तुम दोनो एकदम सुखी हो ?

—एकदम ।

—कभी भैया मेर बार मे कहते थे तुमस ?

—हा ।

—क्या ?

—सोचते थे, तुम अभागे हो !

—तुम भी ?

—कभी कभी।

—क्यो ?

—नही बता सकती।

वह चुप रह गया।

—तुम्हे मालूम है मन क्यो नही लगता ?

—औरतो के लिए तो मन न लगने की कोई बात नही होती।

—क्या ?

—वे अपना मन एकदम दे डालती है !

—और मर्द ?

—उनके लिए दुनिया के दस और झंझट होते हैं ! इसीलिए तो मैं सोचती थी !

—क्या ?

—जो तेरे भैया सोचते थे।

—उखडा हुआ मन नही लग सकता, भाभी ?

—

—दे—देने से भी नही ?

—जो अपना रास्ता खुद बनाते हैं उनके लिए मन देना मुश्किल होता है।

—क्यो लेकिन ?

—दुर्भाग्य का भय खो देते हैं, सो !

—उससे क्या होता है ?

—भाग्य मे कुछ नही बचता।

शाम घिरने से पहले बरामदे मे छोटी लडकियो का शोर नाच उठा। पक्षी वियाबानो की ओर निकल गये थे। शोर से निकलकर रिकू आयी।

—अन्नू दीदी बुलाती हैं।

—कहा ?

—बाहर।

अन्नू बाहर रिंकू और उसकी सहलियो का मेल देख रही थी। आते ही अलग कोने मे जा बैठी।

—अच्छा किया अन्नू, जो चली आयी।

—नही तो?

—मैं सोचता रहता।

—जिसे सोचना था, उसने नही सोचा। तुम क्यो सोचते हो?

—इसीलिए सोचता हू।

—अब तुम अपने बारे मे सोचो।

—मेरे बारे म तुम सोच देखो न!

—मैं किस मन से सोचू! अब क्या सोच सकती हू?

उसकी बात सुनकर वह थमा रह गया, उसकी ओर देखता।

—एक और मन नही हो सकता तुम्हारे पास?

—हो सकता है, पर वह कही लगेगा नही। तुम्हारे जैसा समझो!

—क्यो?

— क्योकि वह प्यार नही, तसल्ली भर दे सकेगा।

—मुझे कुछ नही होगी?

—देने को बार बार नही होता जिदगी म, सिवा यादो के।

बहुत देर तक वह मौन बठा रहा, सच सामन आ जाने पर कुछ कहने सुनने को नही रहता। अन्नू से अब कुछ लेना देना नही हो सकता, यह सच था।

—एक बात कहती हू, रास्ते की ओर देखती अ नू बोली—तुम जिदगी की पहली पहली चीजा को नहीं भूल सकते, चाहे वे हाथ से जाती रह। इसलिए नही कि वे हमेशा सुखद या निष्फल होती ह। इसलिए कि वे तुम्हे सोचने के और निभने के आधार देती हैं। वे तुम्ह हमेशा के निए विचार सौप देती हैं। क्या मिटटी और क्या मानस। जैसे तुम इतने साल बाद भी अपने आप यहा चले आये। उदास होकर। तुम जहा भी रहे होगे, लोगो से मिलते वक्त चीजो को परखते वक्त, तुम्ह यहा के लोगों और यहा की चीजो की याद आयी होगी। यही आगे भी होगा। जब भी तुम किसी ऐसी स्त्री से

मिलोगे, जो तुम्हे अपना कुछ दे रही होगी, तुम्हे मेरी याद आयेगी। सो ही, कभी, कही थोडी रोशनी पाने पर, मैं उसने आखो पर आचल लगा लिया। कुछ क्षण बाद बोली—अब तो देने को कुछ नही रह गया मेरे पास!

अन्नू की पीठ पर निगाह गडाये गडाये उसने हलकी आह खीजी और हठात कहा—अन्नू, तब न तो तूने मुझसे या मन तुझसे कहा था, न कभी सोचा था और न कोई इरादा ही किया था, फिर भी एक दूसरे से जुड से गये थे। अब चाहकर भी नभी नही जुड पाते है। है न अजीब बात!

अन्नू ने कोई जबाब नही दिया।

वह बैठा सोचता रहा—दस बारह बरस के अरसे मे ऐसा कसे हो जाता है? कुछ चीजें पैदा हो जाती हैं, कुछ जाती रहती हैं। दिसबर क्यो बदल जाता है?

★

रात को पूरे घर पर सन्नाटा बरप गया। सुबह तक कोई सोता नही दीखता था। अचानक उसके मुह से बात निकल गयी थी और सब हतप्रभ उसे देखते रह गये थे भरी भरी आखो से।

मा अपनी प्रार्थना और जाप छोडकर पिंकू और भाभी के साथ रसोई म बैठी बेसन के लड्डू और मावे की मिठाई बना रही थीं। उसका सम झाना किसी काम न आया कि जहाज मे यह सब ले जानें मे दिक्कत होगी। पिताजी जाने किस कमरे म जाकर पड गये थे। पप्पू हर आधे घटे बाद सिरहान रखे अलाम पीस पर नजर डाल देता। टप्पू, एकदम चुप, उसके पैताने बैठा था, बठा ही रहा। हारकर पाच बजे वह उठ बठा।

दरवाजे के पास बिछे बिस्तर की रजाई को हलके से कापता देख उसने छुआ। रजाई थोडी हटायी तो चीख सी एक सिसकी उभरकर सीने म चुभ गयी। रिंकू मुह बद किये सिसकिया भर रही थी। उसके सर पर दुलार से हाथ फेरता वह वही बैठ गया और उससे धीरे धीरे बातें करन लगा।

दस बारह बरस पहले ये चीजें नही बाधती थी। दिसबर ऐसा क्या हुआ इस बार?

सोधी सोधी भाप उसके नथुनो मे घुसी। सर उठाया। भाभी के हाथ म

चाय का गिलास था। थमाते हुए उनके ओंठ काप गये।

—सुनो, उसके पास ही खड़े होकर उ होने कहा—जो अपना मन कही नही लगा पाते उन्हे दूसरो का मन रख लेन से शाति मिलती है। हम जब भी तुमसे आने के लिए कहे, तुम हमारा मन रख लेना। यहा चले आना। पिताजी मा और तुम्हारे भाई बहनो का आत्मविश्वास बढेगा। और उसके गालो पर हाथ फिराकर उ होने उसे भोर का चुबन दिया और तौलिया निकालकर गुसलखाने मे रखने चली गयी।

★

रप्पू अटैची लेकर आगे निकल गया था, रिक्शे के लिए। गेट के पास पहुचकर वह पीछे देखने को रुका तो पाया, सामने, हाथ मे कटोरी व चम्मच लिये पिंकू खडी है।

—थोडा दही खाते जाओ भया ! वह बोली।

●●●